तेज पाक्षिक, अंक ९, वर्ष १९ १-१५ मई १९८३

दीवाना

बेटा, अब दीवाने आसन में आओ!

2.50 रुपये

A Great Name To Play With

Daito's

TRICYCLES, CARS & WHEELED TOYS

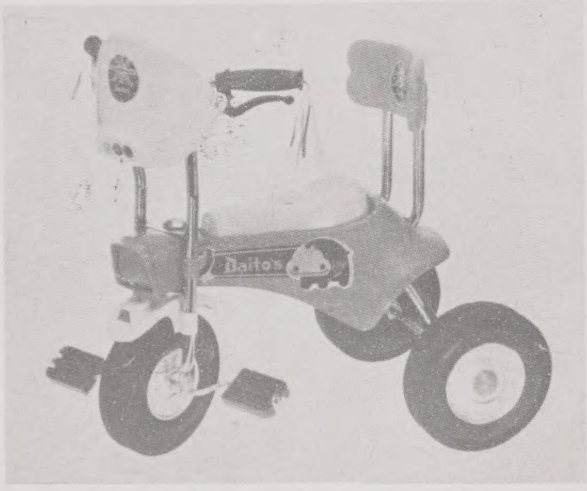

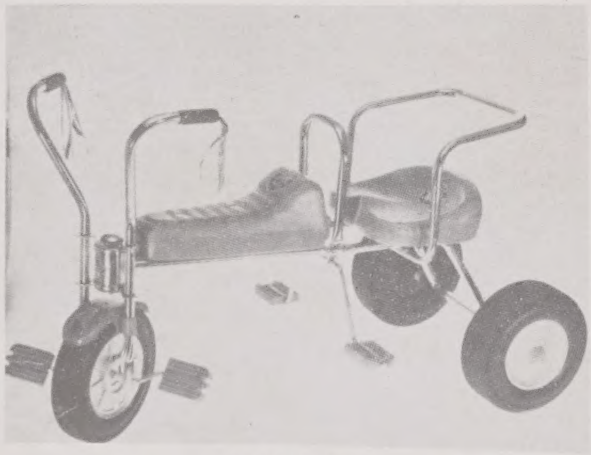

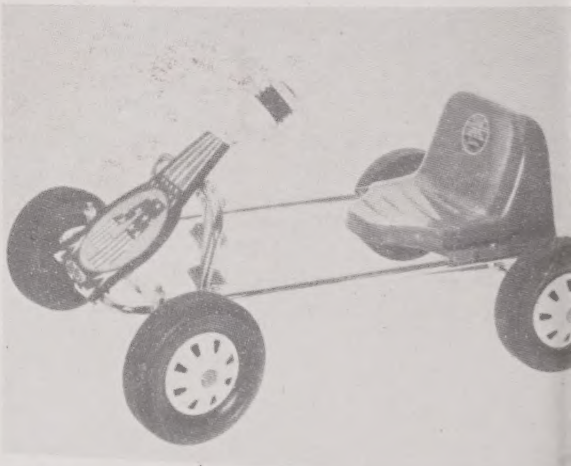

AVAILABLE AT ALL LEADING STORES IN INDIA

Manufactured by:

CHAWLA INDUSTRIAL CORPN.,
DELHI-110006

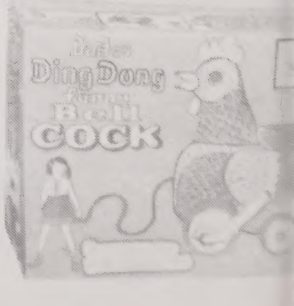

श्व के विचित्र इंसान!

लेखक : ए. एच. हाशमी

मूल्य : 10/-
डाकखर्च :3/-

साइज़ के 108 पृष्ठ

ीर्षकों की झलक :

ार से जुड़े हुए स्यामी भाई चांग और
कब और कहां पैदा हुए?
र से जुड़ी हुई बहनें कलाकार कैसे बनीं?
भुत किस्म की दो जुड़वां लड़कियां
अधिक मूल्यवान क्यों थीं?
सिर वाला अजूबा बच्चा कैसा था?
से अधिक परन्तु दो से कम?
ने अजीब होते हैं दैत्याकार इंसान?
कब, कहां पैदा हुए और कैसा होता है
ा संसार?
टांगों और बाजुओं के लोग कहां पैदा
? क्या प्रतिभा इन्हें विरासत में मिली
ा सफलता ने इनके चरण चूमे?
टांगों वाला व्यक्ति कैसे चलता था?
कोई व्यक्ति आधे टन का था?
मोटी औरत सेलेस्टा गेयर का शरीर
का ढेर था?
थे जीवित इंसानी ककांल?
की शक्ल का लड़का कहां पैदा हुआ?
लायनल शेर की शक्ल का आदमी था?
, मूंछ और बाल ही बाल वाली औरतें
एल क्या मेढक बच्चा है?
चर जैसी शक्ल की औरत कहां हुई?
र्वाधिक बदसूरत औरत की कहानी?
लोग, जो न पुरुष हैं और न ही औरत?
जमुखी सूरज से क्यों डरते हैं?

त तथा अन्यान्य विचित्र इन्सानों
में मनोरंजक जानकारी जैसे—वे
दा हुए, कैसे रहते थे, क्या खाते
काम करते थे, जीवन में सफलता
ाप्त की, समाज का इनके प्रति
तथा ये कब मरे आदि ढेरों बातें!
सभी की जीवनी चित्रों सहित

हम जीव-जन्तुओं की कहानी हमारी जबानी

- हम किस जात बिरादरी के हैं?
- हमारी दिनचर्या क्या है?
- हम क्या खाते-पीते हैं?
- हमारी उम्र क्या है?
- हम कहां और कैसे रहते हैं?
- मनुष्य हमारा दुश्मन है या दोस्त?
- हमारे सुख-दुःख क्या-क्या हैं?
- हमारा चलना, उठना, दौड़ना, बैठना, उड़ना कैसा है?

....तथा हमारे बारे में अन्यान्य ढेरों जानकारियों के लिये प्रस्तुत है—हमारी आत्म कथा— हम जीव-जन्तु

जीव-जन्तुओं के विशाल संसार के
50 सदस्यों की आत्मकथा

पेशकर्ता-रवि लायट् **भूमिका-**रामेश बेदी

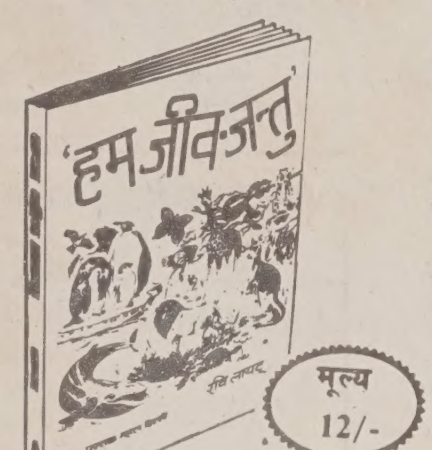

मूल्य
12/-

बड़े साइज़ के 116 पृष्ठ

हम कुछेक के बारे में कुछेक जानकारी

'मेरी आँखों से आँखें न मिलाना, क्योंकि इन आँखों का कोई जवाब नहीं। मेरी दोनों आँखें एक दूसरे से अलग बिल्कुल स्वतंत्र कार्य करती हैं। पानी में तैरते हुए एक अगर सतह के ऊपर देख रही है तो दूसरी नीचे।' **—समुद्री घोड़ा**

भूखा रहने में मैं अपनी मिसाल आप हूं। दुनिया का कोई भी जीवधारी इस क्षेत्र में मेरी बराबरी नहीं कर सकता। किसमें दम है जो चार महीने तक बिना कुछ खाये रह जाये।' **—पेन्गुइन**

'मेरी कर्मठता का अन्दाजा तुम इसी से लगा लो कि 450 ग्राम शहद एकत्र करने में मुझे छत्ते से फूलों तक 40,000 से 80,000 फेरी लगानी पड़ती हैं जबकि प्रति फेरी एक या डेढ़ मील की पड़ती है। **—मधुमक्खी**

'शिकार अधिकतर मेरी मादा ही करती है पर ये शिकार सबसे पहले रखा जाता है मेरे सामने ही। मेरे बाद खाती है वह स्वयं और अंत में बच्चे। इसे कहते हैं अनुशासन, जो हमेशा घर से शुरू होता है और तब चल पाता है शासन। **—बब्बर शेर**

लकड़ी खा लेना जितना आसान है उसके सेल्युलोज को पचा पाना उतना ही मुश्किल और इस मुश्किल को दूर करने में सहायता करते हैं मेरी ही आंतों में रहने बसने वाले बहुत सूक्ष्म एक कोशीय जीव 'प्रोटोजोआन्स' जिनके बिना मेरा जीवन ही संभव नहीं होता। **—दीमक**

101 मैजिक ट्रिक्स

लेखक—आइवर यूशिएल

मूल्य : 15/-
डाकखर्च :3/-

बड़े साइज़ के 120 पृष्ठ

मनोरंजक ट्रिक्स में से कुछ :

□ चुम्बकीय हाथ □ स्वयं उछलने वाला हैट □ टूटी माला फिर तैयार □ छोटे से बटुवे में बड़ी-सी छड़ी □ जादुई कैंची □ 'एक्स-रे'—कागज में लिपटी पेंसिल का □ अंगुलियां देखती भी हैं, □ निशान—शुगर-क्यूब से हथेली पर □ आज्ञाकारी गेंद □ गिलास पानी भरा— गया कहां? □ गिलास पानी भरा—यहां धरा, वहां मिला □ उल्टा गिलास—पानी भरा □ दूध का दूध, पानी का पानी □ अण्डा चांदी का! □ पानी में घुलने वाला सिक्का □ 'फायर-प्रूफ' रूमाल □ तीली पिये पानी, बोतल खाये सिक्का □ तीन डिबियां, तीनों खाली, फिर भी एक बोले □ हुक्म की गुलाम तीलियां □ गणित—झूठी! □ टिकट—स्वर्ग-नर्क के □ तुम बनो आधुनिक फेंटम □ रस्सियों के बंधन से छुटकारा □ पंक्ति पढ़ना—बिना देखे ही □ योग—अनदेखी संख्याओं का □ लिखित प्रश्न लो—बिना पढ़े उत्तर दो

एक ऐसी सचित्र पुस्तक जिसमें जादू की 101 शानदार व जानदार ट्रिक्स, जिनको समझना जितना सरल है, उनका प्रदर्शन उससे भी आसान है, दी गयी हैं। बस! जरूरत है तो थोड़े से अभ्यास के साथ चन्द ऐसी चीजों की जो तुम्हारे आसपास ही आसानी से उपलब्ध हो जायेंगी, जैसे—कैंची, ताश, रूमाल, गिलास, सिक्के, पेपर-स्ट्रॉ आदि।

ALSO AVAILABLE IN ENGLISH

अपने निकट के बुकस्टाल एवं रेलवे तथा बस अड्डों पर स्थित बुकस्टालों पर मांग करें अन्यथा वी० पी० पी० द्वारा मंगाने का पता

पुस्तक महल खारी बावली, दिल्ली-110006
10-B, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज नई दिल्ली-110002

GET THEM RIGHT AWAY
FIGHTING-T-SHIRTS
FROM SUN

They're here now, a great new line in T-Shirts from SUN, the magazine that has always given you action. This is our Martial Arts T-Shirts series and each design is a breath-taking, super-charged affair.
You can order these mind-stopping T-Shirts by post or collect them personally from the SUN office in New Delhi. Each T-Shirt is Rs. 25/- only and those who would like them by mail should add Rs. 5/- for postage (i.e. send us Rs. 30/-).
We have following combinations to offer in 34" and 36" size, round neck

1

2

3

4

Design	Description	Code
1 DRAGON	Black on Red	D/BR
	Black on Yellow	D/BY
2 KUNG FU	Red on Yellow	KFU/RY
	Black on Yellow	KFU/BY
	Black on Blue	KFU/BB
	Black on Red	KFU/BR
3 TIGER CLAWS	Red on Yellow	TC/RY
	Black on Red	TC/BR
	Black on Blue	TC/BB
	Black on Yellow	TC/BY
4 SIDE KICK	Black on Red	KAR/BR
	Black on Yellow	KAR/BY
5 KARATE	White on Dark Blue	K/WB

5

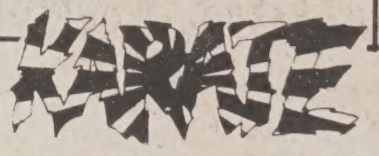

Write with your remittance to:

SUN MAIL ORDER DEPARTMENT
8-B BAHADURSHAH ZAFAR MARG NEW DELHI 110002.

NO VPP PLEASE!

Postal Orders/Demand Drafts to be drawn in favour of SUN PUBLICATIONS, and mailed to above address. Please indicate code number of the T-Shirt and the size you want when you order.

चौधरी साहब,

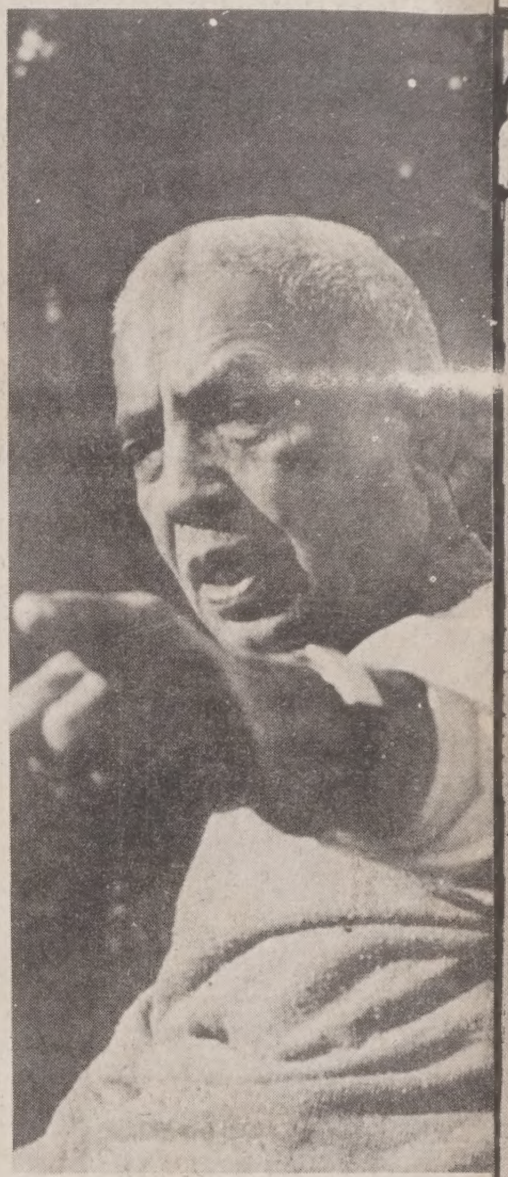

सादर नमस्ते।

बाबू जगजीवनराम के नाम प्रेमपत्र के बाद मेरे लिए आपको भी एक प्रेमपत्र लिखना जरूरी हो गया क्योंकि एक शायर के शब्दों में आप दोनों की हालत कुछ इस तरह की हो गयी है।

''आ अनदलीब मिलके करें आहोजारियां।
तू-हाय गुल पुकार, मैं पुकारूं हाय दिल।''

आप उम्र में बाबू जगजीवनराम से भी बड़े हैं। उन्होंने अगर अपना ७६वां जन्म दिन मनाया है तो आप ८० की बाउंडरी लगा चुके हैं। गुस्ताखी माफ इस उम्र में प्रायः लोग मोह माया का त्याग कर देते हैं। लेकिन आप मायाजाल में बुरी तरह फंसे हुए राजनीति से खिलवाड़ किये जा रहे हैं।

यद्यपि आप ८० की हद पार कर चुके हैं, लेकिन आप पर यह फब्ती नहीं कसी जा सकती।

न मुंह में दांत न पेट में आंत। आपकी आंखें ठीक काम कर रही हैं और दांत आजकल कोई समस्या नहीं रहे। दन्दान साज असली दांतों से भी ज्यादा सुन्दर बत्तीसी तैयार कर देते हैं। हां यह जरूर कहा जा सकता है कि आपके खाने के दांत और हैं और दिखाने के और। यानी आप कौम के अच्छे खासे हाथी हैं। सफेद हाथी कहने की हम गुस्ताखी नहीं कर सकते।

आपने अभी अभी अपना ८१वां जन्म दिवस मनाया है। मैं इस शुभ अवसर पर आपको बधाई देता हूं। आपने इस अवसर पर केक के ८१ टुकड़े काट कर अपने भक्तों में बांटे होंगे।

चौधरी साहब नाराज न हों,मेरी समझ में यह बात नहीं आ सकी कि आपने बाबू जगजीवनराम से कैसे गठबन्धन कर लिया। यह तो वो ही बात हुई।

''बेकार मुबारा कुछ किया कर।
पजामा उधेड़ कर सिया कर।''

ऐसा लगता है, आपने यह गठबन्धन अपनी राजनीति के उधड़े हुए पजामा को सीने के लिए, किया है।

मैं आप को दोष नहीं देता। राजनीति का नशा ही ऐसा है कि उसके बारे में कहा जा सकता है।

''छुटती नहीं है मुंह से यह काफिर लगी हुई।'' लेकिन क्षमा कीजिए कांग्रेस (आई) का बदल बनने की कोशिशें कामयाब नहीं हो सकतीं।

कुछ भी हो बाबू जगजीवनराम से आपके गठबन्धन पर यह जरूर कहा जा सकता है। ''खूब गुजरेगी जो मिल बैठेंगे दीवाने दो।''

आपका चिल्ली

प्रेम पत्र

दीवाना

अंक ९, वर्ष ११ १-१५ मई १९८३

सम्पादक ● विश्वबन्धु गुप्ता
सह सम्पादिका ● मंजुल गुप्ता
प्रोडक्शन सुपरवाईजर ● राधे लाल शर्मा
कला निदेशक ● सतीश गुप्ता
कलाकार ● नेगी, कुलदीप मथारू, उत्तरा भालेराव
जनरल मैनेजर ● रमेश गुप्ता

डिप्टी जनरल मैनेजर ● वाई. ए. शेट्टी
मार्केटिंग मैनेजर ● एम. आर. एस. मनी
प्रोडक्शन मैनेजर ● विनोद अग्रवाल
विज्ञापन मैनेजर ● जयप्रकाश गुप्ता
प्रकाशक ● पन्नालाल जैन
मुद्रक ● तेज प्रैस, नई दिल्ली
पता ● दीवाना, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
फोन ● २७३७३७, २७३६१७,२७३६०७

● वार्षिक चन्दा ५० रुपये ● अर्द्ध वार्षिक २६ रुपये ● एक प्रति २.५० रुपये ●

मुख पृष्ठ पर

बहुत शक्ति है योग में
करो रोज अभ्यास
चेहरे पर लाली रहे
उदासी आये न पास।
उदासी आये न पास
लगाओ दीवाना आसन
तन मन रहेगा शुद्ध और
तुम भूलोगे सारे गम।।

दीवाना में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं इसलिये बिना आज्ञा कोई रचना या उसका अंश किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिये।

प्रकाशित 'कथा-साहित्य' में नाम, स्थान, घटनायें व संस्थायें काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों (जीवित मृत), स्थानों, घटनाओं या संस्थाओं से उनकी किसी प्रकार की समानता संयोग मात्र है। चित्रांकन चित्रकार की कल्पना पर ही आधारित हैं। सम्पादक व प्रकाशक किसी प्रकार के उत्तरदायी नहीं होंगे।

प्रकाशित लेखों के लेखकों की राय से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किन्तु छपे लेखों पर अगर किसी को आपत्ति हो तो वह अपनी प्रतिक्रिया हमें लिखकर भेज दें। छपने योग्य होने पर सहर्ष छाप दी जायेगी।

इस पत्रिका के संबंध में किसी भी प्रकार के मतभेद एवं विवाद आदि केवल दिल्ली न्यायालय से ही निपटाये जा सकेंगे। —सं

क्या कहा अनंगपाल ने फिर हमें चुनौती दी है ? उसका दिमाग खराब तो नहीं हो गया ?
यह तो मेडीकल चैकअप के बाद ही पता लगेगा महाराज।
भूल गया, पिछली बार मैंने तलवार का वार किया और वह हाथी पर से गिर पड़ा था। मैंने उसे वहीं मार दिया होता अगर वह रिक्शे में बैठ भाग न गया होता।
महाराज बुरा न मानें तो कह दूं कि वह तो आप दोनों की ही गलती थी। लड़ाई का खर्च चलाने के लिए नीलामी द्वारा आप दोनों ने ही लड़ाई के मैदान में ठेकेदारों को रिक्शे, फटफटे और प्राइवेट बसें चलाने के ठेके दे दिये थे। लड़ाई को पब्लिक अंडरटेकिंग का रूप दे दिया।
एक बार गलती हो गयी, अब अगली बार से ऐसा नहीं करूंगा।
ठीक है।
महाराज यह लड़ाई के लिए नहीं ललकार रहा है। वह एक खेल में टैस्ट मैच चाहता है। दोनों टीमों के कप्तान राज्यों के राजा होंगे।
भूल गया वह, पिछली बार हॉकी टैस्ट मैच में मेरी टीम ने उसकी टीम को एक के मुकाबले दो गोल से हराया था ?
अनंगपाल ने इस बार वाटर पोलो मैच का चेलेंज दिया है महाराज।
वाटर पोलो ? चलो वह भी खेल कर देख लेंगे। वही कौन-सा वाटर पोलो का चैम्पियन है।
आज हमारे राजा की टीम और पड़ौसी राजा अनंगपाल की टीमों के बीच वाटर पोलो का मैच है।
अनंगपाल ने कहा है कि वह हमारे राजा को दिखा देगा कि वह कितने पानी में है।
महाराज, हमारे जासूसों ने खबर दी थी कि अनंगपाल ने भी कभी वाटर पोलो मैच नहीं खेला है और न ही उसके पास वाटर पोलो की कोई बढ़िया टीम है। मैंने तो उसी रिपोर्ट के आधार पर वाटर पोलो मैच एक्सेप्ट करने का सुझाव दिया था। उसकी चालाकी हम भांप नहीं पाये।
यह क्या हुआ महाराज ? आपकी शादी नहीं हुई तो क्या आपने खुद ही राज्य का वारिस पैदा करने का फैसला कर लिया है।
मसखरे हम इस बार अनंगपाल से मात खा गए। वाटर पोलो मैच का चैलेंज स्वीकार कर बैठे। वाटरपोलो पूल में पानी साढ़े चार फुट था और मेरा कद चार फुट है। पेट में पानी घुस गया।

आपका भविष्य

पं. कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं. हंसराज शर्मा

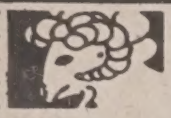

मेष : इन दिनों धन सम्बन्धी चिंता पेश आएगी लेकिन परिश्रम करने पर कुछ जरूरी काम बन जायेंगे, कारोबार में सुधार।

वृष : स्थाई काम धन्धों में सुधार, कोई विशेष सूचना मिलेगी, व्यय अधिक, लाभ देर से मिलेगा।

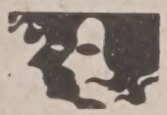

मिथुन : स्थाई काम-धन्धों और नवीन योजनाओं पर व्यय, संघर्ष काफी आयेंगे लेकिन सफलता देर या आशा से कम मिलेगी।

कर्क : कारोबारी क्षेत्र में कुछ अड़चन आएगी लेकिन लाभ समय पर मिलता रहेगा, कुछ विशेष काम बन जायेंगे।

सिंह : उलझनें काफी रहेंगी, संघर्ष भी आयेंगे, विशेष परिश्रम से ही काम बन सकेंगे, आमदनी कुछ देर से प्राप्त होगी।

कन्या : हालात तकरीबन ठीक ही चलेंगे, कभी कभी सुख में कमी या आलस्य का प्रभाव रहा करेगा, यात्रा की आशा है।

तुला : सुख साधनों में वृद्धि, सेहत नरम, सफलता कुछ देर से प्राप्त होगी, संघर्ष काफी करना पड़ेगा।

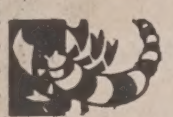

वृश्चिक : कामों में सफलता मिलती रहेगी लेकिन इसके लिए भाग-दौड़ और परिश्रम काफी करना होगा।

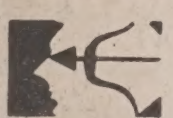

धनु :व्यर्थ की उलझनों में घिरे रहोगे, दिल में घबराहट या बेचैनी, यात्रा सावधानी से करें, भाग्य का सहारा रहेगा।

मकर : घरेलू बातों को लेकर किसी से मन-मुटाव रह सकता है, कोई अप्रिय घटना देखने या सुनने में आएगी।

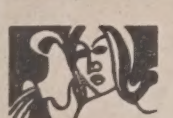

कुम्भ : सुख साधनों में वृद्धि और साथ ही साथ पारिवारिक खर्चे भी बढ़ेंगे, मनोरंजन आदि का प्रोग्राम तय होगा।

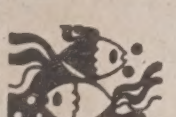

मीन : व्यापारिक क्षेत्र में विकास होगा और लाभ भी बढ़ेगा, यात्रा में सुख लेकिन करें सावधानी से, कोई विशेष समाचार आएगा।

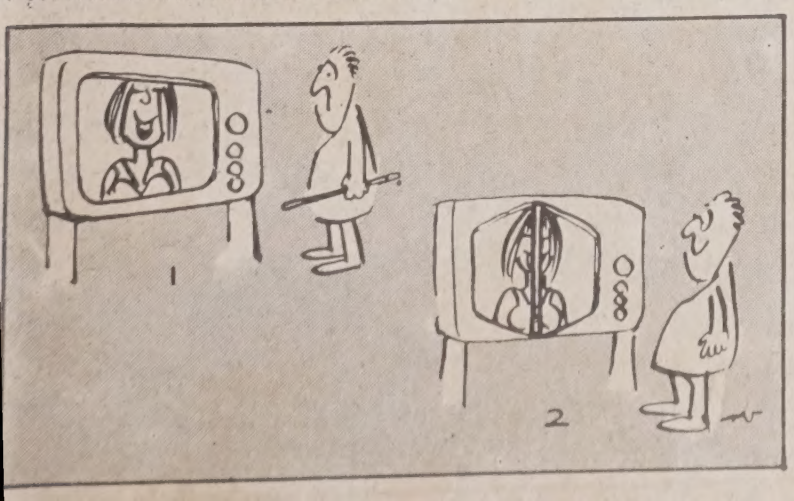

आपके पत्र

हर बार की तरह बेहद इन्तजार के बाद दीवाना का अंक 7 मिला। फिल्मी ड्रामा 'यह तो दीवाना हो गया' पढ़ कर हंसते-हंसते बुरा हाल हो गया। काका के कारतूस और गरीबचन्द की डाक के सभी प्रश्नों के उत्तर दिलचस्प थे। माचू-पीचू मूंछ का बाल पढ़कर दीवाना के दीवाने हो गए। असली फूलन देवी पढ़कर मजा आ गया। फैशन है जरूरी और लल्लू पढ़कर दिल खुश हो गया। धारावाहिक उपन्यास घर का भाग एक बढ़िया लगा, भाग दो का इन्तजार है। क्यों और कैसे पढ़कर हमारा ज्ञान बढ़ा। **सुखविन्दर सिंह 'जौड़ा',—कृष्णा पार्क**

दीवाना अंक 7 मिला। मुख पृष्ठ देखते ही तो मैं दीवाना हो गया। गरीबचन्द जी हमारे प्रश्नों के उत्तर बहुत ही उत्साह से देते हैं। इसकी सभी सामग्री सराहनीय होती है। क्यों और कैसे स्तम्भ रोचक लगता है। ताएक्वोन्डो सीखने का आपने हमें अच्छा मौका दिया, इसके लिए धन्यवाद, अगले अंक का इन्तजार है। **श्याम कुमार 'शाका'—जयपुर**

दीवाना का अंक 7 मिला। दीवाना का नया रंग रूप देखकर काफी सुन्दर लगा, परन्तु अन्दर कुछ उल्लेखनीय सामग्री नजर नहीं आई। आपने 'गरीब चन्द की डाक' में सर्वश्रेष्ठ प्रश्न पर दीवाना के चार अंक मुफ्त देने का निर्णय किया है वह काबिले-तारीफ है। नया स्तम्भ 'माचू-पीचू' अच्छा लगा। अगले अंक के इन्तजार में।

राहुल गोदिका—जयपुर

दीवाना अंक (7) 1-15 अप्रैल पढ़ा। इस अंक को देखते ही दिल खुश हो गया। मुख पृष्ठ पर 'मूर्ख विशेषांक' हीरो चिल्ली तथा पूनम का चित्र तारीफ योग्य रहा। काफी समय बाद काका हाथरसी को पाया, जिन्होंने हंसा हंसा कर दिल बहलाया, गरीब चन्द ने खुश कर डाला। स्तम्भ 'चिल्ली लीला' 'यह तो दीवाना हो गया' व्यंग फिल्म स्टोरी ने इतना हंसाया कि पता ही नहीं चला कि समय एक घण्टा बीत गया। 'माचू-पीचू मूंछ का बाल' रोचक अवश्य लगा मगर हंसी नहीं आयी। **प्रेम बाबू शर्मा—बगीची पीरजी**

वैसे तो दीवाना का हर अंक लाजवाब तथा दिल के भावों को छूने वाला होता है। मगर अबकी बार अंक 7 ने तो मेरे दिल में तहलका सा मचा दिया। प्रेम पत्र में वास्तविकता नजर आ रही थी, चना वाकई में कुरमुरा लग रहा था। धारावाहिक उपन्यास 'घर' ने तो मेरा घर ही बसा दिया। मूवी मसाला ने तो वाकई में मसाले का काम किया यानि कुल मिलाकर यही कह सकता हूं कि मैं तो दीवाना हो गया। जिसके कारण इस अंक को पांच-छः बार पढ़ चुका हूं। अगले अंक का बड़ी उत्सुकता से इन्तजार है। **सतीश कौशिक—भिवानी**

दीवाना मूर्ख अंक मिला। उसका मुख पृष्ठ देखते ही हंसी आ गयी। चिल्ली का प्रेमपत्र बहुत ही बढ़िया था। माचू-पीचू के मूंछ का बाल पढ़कर मारे हंसी के पेट में बल पड़ गये। 'सिलबिल-पिलपिल और असली फूलन देवी' ने भी खूब हंसाया और 'क्यों और कैसे' 'गरीबचंद की डाक' ने भी काफी प्रभावित किया। 'काका हाथरसी' के चटपटे जबावों की तारीफ मे मेरे लिये शब्द ही नहीं हैं। नया धारावाहिक 'घर' भी बहुत पसन्द आया। धन्यवाद !

रघुवीर सिंह 'साही'—नई दिल्ली

हास्य व्यंग

दो दीवाने

अनु—तरनजीत

मेरे सफर के सामान में किताबों और पत्रिकाओं का एक अम्बार सदा होता है। एक लाभ तो यह होता है कि मुझे अपने सहयात्री से ख्वाह-मख्वाह का इश्क बघारने की जरूरत पेश नहीं आती। दूसरे यह कि अगर किसी ने मुझसे इस इश्क का आरम्भ इस सवाल से कि 'आप कहां जा रहे हैं ?' की तो मैं कोई उत्तर देने के बजाय उसकी ओर भी एक किताब बढ़ा देता हूं ताकि वह मेरा दिमाग चाटने के बजाय पढ़ने में मग्न हो जाये आये और मुझे बख्श दें। अत: इस बार भी मेरे साथ काफी किताबें और दर्जनों पत्रिकायें थीं, पर दुर्भाग्य से सहयात्री सिर्फ एक महिला थी और इस तेजी से स्वेटर बुनने में तन्मय थी कि मानों रास्ते के सभी स्टेशन मास्टरों को एक-एक स्वैटर देती जायेंगी। खैर मेरी बला से। मैं तो सिर्फ यह चाहता था कि वह मुझसे संबंध पैदा करने की कोशिश न करें, पर किस्मत का लिखा यों पूरा हुआ कि जैसे ही गाड़ी लाहौर से रवाना हुई, उन बेगम साहिबा ने ऊन का गोला, सलाइयां और वह अधबुना स्वैटर एक थैले में रखकर मुझसे वही बेहूदा सवाल किया, 'आप कहां तशरीफ ले जायेंगे ?'

मैंने चुपचाप एक किताब उनकी ओर बढ़ा दी, पर पता लगा कि वे भी पढ़ चुकी है। फिर तीसरी और उसके बाद चौथी किताब बढ़ाई गई, यहां तक कि मेरी सारी किताबें अब उनकी बर्थ पर ढेर थीं। सभी पत्रिकायें उनके ही पास रखी हुई थीं और वह फिर प्रश्न कर रही थीं—'हां ! तो आपने बताया नहीं कि आप कहां जा रहे हैं ?'

मैंने बड़ी बेजारी से कहा—'कराची।'

वे इस तरह खुश हुईं मानों मैंने उनको कराची का राज्य बख्श दिया हो।' कराची तो मैं भी जा रही हूं, फिर तो यह सफर खूब गुजरेगा।तो क्या कराची में आपकी रिहाइश है ?'

मैंने फिर संक्षिप्त-सा उत्तर दिया—'जी नहीं।' हालांकि यह कोई खुशी की बात न थी, पर वह भी बेहद खुश हुयीं। शुक्र है कि कराची में आपका स्थायी आवास नहीं है। मैं तो डर गयी कि कहीं आप कराची ही में रहते हो। मुझे तो कराची फूटी आंख नहीं भाता। समुद्र का किनारा भी है और हवा के झक्कड़ भी। फिर भी जलवायु गायब। अल्लाह जानता है कि मैं तो बीमार हो जाती हूं। कराची जाकर कुछ ऐसी सुस्ती और आलस्य पैदा हो जाता है कि सुबह के समय सोकर उठो तो लगता है कि जैसे रात भर किसी ने लट्ठ बरसाए हैं। नाक पर बैठी मक्खी तक उड़ाने की हिम्मत नहीं होती। भला कराची भी कोई रहने की जगह है। खुदा का शुक्र है कि आप कराची में नहीं रहते तो स्थायी आवास कहां है।'

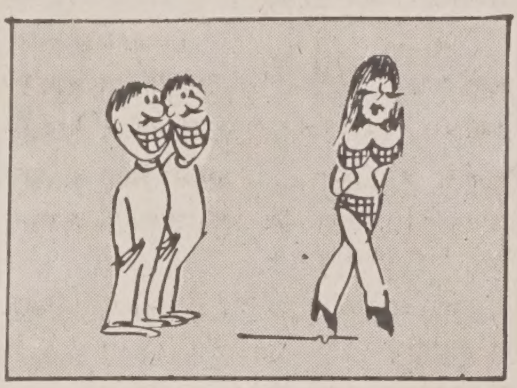

मैंने यूं ही कह दिया—'लाहौर।'

उन पर जैसे उन्माद-सा छा गया। और तालियां बजाकर बोलीं—'इस वक्त मैं जो मांगती, वह मुझे मिल जाता। मेरा जी चाह रहा था कि आप लाहौर के रहने वाले निकलें। क्या कहना है लाहौर का। ऐसा शहर मेरी नजर से तो कोई गुजरा नहीं। जहांगीर तक इस पर मर मिटा और नूरजहां ने तो इसकी फारसी में भूरी-भूरी प्रशंसा की है···तो आपका क्या निजी मकान है लाहौर में ?'

मैंने कहा—'जी नहीं, अलाटिड।'

उनके चेहरे पर एक रौनक-सी आ गयी—'शुक्र है आपका निज़ी मकान नहीं है। मुझे आशंका थी कि कहीं आप मालिक न निकलें। वह मकान मालिक वाली कौम भी मेरी समझ में कभी नहीं आती। इनके दिन-रात बस यही फिक्र रहती है कि सीमेंट का परमिट कहाँ से मिले ? दरवाजों पर अबकी किस रंग का पालिश हो। बारिश करीब है तो छतें करवाते फिर रहे हैं। बारिश गुजर गयी है तो कलई कराते फिरते हैं। मकान क्या होता है, अच्छा-खासी मुसीबत होती है और वह जिंदगी जो सारी दुनिया पर छा जाने के लिए होती है उसे वह समेट कर अपने मकान में ठूंस देते हैं और अच्छा जिस तरह कोई अपनी मृत्यु तिथि का पत्र लिखवाता है, उसी तरह ये मकान का ऐतिहासिक नाम रखवाते हैं। फिर दरवाजे पर लिखवाते हैं—'माशा अल्लाह !' या हाजामन फजले रबी' फिर इस मकान में कुछ-न कुछ बनवाते ही रहते हैं। इनको दुनिया की किसी बात से कोई दिलचस्पी नहीं होती। बस दिन-रात वही मकान की बातें। मैं सदा इन लोगों को कुयें का मेंढ़क कहती हूं जिनके निजी मकान हैं और सवाल यह है कि आदमी मकान बनाए क्यों ? अगर दुनिया नश्वर सराय है तो सराय में कोई कमरा खरीदना क्या मानी। बड़ी पसंद आयी मुझे आपकी यह बात कि निजी मकान नहीं है, पर एक बात है कि अपना मकान न हो तो फिर मोटर-वोटर भी आदमी न खरीदे।'

मैंने कहा—'इसलिए मोटर भी नहीं है।'

वे खुशी के मारे उछल पड़ीं—'शुक्र है कि आपके पास मोटर भी नहीं है। मैं आपसे सच कहती हूं कि यक्ष्मा की विभिन्न किस्मों में से एक किस्म यह मोटर भी है कि जो इसमें फंस गया, बस वह गया दोनों जहान से। वह सपने भी पैट्रोल और मोबिल आयल के देखता है। उसे अपने स्वास्थ से अधिक यह चिन्ता रहती है कि बैटरी तो कमजोर नहीं हो रही है। वह अपनी प्रेमिका के साथ भी मोटर पर आ जाये तो रोमाँटिक बातें करने के बजाय वह प्रेमिका से पूछता है कि यह जो एक आवाज-सी आ रही है यह इंजन की है या बाडी की। वह आकर्मक दृश्य देखने के बजाय यह देखता है कि सुई कितना पैट्रोल दिखा रही है। फिर यह कि आज मोटर सर्विस के लिए जाएगी। कल उसका फलां पुरजा बदला जाएगा। परसों उसके चालान के संबंध में कचहरी जाना होगा और सबसे बड़ी बात यह है कि जिस समय मैं रास्ते में चलती हूं करीब से कोई मोटर गर्द गुबार की आंधियों में लपेट कर गुजर जाता है तो मेरा दिल गवाही देता है कि यह मोटर वाला मेरे करीब से गुजरने से बहुत पहले इंसानियत से गुजर चुका है। अगर मुझे खुदा-न खास्ता यह मालूम हो जाता कि आपके पास मोटर है तो मुझे आपसे भी डर लगता कि आप एक-न-एक दिन मुझ पर खाक उछालेंगे। मैं आपसे सच कहती हूं कि मेरे दिमाग का यह बोझ हल्का हो गया, पर आपका क्या भरोसा, न जाने कब खरीद लें मोटर, रुपया होना शर्त है।

मैंने कहा—'यह शर्त कभी पूरी न होगी।'

वे बोली—'मेरा मतलब यह है कि बैंक में तो रखते होंगे आप रुपया।'

मैंने कहा—'कभी इतना रुपया ही नहीं

मिला कि बैंक में रखता।'

वे तो सचमुच जैसे झूम सी गयीं, 'आपमें एक ही समय में कितनी खूबियां। मेरा दिल इस ख्याल से घट रहा था कि आपका बैंक में हिसाब जरूर होगा। सचमुच उलझन होती है मुझे उन लोगों से जो जेब में बैंक बुक लिए फिरते हैं, पर यह चाहते हैं कि उस बैंक-बुक को निषिद्ध वृक्ष बनाकर रखें और चैक काटने के बजाय अगर बस चले तो अपना और बाल-बच्चों का पेट काट कर ज्यादा-से-ज्यादा रकम बैंक में जमा कराते रहे। यह जो पैसा बचाने का रोग है न, यह तो जिसको लग गया, बस वह गया हाथ से। फिर तो चमड़ी जाए, दमड़ी न जाए वाली बात बन जाती है। मेरी तो समझ में नहीं आता कि यह पैसा जोड़ने वाले कैसे आली-हौसला हो सकते हैं। खैर, खुदा का शुक्र है कि आप बैंक में हिसाब नहीं रखतें।

अब मुझे अन्दाजा हुआ कि मेरे संक्षिप्त उत्तरों से यह आदरणीय महिला आश्वस्त होती चली जा रही हैं। यह गलत है। न जाने क्यों मेरा जी चाहने लगा कि यह मदहोश मेरे बारे में बहुत बुरी राय कायम कर लें। यह मेरी प्रशंसा करने के बजाय इस बात पर मजबूर हो जायें कि मुझे बुरा कहें। उनकी निगाहों में मेरा जरा भी सम्मान न रहे और उनकी आंखों मे जो चमक मेरी इन बातों से पैदा हो गई है वह घृणा में बदल जाये, अत: अब मैंने जरा विस्तार के साथ निवेदन किया—

'रुपया मेरे पास काफी आया और अब भी आता रहता है। पर मुझ जैसे शख्स के पास जमा कैसे हो सकता है जबकि स्थायी मनोरंजन ठहरा जुये-बाजी। घुड़दौड़ से निकले तो ताशों की फड़ जमाई···

वह इस अधूरी बात पर ही खुशी के मारे जब्त न कर सकी—'कितना सही उपयोग है रुपए का। पर विस्मय है कि मैंने कभी आपको रेसकोर्स में न देखा। या शायद देखा हो, पर मुझे क्या पता था कि इस मैदान मे आपका प्रिय खेल कौन-सा है?'

मैंने कहा—'कोई भी खेल हो। मतलब तो हारजीत से है। आमतौर पर रमी और पोकर खेलता हूं और कभी-कभी ब्रिज।'

वह एकदम जैसे चीख-सी पड़ी, 'पोकर! रमी!' मैं विस्मित हूं कि मेरे और आपके स्वभाव में कितनी एकरूपता है। मैं आपसे एक बात कहूं कि जिन्दगी भर का अनुभव है कि अगर किसी शख्स के चरित्र को परखना है तो उसके साथ जुआ खेल कर देख लो। वैसे भी अगर विचार कीजिए तो यह दुनिया एक जुए घर के सिवा और है ही क्या? दिन-रात हार और जीत ही के तो चक्कर चल रहे है। खैर यह भी आपने अच्छा किया कि मुझे बता दिया कि आप यह मनोरंजन भी करते हैं। अब तक तो मैं मजाक ही समझ रही थी, पर अब पता चला कि हम-मशरब भी हैं आप। मेरा जी चाहता है कि खतरे की जंजीर खींच कर गाड़ी को ठहरा दूं और स्वयं भाग निकलूं किसी ओर। आखिर मैंने अपने ऊपर वह तोहमतें भी लगाना शुरू कर दीं जो खुदा न करे कि मुझ पर लगें। मकसद तो सिर्फ यह था कि किसी तरह तो उनको मुझसे मतभेद हो। अत: मैंने अपनी ओर से कई बातें गढ़ लीं—

'महोदया, खुदा न करे कि मेरा जैसा जुए-बाजी का शौक किसी को हो अब मैं आपसे क्या अर्ज करूं कि इसी सिलसिले में एक बार पुलिस का छापा पड़ा और जुआ खेलने के जुर्म में गिरफ्तारी हो चुकी है मेरी।'

मैं यहीं तक कहने पाया था कि वे तो सच-

शेष पृष्ठ ४४ पर

पता नहीं क्या बात है आज मीना ने खुद फोन करके मुझे इस पार्क में मिलने के लिये बुलाया ?
आज मैं देखना चाहती हूं कि तुम मुझसे कितना प्यार करते हो ? पार्क के दक्षिणी छोर पर पत्थरों का एक झुंड सा है। वहां आज सुबह ही एक प्यारा-प्यारा फूल खिला है, तुम मुझे वह लाकर दो।
बस इतनी सी बात ! मैं लम्बे-लम्बे डग भर कर अभी लाकर तुम्हें देता हूं।
यही है वह फूल—
यही है वह फूल जिसे लाने के लिये लीना ने मुझे कहा।
खबरदार, इस फूल को हाथ न लगाना, यह मेरा है।
क्या इस पर तुम्हारा नाम लिखा है ? यह मेरा है।
मैं पार्क के दूसरे छोर से इसे लेने के लिये ही आया हूं।
मैं भी तो पश्चिमी छोर से इसी के लिये आया हूं।
मैं इसे पाने के लिए कुछ भी कर सकता हूं। जान की बाजी लगा सकता हूं।
किसी और का हाथ इस फूल की तरफ बढ़ा तो मैं उसका हाथ तोड़ दूंगा।
हम दोनों पढ़े-लिखे हैं, लड़ाई झगड़े का कोई फायदा नहीं है। मेरी मीना इसे चाहती है तुम्हारी लीना भी इसे चाहती है। हम दोनों को इसकी बराबर की आवश्यकता है।
ठीक है ?
लड़ने की बजाय हम शान्तिपूर्ण तरीकों द्वारा इस समस्या को हल कर सकते हैं। सिक्का टॉस करके फैसला करते हैं।
बोलो क्या मांगते हो ?
ठीक है।
हैड
वो मारा... मैं जीत गया देखो टेल आया है।
ही ही ही।
ही ही क्या कर रहे हो ? जीत तो मैं गया हूं। नीचे सिक्का देखो।
तुम उधर देखो।
वह देखो—जिस फूल के लिए हम सिक्का उछाल रहे थे उसे तो यह बकरी खा गई। हमारी पीठ दूसरी तरफ हो गई थी न। अब तुम्हीं बताओ तुम्हारे टॉस जीतने का फायदा क्या हुआ ? हम दोनों ही हार गए हैं।
ओह !
इन लड़कियों का शक्की मिजाज कभी नहीं जाता। मैंने लाख समझाया कि जो फूल तुम्हें चाहिए था वह इस बकरी के पेट में है। गुस्से से उठ कर चल दी। खुश होने की बजाय यह नहीं सोचा कि फूल के साथ-साथ सौ किलो की भारी बकरी भी मिल रही है। फूल के साथ वूल भी। साथ में कार्डिगन भी बन जाता जिसमें वह फूल लगा सकती।
ईडियट !

काका के कारतूस

अटपटे प्रश्न दीवानों के
चटपटे उत्तर काका हाथरसी के—

तहसिनुद्दीन, मोहसिनउद्दीन—जाफराबाद
प्र० : इश्क और पागलपन में क्या फ़र्क है काके?
उ० : भरते रहते आह या करें हाय री हाय,
इश्क फेल हो जाय तो पागलपन कहलाय।

देशपाल सोनी—मुक्तसर (पंजाब)
प्र० : काकाजी, आप 'दीवाना' के प्रधान मंत्री क्यों नहीं बन जाते?
उ० : दीवाना के देश में, चिल्ली बना प्रधान,
उससे टक्कर लेय जो, वह मूरख नादान।

सुरेन्द्र कुमार सोगानी—कलकत्ता
प्र० : आधुनिक लड़कियों का फिल्मी फैशन देखकर लड़के क्या सोच रहे हैं?
उ० : फैशन बदले देश में, शीघ्र सैन्ट परसैन्ट,
लड़के पहिनें घाघरा, लड़की पहनें पैन्ट।

देवेन्द्रसिंह—पुराना शहर, बरेली
प्र० : आज के जमाने में पत्नी कैसी ठीक रहेगी?
उ० : वाइफ ऐसी लाइए, जो हो अपटूडेट,
सास-ससुर के सामने पीती हो सिगरेट।

नवीन कुमार—स्टेटबैंक, अलीगढ़
प्र० : किसी के अन्दर दुष्टता की भावना कैसे जागृत होती है?
उ० : नर-पशुओं ने सताई, करके अत्याचार,
'फूलन' क्यों शूलन बनी, बता रहे अखबार।

गुलशन कुमार नागपाल—सीवन (कुरुक्षेत्र)
प्र० : गृहस्थी की चिंताओं से मुक्त होने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?
उ० : होजा खड़ा चुनाव में, वोट लूट भरपूर,
मंत्री पद मिल जाय तो, घर की चिंता दूर।

सेवक राम 'अभय'—हैदराबाद (आन्ध्र)
प्र० : दल बदल रोकने का कानून कब तक बनेगा?
उ० : शासन आसन में छिपे, नेता अफलातून,
दलबदलू बनने नहीं देंगे यह कानून।

सुलतान अहमद 'कमल', हैदराबाद
प्र० : उम्र ७७ हो गई फिर भी कालेबाल,
तेल कौन सा कर रहे काका इस्तेमाल?
उ० : धन देकर जो कम्पनी, कर ले हमसे मेल,
कर देंगे तब घोषणा, कौन मार्का तेल।

अनूपदत्त शर्मा—तपकरा (म.प्र.)
प्र० : आपके कारतूस चलते हैं, तो धमाका क्यों नहीं होता?
उ० : आहट इनका दिल सुने, नहीं सुन सकें कान,
प्राण नहीं लेते कभी, देते हैं मुसकान।

सुरेश खुराना 'पप्पी'—जींद (हरियाणा)
प्र० : लड़कियों को यह कैसे पता चल जाता है कि अब जवानी आ रही है?
उ० : पापा, लड़का देखने, दर-दर ठोकर खाय,
लड़की समझे आ गया, यौवन बिना बुलाय।

ओमप्रकाश दुबे—सोनकच्छ (देवास)
प्र० : अधिकतर बहुओं के ही जलने की खबरें आया करती हैं, सास क्यों नहीं जलतीं?
उ० : वादा किया दहेज का, नहीं ला सकी संग,
दिल जलता है सास का, जले बहू का अंग।

एम. के. राजी—शोरागेट, मेरठ
प्र० : चौधरी चरणसिंह आजकल क्या सोच रहे हैं?
उ० : हमने जो कुछ किया था, इंदिराजी के साथ,
बदला क्यों लेती नहीं, आश्चर्य की बात।

नाथ पारस 'विजय'—पटना सिटी
प्र० : आप अपनी प्रेमिका को दीवाली पर क्या उपहार भेजते हैं?
उ० : क्या दीवाली पर उसे क्या भेजें, ये सोचें हर घड़ी,
हम पटाखे प्रेमिका के, वह हमारी फुलझड़ी।

मनोहर कुमार होतवानी—रायपुर
प्र० : मुहब्बत करने वाले कुआंरे मस्त रहते हैं अथवा शादी शुदा?
उ० : नेता-मंत्री गृहस्थी, हैं चिंता से ग्रस्त,
अटल बिहारी देख लो, घूम रहे अलमस्त।

अशोक कुमार चांदगोटिया—श्रीगंगानगर
प्र० : 'दीवाना' देख-देख के दीवाने हो गए
उत्तर नहीं मिला तो थक करके सो गए।
उ० : कुछ देर हो गई है निराशा न लाइए,
हाज़िर जवाब है जनाब! जाग जाइए।

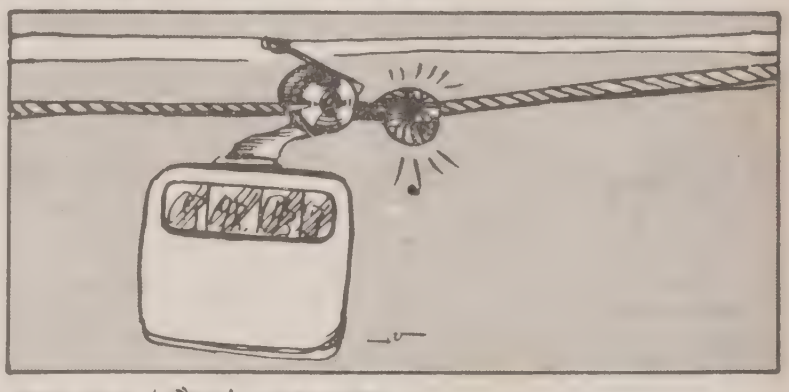

कृष्ण चन्द्र 'गौरव'—अहमदाबाद
प्र० : डाक विभाग की अव्यवस्था देखकर आप चुप क्यों हैं?
उ० : नौकरी मुफ्त की लेते, समय काटें ठिठोली में,
दीवाली पर दिया था किन्तु पहुंचा तार होली में।

कौशल किशोर रायजादा—बम्बई
प्र० : सुना है अभिताभ बच्चन फिल्मी उछलकूद छोड़कर राजनीति में आना चाहते हैं?
उ० : मुख्य मंत्री बन गए, जब से रामाराव,
प्रधान मंत्री के लिए, बच्चन हैं बेताव।

जगवीत सिंह, 'वीर'—धमतरी (म.प्र.)
प्र० : पिछले दिनों 'गुट-निरपेक्ष' का बड़ा हो हल्ला रहा दिल्ली में, हम समझ ही नहीं सके यह है क्या बला?
उ० : बेटा-बेटी-बाप-मां, छोड़ सभी का साथ,
वह ही 'गुट निरपेक्ष' है जो हो जाय अनाथ।

विनोद पुरी रंजू—लुधियाना
प्र० : आंखों से आंसू किन हालातों में गिरने लगते हैं
उ० : भाग जाय जब प्रेमिका, दिल हो जाए लूज़,
या खुल जाये लाटरी, मिले यकायक न्यूज़।

काका के कारतूस
दीवाना पाक्षिक, ८ बी, बहादुशाह जफ़र मार्ग
नई दिल्ली-११०००२.

मुहब्बत, त्याग और नवाबी सनक की कलेजे को कलेजा करी बनाने वाली कहानी

ये इश्क नहीं आसन

खीरा फिल्म प्रोडक्शन

कहानी--कमलेश्वर अनब्रह्मचारी, गीत—आनन्द हीन बक्षी
कलाकार—रिची कपूल, पद्मिनी कोयला पुरे, दीप्ति नावल हसरानो, ओम पर घास, फिफ्टी खार, योगिता भाली।
संगीत—लक्स मीकांत प्यारे डाल।

आपने हमें क्या से क्या बना दिया। कालेज से निकलते ही रोड इंसपेक्टर बन गये। सड़क पर से टोंटे उठा उठा कर पीने लगे गए।

मेरे साथ रहोगे तो ऐसे ही ऐश करोगे। अरे हां, मैं भूल ही गया था। आज नवाब साहब के यहां मुशायरा है। इधर मैं गजल पढ़ूंगा और उधर चिलमन के पीछे हसीनायें बोर होकर सो जायेंगी।

एक आध को हम भी सुला देंगे, मैं प्रेम रोग की पूरी कहानी डॉयलाग समेत सुनाऊंगा।

ख्याल रखना कहीं कोई बोर होकर मर ही न जाये। फिर हम पर खून का मुकदमा चल सकता है। यार क्यों न हम दोनों एक काम करें। बेकारी की समस्या भी हल हो जायेगी।

हम दोनों ही शायरी करेंगे। घटिया शायरी के लिये आनन्द बक्षी से ट्रेनिंग ले लेंगे। फिर दूर-दूर से मरीज जिन्हें नींद न आने की बीमारी हो वह हमारे पास आया करेंगे और हमारी शायरी सुन कर सो जाया करेंगे। फिर अमरीका, इंगलैंड और जर्मनी से हमारे पास भी सैंकड़ों खत और पौंड शिलिंग पैंस आया करेंगे अपनी कम्पनी का नाम हम शायरी दवाखाना रखेंगे। आज एक नज्म तुम पढ़ना।

ऐ शोख नाजनी ! तू है बहुत हंसीं
पजाबी में कहते हैं जो हंसी वो फंसी,
छुप गये तारे नजारे ओये क्या बात हो गयी
छत टूटदी है ते टुट जाये,
अंग्रेजी में कहते हैं आई लव यू,
गुजराती मां अभी प्रेम करूं छू,
तेरे हिजाब ने मुझे शायर बना दिया
और राशन की लायन ने कायर बना दिया

इस फिल्म के निर्माता का शायद दिमाग खराब हो गया। शायरी की पृष्ठ भूमि पर बनी फिल्म के लिये गीतकार बाजारु गीत लिखने वाले आनन्द बक्षी को लिया।

आप हमेशा लाल स्याही से ही अपनी गजलें क्यों लिखते हैं ?

मेरा एक दोस्त सैक्रेटेरियट में स्टेशनरी डिपार्टमैंट में स्टोर कीपर है। उसके चार्ज में लाल स्याही का एक कार्टन सरपलस निकला···इसीलिए।

मैं समझी थी लाल स्याही खून व शोखी की निशानी है

मुझे लगता है मुझे इस घटिया शायर से प्रेम होने लग गया है। हमारे कलर मैच करने लग गए हैं। यह लाल स्याही से शायरी लिखता है। मैं लाल नेल पालिश और लाल लिपस्टिक का प्रयोग करती हूं। तुकबन्दी भी ठीक बैठती है। मैं सलमा हूं यह मेरा बलमा।

मुझे अच्छी तरह अपनी खूबसूरत आंखों में बसने दीजिये, दिल में बिठा लेने दीजिये। मुहब्बत एक थरथराता हुआ कीमती लम्हा है। उस लम्हे को समेट कर अपनी झोली में डाल लो। मेरी जिन्दगी तो एक आलू की बोरी थी उसे काट कर पोटेटो चिप्स आपने ही बनाये हैं।

मुझे नींद आने लगी है।

यहां की एक-एक ईट एक लाफानी इश्क है। यहां वर्ष में एक बार आसमान से दो कव्वे आकर कब्र पर बैठते हैं। जब वह कां-कां करते हैं तो पूरी फिजा एक अजीब डिस्को म्यूजिक से भर जाती है। थोड़ी देर रोटी के लिए लड़ने के बाद वह वापिस आसमान में चले जाते हैं।

और लाड़ कीजिए अपनी गुड़िया से, और दीजिए आजादी। आज इसने वह किया है जो हमारे खानदान में कभी नहीं हुआ।

जानती हैं आप मैं इसे कहां से लाया हूं? यह एक सुनसान वीरान सड़क पर एक गैर मर्द के साथ बेपर्दा फिर रही थी।

ऐसा क्या किया है इसने? क्या समोसे चटनी के साथ खाने की बजाय टोमेटो सॉस के साथ खा गयी?

प्रिन्स चार्ल्स के साथ घूम रही थी? लेकिन उसकी तो शादी डायना के साथ हो चुकी है। वह तो भाई जैसा हुआ।

प्रिंस चार्ल्स नहीं, यह किसी और के साथ थी। वही जिसकी गजलें सुन लोग सो जाते हैं। अगर इसे वहां नींद आ जाती बेपर्दा होने के कारण जुकाम हो जाता, वह बिगड़ कर निमोनिया हो सकता था।

अब्बा जान आपको तो पता ही है कि मैं अपने पर्स में हमेशा जुकाम और सिर दर्द की गोलियां रखती हूं। जैसे ही उसने शायरी शुरू की मैंने दो-दो गोलियां खा ली थीं।

गोलियां खाने के लिए पर्दा तो हटाना ही पड़ा था

जुकाम और निमोनिया में फर्क जानने की न तुम्हारी उम्र है और न ही तुम में अक्ल है। अपनी जुबान को लगाम दो, अगर दांतों के बीच आकर जुबान कट गई तो सैप्टिक और टैटनस हो सकता है। अब तुम घर से बाहर कदम नहीं रखोगी। पैरों में छाले पड़ने का डर रहता है।

वाह मिर्जा साहब वाह, आपने सलमा को कैद कर लिया, आपको तो किसी फिल्म का जेलर होना चाहिए था।

मैंने कई फिल्मों में जेलर और पुलिस अफसर का रोल कर रखा है।

आपको यह ख्याल तो होना चाहिए था कि शायर सलीम अभी-अभी प्रेम रोग में निराश प्रेमी का रोल कर चुका है। फिल्म कोई खास चली नहीं। आजकल लोग ट्रेजिक फिल्में पसन्द नहीं करते। आपने इस फिल्म का भी वही नक्शा बना दिया तो कहीं पिट न जाय।

कथाकार कमलेश्वर ने कहानी ही ऐसी रखी है तो मैं क्या करूं। वह बेचारा धीरेन्द्र ब्रह्मचारी का सारा गुस्सा सलीम पर उतार रहा है।

सलमा को घर में कैद कर लिया गया है तो मैं दीवार फांद कर, शीशा तोड़ घुस जाऊंगा। मुहब्बत कुर्बानी मांगती है तो मैं टोमेटो सास की कुर्बानी देने को तैयार हूं।
मैं उस कुर्बानी को अच्छी तरह जानता हूं। यह बन्दूक आपको फौरन वहां पहुंचा देगी।
आप मुहब्बत को गोलियों से छेद नहीं सकते तारीख गवाह है।
मैं तारीख को अच्छी तरह जानता हूं। आज तक किसी बाप ने फिल्म में शुरू में शायर से अपनी लड़की की शादी नहीं होने दी।
सलीम बेटे अभी चले जाओ, मेरा बेटा आगे के डायलॉग भूल गया है।
नहीं अब्बाजान मैं कहीं नहीं जाऊंगी, यही रहूंगी, बड़ी मुश्किल से यहां की बस रूटों और बसों के नम्बर याद हो गये हैं। नई जगह फिर नये सिरे से यह सब करना होगा।
नहीं बेटे, हम यहां किसी हालत में नहीं रहेंगे, हम झुमरी तलैया जाकर रहेंगे। वहां तुम्हारा दिल बहल जायेगा। वहां तुम्हें पांचू प्रसाद मिस्त्री से मिलवाऊंगा जो रोज विविध भारती को फिल्मी गानों की फरमाईश भेजता है। अब तुम सलीम के गम में विविध भारती को गम के गानों की फरमाईश ही तो भेजोगी। विविध भारती वाले झुमरी तलैया वालों की फरमाईश जरूर सुनवाते हैं। रोज रेडियो पर अपना नाम सुना करना।
सलीम साहब आप इस नाचीज के गरीब खाने पर तशरीफ लाये हैं। मेरे पांव जमीन पर नहीं पड़ रहे हैं।
इन दकियानूसी फिल्मों की यही तो खासियत है। हीरो को किसी न किसी बहाने कोठे पर लाया जाता है ताकि एक-आध मुजरा डाल सकें। मैं तो वीडियो गेम खेलना चाहता था।
वह आ गई…मेरी सलमा आ गई, मिर्जा साहब की कोठी के दरवाजे और खिड़कियां खुले हैं…और ड्राइंग रूम में वह सलमा पीठ किये बैठी है—वह आ गई—वह आ गई।
मेरा नाम साहिरा है अब हम लोग इस घर में रहने के लिए आये हैं। आप सलीम साहब हैं न? आपको कौन नहीं जानता। सारे अनिद्रा के रोगी आपको जानने लग गये हैं।
इसीलिए मेरी लिखी गजलें बुक स्टालों पर नहीं मिलतीं। वह मैडिकल स्टोरों पर मिलती हैं। डाक्टर लोग नुस्खे में नींद के लिए गोलियों की जगह मेरी नज्में प्रेस्क्राइब करने लगे हैं।
जो लोग गए हैं वह भूल से एक किताब छोड़ गए हैं, मैं वह किताब आपकी नजर कर सकती हूं।

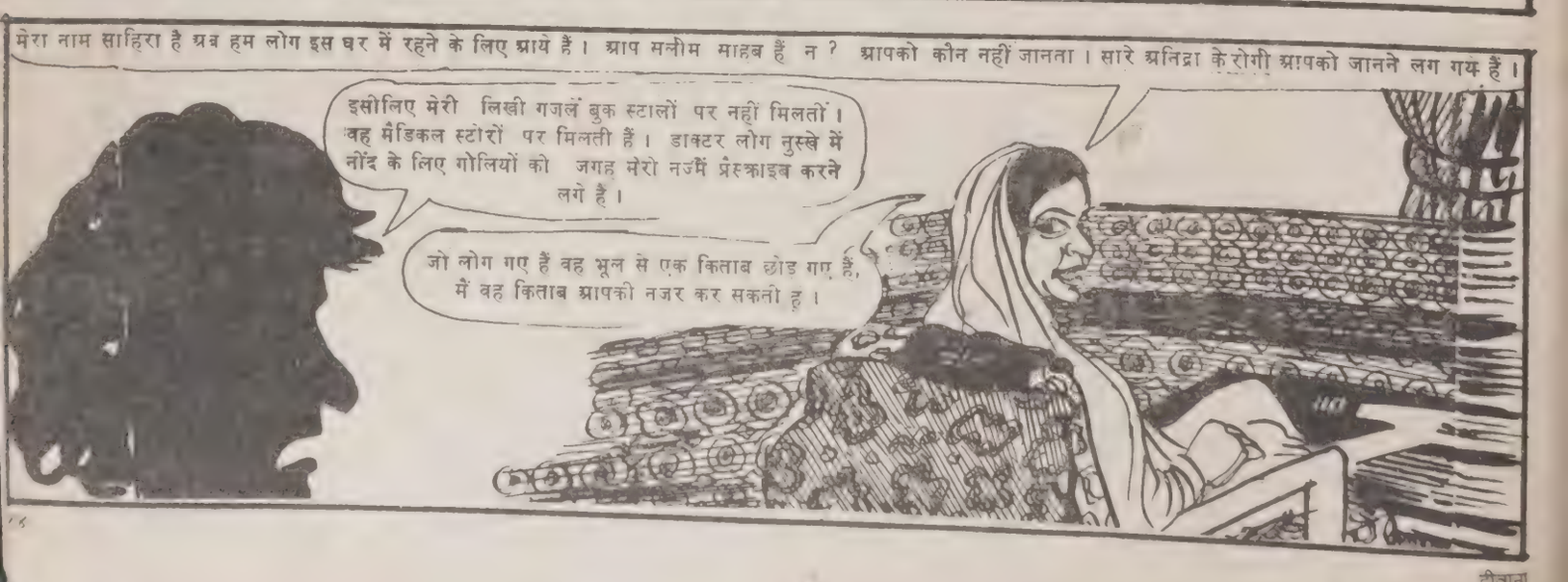

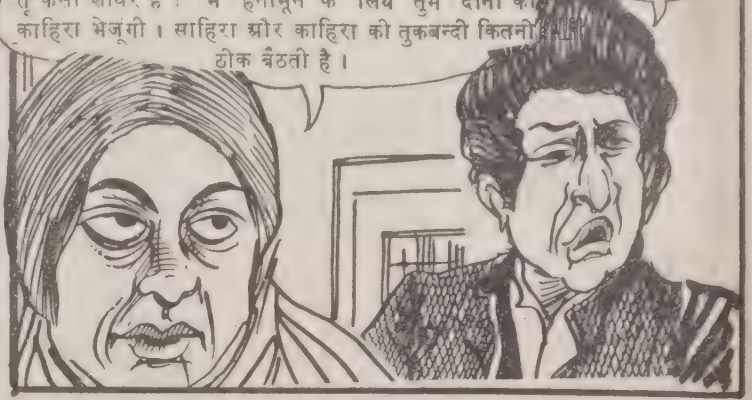

जी हां, इस सूखे हुए गुलाब ने इसे और भी कीमती बना दिया। वही तो यह किताब थी जिसे लेते हुए सलमा ने कहा था, 'मैं इसे जान से ज्यादा सम्भाल कर रखूंगी।' मैं जो भी लिखता हूं दिल के खून से लिखता हूं। मेरे शेरों में—
मुद्दत से मैं आपके आटोग्राफ लेना चाहती थी। इससे पहले कि आपकी बातें सुन मुझे नींद आ जाये आटोग्राफ दे दीजिये।
मैंने फैसला किया है कि तुम्हारी शादी साहिरा से ही होगी।
लेकिन अम्मी जान मुझे यह रिश्ता मंजूर नहीं है।
तू कैसा शायर है? मैं हनीमून के लिये तुम दोनों को काहिरा भेजूंगी। साहिरा और काहिरा की तुकबन्दी कितनी ठीक बैठती है।
काश, हमारी शादी में इन फूलों की महक होती? आपको मालूम नहीं। यह शादी सिर्फ मेरी अम्मीजान के हुक्म से हुई है। आपको वह नहीं मिलेगा जो एक बीवी को शौहर से मिलता है।
क्या बटुआ कहीं छुपा कर रखोगे?
फर्ज की जिस दस्ती में हम दोनों बांध दिए गये हैं उसका सिरा हमेशा आपके हाथ में रहेगा। आप जब चाहें उसे खींच कर मेरे जिस्म को अपना बना सकती हैं। लेकिन मेरा दिल आपका कब्जा कभी कबूल नहीं करेगा।
हे खुदा! यह आदमी क्या सुहाग रात को ही डायलॉग बोल-बोल कर बोर करके मार डालेगा। सलमा ने मेरी गर्दन कहां फंसा दी? अपना दिल रख लेना अपने पास, मैंने कौन सा उसका अचार डालना है। अचार के लिए गलगल और नींबू काफी है।
मैंने सब कुछ करके देख लिया लेकिन सलीम का दिल नहीं जीत सकी। उसे बीकानेरी पापड़ खिलाये, आलू गोभी के परांठों के साथ आम का अचार खिलाया। सोते समय लोरियां सुनाईं। चिऊइंगम के बबल बना कर दिखाये लेकिन वह नहीं पसीजा। तोड़ दो इन चूड़ियों को। आप आगे बढ़िये और इनको तोड़ डालिये।
सलीम साहब आप बहुत बड़ी गलतफहमी में हैं। सलमा तो उसी दिन मर गई जिस रोज हम जा रहे थे। हम भूल गए थे, उसे भी आपसे शायरी की बीमारी लग गई है। हम दूसरे पहर जा रहे थे पहर के साथ तुकबन्दी जरूर बनती है सो उसने जहर खा लिया। हमने भी आगे तुक जोड़ा उसे दबाने के लिए चुना यही शहर।
लेकिन फिर वह खत जो सलमा मुझे भेजा करती थी?
मैं ही लिखती थी वह खत। मैं वह खत लिखकर झुमरी तलैया मिर्जा साहब को भेजती थी और मिर्जा सासब उसे वहां से पोस्ट करते थे। सलमा ने आखिरी वक्त यही कहा था सलीम बहुत कीमती है उसे बचा लेना। मीट का भाव बीस रुपये किलो है और आगे जाकर और बढ़ेगा।
मैं कीमती नहीं, कीमती तो सलमा थी या साहिरा है हर वक्त रोल्ड-गोल्ड के बने दो अढ़ाई सौ रुपये के जेवर तो पहने ही रहती है। मेरा पास पचास रुपये वाली डिजीटल वाच है।
सलमा तो बहुत पहले आग की दरिया में कूद गई। मेरी नज्मों से बोर होकर जहर खा गई। लेकिन तुम दरिया में डूबी रहीं। एक बार भी बोर-बोर की हूटिंग नहीं की। तुम इबारत को हकदार हो।
THE END

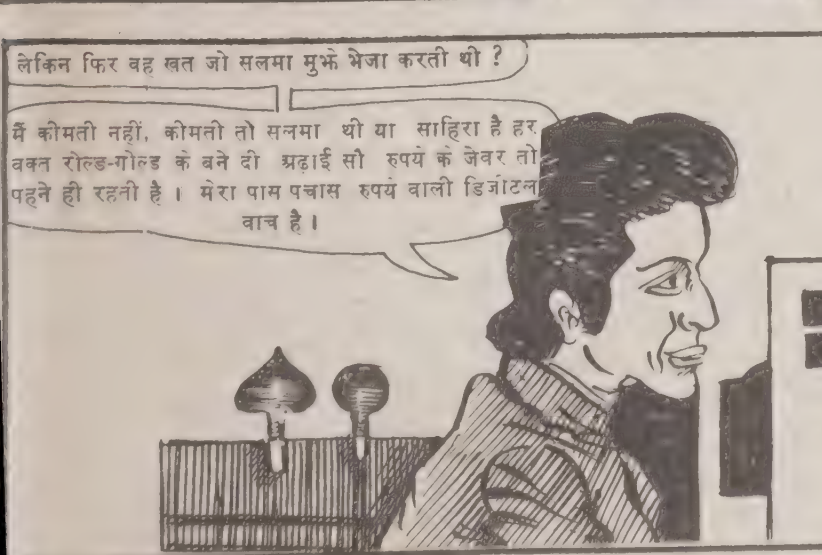

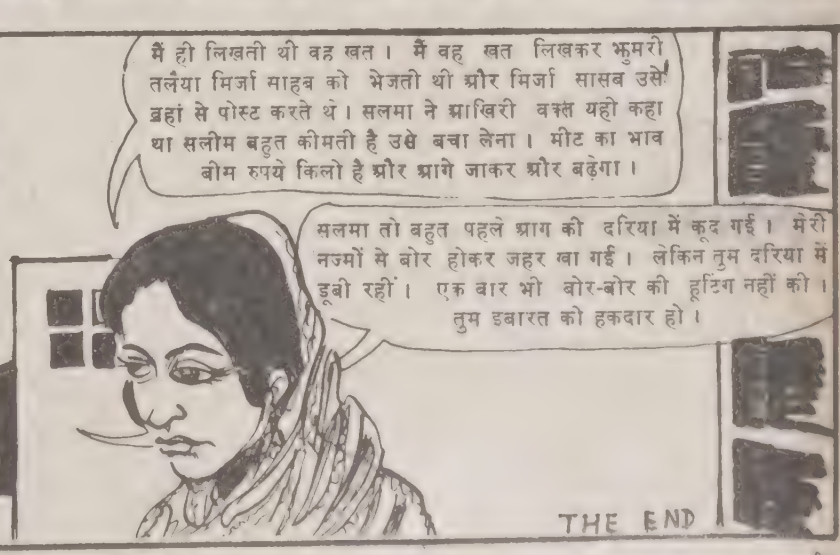

धारावाहिक उपन्यास भाग ३

घर

– राजवंश

''बेटी जवान हो गई . . .कुछ इस बात का भी ध्यान है?''

''कोई नई बात है? बच्चे जवान होते ही हैं।''

''मैं पूछती हूं . . .सुनीता के लिए कब सोचेंगे?''

''सुनीता के लिए क्या सोचूं?'' उन्होंने आश्चर्य से पूछा।

''हाय राम! तुम तो सरकारी कुर्सी पर बैठकर खालिस सरकारी बन गए हो . . .घरेलू बातचीत के शब्द ही भूल गए हो सारे-के-सारे . . .।''

''तुम भी तो पहेलियों में बातें कर रही हो।''

''मैं चाहती हूं . . .सुनीता के लिए लड़के की कुछ चिन्ता करो ना?''

''चिन्ता की क्या जरूरत है? अरे भगवान ने जब सुनीता को पैदा किया है तो उसका वर भी धरती पर जरूर उतारा होगा।''

''और वह अपने आप ही उड़कर घर में आ जाएगा।''

''ओ बाबा . . .काम की बात करो।''

''लगता है . . .भगवान ने सचमुच यह चमत्कार दिखाया है।''

''क्या मतलब?''

''वह तुम्हारे दोस्त हैं ना प्रोफेसर चावला।''

''पागल हो . . .क्या बात करती हो! वह तो सुनीता को बेटी कहते हैं।''

''फूट गए भाग्य मेरे।'' कृष्णा नें माथे पर हाथ मारकर कहा, ''अरे मैं कह रही थी प्रोफेसर चावला ने एक लड़के को भेजा है।''

''सुनीता के लिए?''

''तोबा है . . .सुनीता को पढ़ाने के लिए।''

''तो क्या हुआ? पढ़ने दो . . .'' मेहरा साहब, फाइल पर झुकते हुए बोले, ''चावला मेरी आदत जानता है, उसने किसी अच्छे लड़के को ही भेजा होगा।''

''तुमसे बात करने के लिए इस्पात का भेजा चाहिए।''

''तुम कहना क्या चाहती हो?''

''मैं खाक कहूंगी . . .? तुम सुनो तो कुछ कहूं।''

मेहरा साहब ने फाइल बन्द कर दी और कुर्सी की पीठ से टेक लगाकर बैठते हुए बोले, ''हां . . .बताओ . . .क्या कहना है?''

''मैं कह रही थी . . .लड़का मुझे बड़ा शरीफ़ लगता है . . .एम. कॉम कर रहा है . . .हर क्लास में टाप करता आया है . . .सूरत से भी बुरा नहीं। क्यों न प्रोफेसर से मालूम करके सुनीता के लिए बात की जाए?''

''ठीक है . . .मैं प्रोफेसर चावला से बात कर लूंगा।'' मेहरा साहब ने फिर फाइल खोलते हुए कहा।

''हां-हां तुम जरूर बात कर लोगे . . .बस रहने दो . . .मैं ही जाऊंगी किसी दिन . . .या फिर प्रोफेसर और उनकी पत्नी को किसी दिन खाने पर बुला लूंगी।''

''ठीक है . . .जब फैसला ही करना था तो मेरा दिमाग चाटने की क्या जरूरत थी?''

कृष्णा झल्लाकर उनके कमरे से बाहर निकल आई . . .उसी समय कमल और सुनीता बाहर निकले। सुनीता ने कहा, ''मां . . .कमल बाबू जा रहे हैं।''

''अरे . . .!'' कृष्णा जल्दी से बोली, ''अभी से जा रहे हो बेटा . . .कुछ देर और बैठो।''

''मांजी!'' कमल मुस्कराकर बोला, ''अब तो रोज ही आया करूंगा। अधिक देर बैठा तो आप ही लोग उकता जाएंगे।''

उन लोगों में कुछ देर खड़े-खड़े बात हुई . . .फिर कमल ने नमस्ते किया . . .और जब सुनीता दरवाजे की ओर उसे छोड़ने बढ़ी तो कमल रुक गया और बोला, ''देखिए मिस सुनीता . . .मैं तो रोज आया करूंगा . . .यह रोज-रोज कष्ट नहीं चलेगा।''

सुनीता हंसकर रुक गई। कमल ड्योढ़ी से गुजर कर दरवाजे से बाहर निकल आया . . .उसने सामने ही देखा, हरीश के कमरे में ताला पड़ा हुआ था . . .फिर कमल गली की ओर बढ़ ही रहा था कि गली के सिरे पर उसे हरीश नजर आ गया—कमल ने उसे देखा और ठंडी सांस ली . . .बड़ा भले मानसों वाला ब्राह्मणों का-सा भेष बना रखा था उसने—कुर्ता, धोती और चप्पलें . . .माथे पर लम्बा तिलक लगा था . . .हाथ में पूजा का प्रसाद भी था और चेहरे पर भी खिलन थी।

कमल को देखकर वह मुस्कराया और जब दोनों एक-दूसरे के पास पहुंच गए तो हरीश ने मुस्करा कर कहा, ''जानते हो कहां से आ रहा हूं?''

''स्पष्ट नजर आ रहे हैं . . .मन्दिर से आ रहे हो।''

''लो प्रसाद लो।''

कमल ने हाथों को ऊपर-नीचे करके प्रसाद लिया . . .और हरीश ने कहा, ''आजकल रोज सुबह-शाम मन्दिर जाता हूं। किसी लड़की की ओर नजर उठाकर भी नहीं देखता। अभी कल ही एक लड़की ने पास से गुजरते हुए देखकर कटाक्ष किया था 'नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली' . . .मगर मैंने उसकी बात का जरा भी बुरा नहीं माना . . .और एक बात कमल . . .पूजा करनें से सचमुच बड़ी शांति मिलती है मन को . . .एक अच्छाई स्वयं ही मन को बुराइयों से हटाने लगती है। मुझे ऐसा अनुभव होने लगा है कि मैं जो कुछ कर रहा था वह गलत था . . .अनुचित था।''

''शुक्र है भगवान का।'' कमल ने मुस्कराकर कहा, ''मुझे तुम्हारी बातों में सत्य की झलक मिलती है।''

''छोड़ो यार . . .मैं मजाक नहीं कर रहा . . .इस लड़की के प्यार ने तो सचमुच मेरा दिल ही बदल दिया है।''

''लगे रहो . . .इसी रास्ते पर . . .मैं दो-चार दिन और देखूंगा इसके बाद तुम्हारी बात जरूर करूंगा।''

''धन्यवाद!'' हरीश ने ठंडी-सी मुस्कराहट के साथ कहा, अब मुझे कोई जल्दी भी नहीं . . .पहले जो प्रतिशोध की भावना मन में उत्पन्न हुई थी वह अब धीरे-धीरे कोमल भावों में बदलती जा रही है।''

''ओहो . . .तब तो जल्दी करनी पड़ेगी।'' कमल ने चिन्तित स्वर में कहा, ''इस बुखार में वह लड़की तुम्हारे घर में आ जाए तो तुम इसी हाल में रह जाओगे।''

''तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी . . .मेरा घर बस जाएगा तो शायद सचमुच मैं फिर कभी नहीं भटकूंगा—क्योंकि आवारा मुंहजोर घोड़े को भी एक थान से बांध दिया जाए तो वह उसका अभ्यस्त हो जाता है . . .आओ, थोड़ी देर बैठेंगे।''

''नहीं . . .'' कमल ने घड़ी देखते हुए कहा, ''देर हो रही है. . .मैं चलूंगा।''

''अरे . . .कई दिन से कालिज लेने जाता हूं तो वहां भी नहीं मिलते . . .अब घर तक आए हो तो कुछ देर तो बैठ लो चलकर—।''

''मैं तुम्हारे पास थोड़ ही आया था।''

''फिर . . .इस गली में किसके पास आए थे?''

''वह तुम्हारे दरवाजे के बिल्कुल सामने वाला मकान है ना—!''

''हां-हां।'' हरीश का दिल धड़क उठा, ''मेहरा साहब का?''

''मेहरा साहब की बेटी सुनीता को स्टडी करा रहा हूं, आजकल।''

''क्या?'' हरीश के चेहरे का रंग एकाएक बदल गया, ''तुम सुनीता को पढ़ा रहे हो?''

''हां . . .मेरे एक बहुत पूजनीय प्रोफेसर चावला हैं . . .उनका आदेश है . . .मैं टाल नहीं सकता . . .मगर तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ गया है यह बात सुनकर?''

''क . . .क . . .कब से पढ़ा रहे हो?''

''जिस दिन से तुम्हें कालिज के गेट पर नहीं मिला।''

''सुनीता से कब से जान पहचान है?''

''कभी से नहीं . . .उससे दो दिन पहले चावला साहब ने ही परिचय कराया था इसे पढ़ाने का दायित्व सौंपा था—मगर बात क्या है? कहीं सुनीता ही वह लड़की तो नहीं जिसने तुम्हें जोगी बना दिया?''

''हां—!'' हरीश ने बड़ी मुश्किल से फंसी-फंसी-सी आवाज में कहा।

कमल ने हल्का-सा ठहाका लगाया और हरीश की पीठ पर धप मारकर बोला—

''अबे, तेरा दम क्यों निकलने लगा? मेरा सुनीता से कोई चक्कर नहीं है . . .तू जानता है मैं ऐसे झगड़ों में नहीं पड़ता—मगर यह अच्छा हुआ कि सुनीता ही वह लड़की निकली। मेरे लिए उन लोगों से बात करना सहज होगा क्योंकि उनके घराने से सम्बन्ध बन गए हैं। सुनीता की मां बहुत अच्छे स्वभाव की हैं . . .पिता थोड़े अकड़ैत हैं मगर दिल के बुरे वह भी नहीं लगते—।''

हरीश के चेहरे पर थोड़ा सन्तोष झलकने लगा था। उसने होंठों पर जबान फेरी और बोला—

''तो फिर कब बात करोगे?''

''बस . . .जब अवसर मिल गया। तू घबरा मत, अब वह कहीं नहीं जा सकती।''

''मैं तुम्हारा यह उपकार जीवन भर नहीं भूलूंगा।'' हरीश की आवाज थोड़ी भारी हो गई।

कमल ने फिर हंसकर एक धप उसकी कमर पर जड़ दिया।

. मेहरा साहब के आफिस और ड्राइंगरूम सरीखे कमरे में इस समय प्रोफेसर चावला, मेहरा साहब, कमल और कृष्णा बैठे हुए थे . . .उन लोगों में चाय चल रही थी . . .कृष्णा बहुत खुश दिख रही थीं . . .प्रोफेसर चावला को सम्बोधित करती हुई वह बोली—

''प्रोफेसर भैया . . .अगर तुम दो-चार दिन और न आते तो मैं स्वयं ही तुम्हें और भाभी को बुलाने वाली थी।''

मैं भी शायद अभी न आता . . .वह तो कमल के मजबूर करने पर आया हूं।''

''अच्छा . . .कमल लाया है आपको?''

''हां भाभी . . .।'' प्रोफेसर ने चाय की प्याली रखते हुए कहा, ''अब मुझे इधर-उधर घुमाकर बात तो करना आती नहीं . . .वास्तव में कमल सुनीता के रिश्ते की बात करना चाहता है।''

''अच्छा!'' कृष्णा और भी खुशी से खिल उठी।

दूसरी ओर आंगन में एक कोने में खड़ी सुनीता का दिल किसी अनजान-सी खुशी से धड़क उठा था—उसने जल्दी-से सीने पर हाथ रख लिया। कमल ने चाय का आखिरी घूंट लेकर प्याली रखते हुए कहा—

''आप लोग मेरे बड़े हैं—मुझे स्वयं बात करना अच्छा नहीं लगा था इसलिए प्रोफेसर साहब को बीच में डालना पड़ा . . .।''

''अरे बेटे . . .लड़का अच्छा हो तो फिर किसी को बीच में डालने की जरूरत पड़ती ही नहीं . . .वैसे भी आखिर लड़की वाले ही लड़के वालों के घर जाते हैं।''

''जी हां मांजी . . .मगर लड़के के घर में कोई नहीं . . .मैं उसे बचपन से जानता हूं . . .मेरा बहुत अच्छा दोस्त है . . .शिक्षा केवल मैट्रिक तक है मगर हाथ में गुण है . . .तीन-चार हजार रुपये महीने की इन्कम है . . .मोटर साइकिल है . . .कुछ दिनों

में अपना घर खरीदने वाला है . . .सबसे अच्छी बात यह है कि न सास-ससुर का झगड़ा और न ननद देवर का—उसका जो कुछ भी हूं बस मैं ही हूं—आप चाहेंगी तो वह आपके साथ भी रह सकेगा।''

कृष्णा सन्नाटे में रह गई थी . . .दूसरी ओर सुनीता के माथे पर एक ठोकर सी लगी थी . . .जाने क्यों दिल किसी की मुट्ठी में जकड़ा हुआ-सा लगा था। वह सख्ती से होंठ भींचकर जल्दी से अपने कमरे में चली गई थी . . .उधर मेहरा साहब ने खुश होकर कहा—

''भला इससे अच्छी और क्या बात है? आजकल लड़कों में देखा भी क्या जाता है?''

''मगर।'' कृष्णा ने धीरे से पूछा, ''वह लड़का है कौन?''

''आपके सामने ही तो रहता है, हरीश नाम है उसका।''

''ओह! वह लड़का . . .।'' कृष्णा ने आश्चर्य से कहा, ''जो आजकल रोज सुबह-शाम पूजा के लिए मन्दिर जाया करता है?''

''हां मांजी . . .बचपन से माता-पिता की छाया से वंचित रहा था . . .थोड़ा बदनाम जरूर है मगर वह दिल का बहुत अच्छा है?''

''क्यों नहीं . . .क्यों नहीं।'' मेहरा साहब ने कहा, ''तुम कह रहे हो तो जरूर अच्छा होगा।''

''इस बात को निश्चित करने की इतनी जल्दी भी नहीं है?'' कमल ने कहा, ''आप भली-भांति सोच-समझकर फैसला क़ीजिए मैं तो केवल एक प्रस्ताव लाया हूं . . .आप हरीश के हालात भी मालूम करा लीजिए।''

''हां बेटे . . .वह तो मालूम करना ही पड़ेंगे। हम बाद में जवाब देंगे।''

कुछ देर मौन रहा . . .फिर कमल ने प्रोफेसर से सम्बोधित होकर कहा—

''सर . . .आप तो शायद ठहरेंगे अभी।''

''हां बेटे . . .तुम चलो . . .मैं वैसे भी बहुत दिनों बाद आया हूं?''

''अच्छा . . .मांजी, बाबूजी . . .आज्ञा दीजिए।''

कमल के चले जाने पर भी कुछ देर कमरे में मौन छाया रहा . . .फ़िर प्रोफेसर ने पाइप में तम्बाकू भरते-भरते कुछ चौंककर मेहरा साहब और कृष्णा को देखा और बोले—

''क्या बात है . . .यह तुम लोग चुप क्यों रह गए?''

''मैं . . .मेहरा साहब ने चौंककर कहा, ''हां मैं ग्रीन फाइल के बारे सोचने लगा था।''

''भाड़ में गई तुम्हारी फाइल'' कृष्णा ने गुस्से से कहा, ''तुम्हारा बस चले तो खाने की जगह भी फाइलें ही चबाने लगो।''

प्रोफेसर हंस पड़े और कृष्णा को ध्यान से देखकर बोले—

''अब तो लगता है भाभी . . .जरूर कोई बात है।''

''हां भैया . . .बात तो है।'' कृष्णा ने बेचैनी से पहलू बदल कर कहा।

''क्या बात है . . .? मुझे बताइए ना।''

''कमल ने जिस लड़के हरीश की बात की है, उसे आपने कभी देखा है?''

''उसे तो कभी नहीं देखा . . .लेकिन कमल को मैं पिछले छः वर्ष से जानता हूं . . .और मैं तो इतना जानता हूं कि कमल एक ऐसा हीरा है जिसे बिना परखे हुए ही मैं खरीद सकता हूं . . .और कमल जिसकी प्रशंसा करेगा वह गलत नहीं होगी।''

''भैया . . .!'' कृष्णा ने कहा, ''हरीश कैसा है यह तो हम नहीं जानते क्योंकि हमारा उससे कोई सम्बन्ध नहीं पड़ा . . .हां इतना जरूर है कि हम लोग जो तुम्हें बुलाने वाले थे वह किसी और के बारे में बातें करते।''

''किसके बारे में?''

''जिसे तुम हीरा कह रहे हो।''

''क्या?'' प्रोफेसर चावला उछल पड़े, ''कमल के बारे में?''

''हां . . .हमें तो कमल शुरू ही से पसंद था . . .शायद सुनीता, भी उसे पसंद करती है। मैं तो सोच रही थी किसी दिन तुम्हारे साथ कमल के घर जाऊंगी . . .मगर यहां तो मामला ही उलटा हो गया।''

''काहे को उलटा हो गया . . .अरे, अभी तो तुमने जबान भी नहीं दी। कमल ने अपने दोस्त का घर बसाना चाहा होगा लेकिन अगर सुनीता को कमल पसंद है तो हम कमल के घर चलेंगे। अगर कमल हीरा है तो हमारी सुनीता भी कोई कम नहीं . . .हम अपनी बेटी का दिल क्यों तोड़ें?''

कृष्णा का दिल खुशी से खिल उठा।

हरीश बड़ी बेचैनी से सिगरेट के कश लेता हुआ इधर-उधर टहल रहा था . . .उसके पैरों के पास कई सिगरेट कुचले पड़े थे जिनको केवल दो-चार कश लेकर फैंक दिया गया था . . .उसके चेहरे पर गहरी व्याकुलता थी जैसे वह जीवन या मृत्यु का फैसला सुनने के लिए खड़ा हो। आज कमल अपने प्रोफेसर को लेकर सुनीता के घर बात करने गया था और वापसी में रिजल्ट बताने को कहा था . . .लेकिन हरीश ने उसे अपने कमरे की बजाए जवाहर पार्क में बुलाया था . . .कमल को गए हुए लगभग डेढ़ घंटा हो गया था . . .और यह क्षण हरीश के लिए बहुत कठिन परीक्षा के थे . . .वह सचमुच बहुत अधीर हो रहा था।

सहसा दूर से कमल आता नजर आया और हरीश के हाथ से सिगरेट छूटकर गिर गई और दिल पर एक जोरदार झटका-सा लगा—वह सन्नाटे में खड़ा कमल को आते देखता रहा . . .फिर जब कमल का चेहरा साफ नजर आने लगा और हरीश ने उसके चेहरे पर एक सन्तोषमय मुस्कराहट देखी तो उसे कुछ धैर्य

शेष पृष्ठ ४८ पर

बन्द करो बकवास

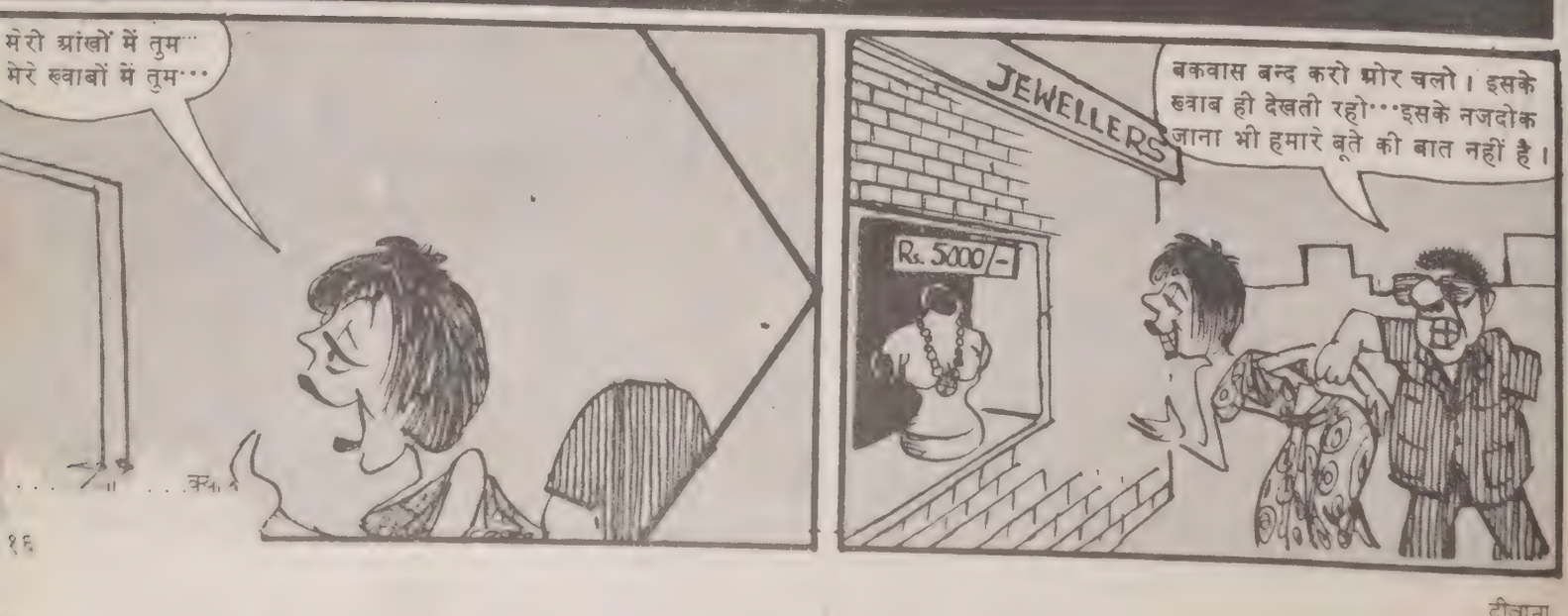

माचू पीचू खड्डे में अड्डा

कहानी एवं चित्रांकन - रघुबीर सिंह

माचू, पीचू, रगड़ू, डा० बोलाराम और नासपीटा बैठे बातें कर रहे होते हैं तभी मिस कटर कहती है -

आज मैं बहुत खुश हूँ कि हमारी "माचू-पीचू प्राईवेट डिटैक्टिव एजेंसी" खुल गई है। अब हम सब ईमानदारी, जिम्मेदारी और मेहनत से काम करेंगे।

हम जासूसी कुत्तों से भी बड़े जासूस हैं। सेवा का मौका दें।

थोड़ी देर बाद टेलीफोन की घण्टी बजती है तो माचू फोन उठाता है।

हैलो मैं माचू-पीचू प्राईवेट डिटैक्टिव एजेंसी से माचू जासूस बोल रहा हूँ।

अबे जासूस तो बन गया मगर बात करने का सलीका क्या तेरे खानदान को भी था जो तू टेलीफोन पर बात कर रहा है।

अबे चुपकर कड़ा आया खानदान वाला।

तभी दूसरी ओर से टेलीफोन करने वाली औरत बोलती है –

मैं खानदान वाला नहीं, खानदान वाली श्री माती आशा भटनागर बोल रही हूँ। मेरी लड़की उमा आज रात से घर से गायब है। और दो लाख के जेवर और कैश भी गायब है। आप मेरी बेटी, जेवर और कैश का पता लगायें, मैं आप की फीस आपके कप्तर में भेज देती हूँ।

उस औरत का केस सुनकर मिस कटर कहती है –

श्री मति आशा भटनागर जी, हमने आपका केस सुनलिया है। आपके बताये पते पर हम दः जासूस आ रहे हैं।

हम सब का लंच आपके घर पर ही होगा।

और डिनर भी आपके यहाँ ही होगा।

क्योंकि हम रात को रिपोर्ट देने आयेंगे।

यू आर वैलकम। आप सब का स्वागत है।

सभी जासूस श्रीमती आशा भटनागर के घर जाकर उनकी लड़की उमा का फोटो लेते हैं। लड़की की माँ से पीचू कहता है –

तो आप अपनी लड़की को कड़की में रखते थे जो वह चोरी करके भाग गई?

कहीं चोर ने उसका बोलोराम न कर दिया हो।

मेरे ख्याल से चोर चोरी करके भाग रहा होगा वह उसी के साथ भाग गई होगी।

ऐसी बात है तो हम चोर को रगड़ देंगे।

अरे चोर मिलेगा तो रगड़ोगे।

मेरे ख्याल से लड़की उमा का किडनैप किया गया है।

तुम कुछ भी करो मेरी लड़की को बचाओ, पुलिस को तो मैं बताना नहीं चाहती, यह मेरी इज्जत का सवाल है।

उमा हमें किसी पहाड़ी या जंगल में मिल सकती है। क्यूँकि हमें उसके बिस्तर पर जंगली फूलों का गुच्छा मिला है जिसमें बेहोशी की दवा थी। इसलिये उमा को तलाश करने के लिये हमें जंगल में जाना चाहिये।

और वो सभी उमा की तलाश में जंगल की ओर जाते हैं।

सावधान, जासूस आ रहे हैं

जंगल में पहुँच कर पीचू कहता है -

काफी रात हो गई है चलो उस पुराने शिव मन्दिर में आज की रात गुजारें, सुबह जंगल में उमा को तलाश करेंगे पर हमारे हर आदमी के पास पुड़िया, हथियार और बटन बम होने चाहिये।

शिव मन्दिर में पहुँच कर अभी सोने की तैयारी कर ही रहे होते हैं कि माधू दूर एक खंडे में देखता है कि एक टार्च की रोशनी खंडे में गई और उस खंडे में से टार्च की रोशनी बाहर को आई।

आखिर इस खंडे में क्या घन चक्कर है?

ढाल में कुछ काला लगता है।
ढाल में काला नहीं काले में लाईट है।
हमें बिना आराम किये उस खड्डे का सावधानी से निरीक्षण करना चाहिए। पहले किसी एक मर्द को उस खड्डे के पास भेजो, रगडू तुम ही जवाँ मर्द हो,जाओ तुम खड्डे की जासूसी करके आओ।
बड़ों ने कहा है "एक से दो भले" मैं और तुम जाकर देखते हैं उस खड्डे में क्या है?
अबे इक्ट्ठे चलते हैं, मरेंगे तो एक साथ जियेंगे तो एक साथ।
वो सभी खड्डे के पास जाकर देखते हैं पर उन्हें वहाँ सिवाये झाड़ियों के कुछ नहीं दिखाई देता।
अरे खड्डे में झाड़ी हिली है वहाँ जरूर कुछ है।
अबे रगडू इस झाड़ी में अपना एटम बम फैंक दे।
रगडू बहुत सी पिसी लाल मिर्च झाड़ी में फैंकता है। कुछ क्षणों में खड्डे में से छींकों की आवाज़ आती है। ऊपर से रगडू छींके मारता है।
अऽऽऽऽ अऽऽऽ आऽऽऽ छी--छीआँछी
अ--अऽऽऽ आँ---आँऽऽऽ छीऽऽऽ आँछी
शेष पृष्ठ ३१ पर

सनम तुम्हें दे राशन कार्ड

पूरन सरमा

शाम को दफ्तर से लौटा तो—घर में घुसते ही पत्नी ने सूचना दी कि राशन कार्ड नहीं मिल रहा है। एक बारगी मेरा दिल धक्क से रह गया। मैंने कहा सुबह तो मैं कोयले लाने के बाद जल्दी में उसे टेबिल पर डाल कर दफ्तर चला गया था। पत्नी ने बताया उसे दोपहर में राशन की चीनी लानी थी—तब उसे ढूंढ़ा तो मिल नहीं रहा है।

राशन कार्ड गुम होने का विश्वास नहीं हुआ—इस दृष्टि से मैंने सारा घर छान मारा लेकिन राशन कार्ड के दर्शन नहीं हुए आखिर शिथिल होकर मैं धम्म से कमरे में पलंग पर जा गिरा।

पत्नी समझ गई—मेरी तबियत खराब हो गई है। अत: वह चाय बनाने लगी। वह जानती थी कि राशन कार्ड किस तरह बन पाया था। रसद विभाग कार्यालय के लगातार चार दिन चक्कर लगाने और चार कैजुअल लीव के बाद राशन कार्ड मेरे घर आने को राजी हुआ था। छुट्टी लेते समय दफ्तर के अफसर की डांट सुनी, वह अलग ब्याज में थी।

स्वयं मेरी आंखों के आगे रसद विभाग कार्यालय के सामने का मैदान घूम रहा था।जहां राशन बनवाने वालों का प्रतिदिन मेला लगा रहता है। उफ वह धूप, बार - बार निराश लौटना और आशा के साथ फिर जाना। आशा—निराशा की आंख मिचौनी -क्या फिर खेलनी होगी।

बगैर राशन के कुछ मिलता भी तो नहीं। मैं सौगंध खाकर कहता हूं राशन कार्ड से अगर बच्चे मिलते तो मैं उन्हें कभी भी, उस सस्ती दर पर भी खरीदने को नहीं जाता। पर राशन से मेरे द्वारा पैदा किए बच्चों को जिन्दा रखने का सामान मिलता है। पता नहीं क्यों मुझे इतना मोह हो गया है उनसे।

चाय बनाकर पत्नी लाई-उसने सहारा देकर मुझे बिठाया और चाय पिलाने लगी। मेरी हालत टाइफाइड के उस मरीज जैसी हो गई थी—जो पिछले एक महीने से उससे जूझता रहा था। रह-रहकर राशन कार्ड गुम होने की पीड़ा कचोट रही थी। मैंने धीरे से पत्नी से पूछा—तुमने इसके गुम होने के बारे में कुछ सोचा है।

मैंने तो यही सोचा है अब—पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराने के अलावा और कोई चारा नहीं है।

मैं थाने जरूर चला जाऊंगा—यहां तक कि जहन्नुम में जाने को तैयार हूं लेकिन रसद विभाग नहीं जाऊंगा। मेरी घिग्घी बंध रही थी।

पत्नी मेरे भय को भांप गई और बोली—अच्छा मत जाना रसद विभाग। अब सो जाओ तुम। कल देखेंगे।

रसद विभाग का बाबू चारों बार जाने पर चारों बार ही रिश्वत मांगता है। कहता है मेरा तो इसमें एक ही भाग रहेगा। बाकी तीन भाग तो बंट जायेगा। जब जाओ तब ही वह प्रार्थनापत्र के साथ-पांच रुपये का नोट नत्थी लगा देखना चाहता है। मैं बच्चों की तरह सुबक रहा था एक ही काम करने की रिश्वत तो मैं भी चार बार नहीं लेता।

पत्नी ने मेरे सिर पर हाथ फेरा और नब्ज देखते हुए बोली-देखो अब सो जाओ तुम, वर्ना रसद विभाग का बाबू आ जायेगा। मैं यह सुनकर एकदम सिमट गया—रसद विभाग का वह बाबू मेरे लिए 'हव्वा' बन गया था।

राशन कार्ड खोने के गम में पता नहीं मुझे कब बेहोशी आई और जब आंख खुली तो पत्नी चाय का प्याला लेकर पुन: मेरे सामने खड़ी थी। अबकी बार मुझे पत्नी पर कोफ्त हुई। जब देखो चाय बना लाती है-पहली बात तो चीनी मिल नहीं रही और मिलती है तो सल्फर—वह भी ५ रुपये किलो में।

कहा कुछ नहीं—पालतू बिल्ली की तरह चाय पीने लगा। चाय पीकर आज थाने में जाना था। पुलिस अधीक्षक के नाम प्रार्थना पत्र लिखकर मैं थाने जा पहुंचा।

पुलिस अधीक्षक के सामने वह केस विचित्र जरूर था। लेकिन वे आश्चर्यचकित भी थे। वे मेरा प्रार्थना पत्र देखकर बुदबुदाये—'तो शहर में कोई गिरोह राशन कार्डों की चोरी कर रहा है इन दिनों। पिछले तीन दिनों में एक सौ पन्द्रह शिकायतें आचुकी हैं।' फिर मेरी और बुदबुदाये, 'ठीक है आप जाइये। पुलिस आपके इस मामले की पूरी मुस्तैदी से हैल्प करेगी। हां, आपको किसी पर शक हो तो बताइये।'

एक बार तो इच्छा हुई मकान मालिक का नाम झूठ से बता दूं-बहुत परेशान करता है, जरा-जरा सी बात पर। पर फिर उसके आठ बच्चों का खयाल आ गया।अत: मैं बोला-नहीं जी, मेरा शक किसी पर नहीं है।

घर आया—पत्नी को थाने की रिपोर्टिंग बताई तो बोली-आप भी बेककूफ हैं—मकान मालिक का नाम नहीं बताया तो सामने वाले किरायेदार का नाम बता देते। जो खिड़की में खड़ा रहना भूल जाता। ये तो पुलिस वाले हैं—एक बार जिसको शक में पकड़ा, जबरदस्ती हाँ करवा ही लेते हैं-फिर पैसों की दृष्टि से मुंडते वह अलग है।

मैंने कहा-झूठ बोलना पाप है।

रिश्वत देकर आपसे कोई झूठ बोलने को कहे तब तो आपको पाप नहीं लगता'। मेरी बोलती बन्द होगई। उसने सीधा बार मुझ पर ही कर दिया था। मैं दूसरे कमरे में चला गया।

दूसरे दिन मैं सोकर उठने का उपक्रम कर रहा था कि कोतवाली से एक कान्स्टेबल आगया। उसने बताया कि आपका राशनकार्ड भी मिल गया है और अपराधी भी पकड़ा गया है,मेरी बोछें खिल गई। मैं तत्काल उसके साथ कोतवाली चल दिया।

कोतवाली पहूंचने पर अधीक्षक ने अपने सामने बैठे एक युवक की ओर इशारा करके कहा—आप इन्हें जानते हैं, ये आपके राशन कार्ड के चोर हैं। युवक को देखते ही मेरा कलेजा मुंह को आ गया। मैंने सच को परखने के लिए आंखें कसकर खोलीं, यह तो मेरी पत्नी का भाई था। मैं भौंचक्का सा कभी उसे कभी इसे देख रहा था। पुलिस अधीक्षक महोदय ने अपराधी की ओर मुखातिब होकर कहा-मि. आपकी कोई जमानत देने वाला हो तो उसे बुलाइये-वर्ना कैस के कोर्ट में जाने तक हम आपको हिरासत में रखेंगे। जालसाजी का केस आपके खिलाफ लगाया गया है। उसने निरीह दृष्टि से मेरी ओर देखा। मैंने अधीक्षक से कहा कि क्या मेरी जमानत नहीं चलेगी ?

तुम्हारी जमानत—तुम अपने माल की चोरी करने वाले की ही जमानत दोगे ?

यह सुनकर मैं अपने घर दौड़ा आया। पत्नी को बताया कि अपने राशनकार्ड से १०० ग्राम चीनी लेते हुए तुम्हारा भाई पकड़ा गया है। जाओ तुम कोतवाली से उसे अब जमानत देकर छुड़वाओ। मेरा जाना ठीक नहीं है। वह सारे काम छोड़कर भागी और मैं दफ्तर से छुट्टी लेने के लिए एप्लीकेशन लिखने लगा। ●

बदल गया सीन

दोनों तीरों को आपस में मिलाइये

आज पता नहीं क्या बात हैं गाने आ रहे हैं—

आयेंगे ही गाने गीले गीले

भीगा भीगा है समां ऐसे में हैं तू कहां···

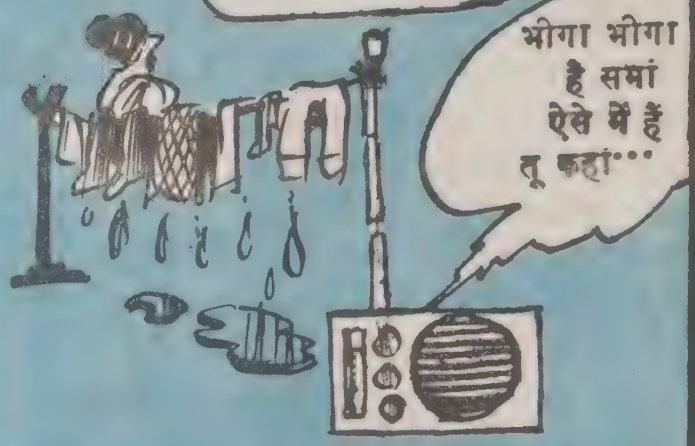

हंसना मना है

एक ग्राहक अपने दर्जी और वकील के संदेश की प्रतिक्षा कर रहा था । उसे कोई व्यक्ति बिना हस्ताक्षर का एक संदेश देकर चला गया—जिसमें लिखा था ।

'सूट तैयार है, ट्रायल सत्तरह तारीख को है ।

बेचारे को पता चलना कठिन हो गया संदेश किसने भेजा है ।

अफसर—'आप विवाहित हैं या अकेले ?'

प्रार्थी—'विवाहित ।'

अफसर—'आपका विवाह कहां हुआ था ?'

प्रार्थी—'मुझे नहीं मालूम'।

अफसर—आपको मालूम नहीं आपका विवाह कहां हुआ था ?

प्रार्थी—'ओह मैंने समझा आपने पूछा क्यों ?

'यह बात सच नहीं है कि मैंने एक लखपति से विवाह किया था, मैंने उसे लखपति बनाया था ।'

'तुम्हारे विवाह करने से पहले वह क्या था ।'

'एक करोड़पति' !

नदी में डूबता एक व्यक्ति मदद के लिए चिल्ला रहा था, 'मुझे तैरना नहीं आता ।'-

'तो क्या हुआ ?' पास में बैठा एक शराबी बोला, 'मुझे प्यानो बजाना नहीं आता, पर मैं इसके लिए चिल्ला तो नहीं रहा ।'

'ममी आप इतनी सुन्दर नहीं हो जितनी हमारी नर्स है ।'

'ऐसा क्यों सोचते हो बेटे ?'

'क्योंकि हम एक घंटे से आपके साथ इस बाग के चक्कर लगा रहे है, परन्तु एक भी पुलिसमैन ने आपका चुम्बन नहीं लिया ?'

हसीनों को तो रोज देता हूं आज मोटी औरत को ही सही ।

अच्छी दी मोटी औरत को लिफ्ट भट्ठा बिठा दिया स्कूटर का

जी चाहता हैं उम्र भर तुम्हारे बालों से

जाले साफ करवाने के लिए बुलाया अब तुम्हारे साथ खेलता रहूं—

क्यों और कैसे

प्र० : क्या मछली से किसी प्रकार का ... बनाया जा सकता है।

उ० : लगता है दस साल भी न पूरे होंगे कि जब शायद मां अपने बच्चों से कहेंगी 'आओ, बच्चो आकर अपनी मछली पीलो'। खाद्य वैज्ञानिकों ने वाशिंगटन में एक ऐसा तरीका विकसित किया है जिससे मछली के वेस्ट को एक अच्छे प्रोटीन युक्त आटे में बदला जा सकता है। उसके विकास करने वालों का कहना है, इस आटे को केक बनाने में अंडों के स्थान पर मय्रोनीज की जगह पुडिंग और ब्रैड में भी अच्छी तरह इस्तेमाल हो सकता है। और इसे पाऊडर दूध के स्थान पर भी प्रयोग में लाया जा सकता है, कुछ खास अवसरों पर इसे फेंटा भी जा सकता है।

अभी जितनी मछली पकड़ी जाती हैं उसका कुछ ही भाग प्रयोग किया जा पाता है बाकी मछली प्रोसेस करने में बेकार हो जाती है। खाद्य वैज्ञानिक जार्ज पिगोट और उसके साथियों को उम्मीद है वे इसे बदलने में सफल हो जायेंगे। उनके मछली के आटे का नाम है फिश प्रोटीन हाईड्रोलाईसेट.(FPH) मछली के उस भाग से बनाया जाता है जो अन्यथा व्यर्थ जाता।हैंजो कि लाखों मीटरिकटन हर वर्ष है।

फिश मील अब जानवरों के भोजन को अच्छा बनाने में प्रयोग में लाया जाता है क्योंकि यह मानव इस्तेमाल के लिए अधिक तेल युक्त और मछली की बू और स्वाद के कारण इस्तेमाल के लायक नहीं है। साथ ही इसकी न्यूट्रीशन शक्ति भी कम है।

FPH के उत्पादन के तरीके से यह कमियां दूर कर दी गई हैं, फिश वेस्ट का एनजाईम बदलाव बहुत हो उपयोगी है। डा० पिगोट को इस खोज का मेक्सिको में उत्पादन आरम्भ हो चुका है।

प्र० : ग्लोवर्म जुगनू या अन्य चमकने वाले कीड़े कैसे चमकते हैं ?

उ० : मादा ग्लोवर्म संसार के सबसे उत्तम बिजली के सिस्टम से सज्जित है—यह बिना परों की एक बीटल कीड़ा है जो रात को अन्य नन्हें कीड़े खाती रेंगती फिरती है—परन्तु उसके पेट के निचले भाग पर एक लेनटेन लगी होती है जिसका प्रयोग वह ऊपर उड़ रहे अपने परों वाले साथी को सिगनल देने के लिए करती है।

इस लेनटेन पर त्वचा की एक पारदर्शी परत होती है जैसे लेम्प के लेन्स में होती है इसके पीछे टिशू की एक तेलयुक्त परत होती है जो एक विशेष केमिकल ऐक्शन से प्रकाश उत्पन्न करता है और होती है एक दूसरी परत

जो प्रतिद्वन्दित करने का काम करती है।

ग्लोवर्म का इस तेज प्रकाश पर पूरा नियंत्रण होता है वह इसे खास-खास समय पर साथी को आकर्षित करने के लिए ही प्रयोग में लाता है—वास्तव में यह लाईट एक सेक्स सैल होता है और नर जुगनू की विशेष बड़ी आंखें इसे पहचानने में तुरन्त सफल होती हैं। प्रकाश उत्पन्न करने की रासायनिक क्रिया को बनाये रखने के लिए इसको बहुत ज्यादा पानी और आक्सीजन की आवश्यकता पड़ती है—कुछ समय के लिए जुगनू के अंडे भी चमकते हैं।

ग्लोवर्म करीब-करीब आधा इंच लम्बे बीटल कीड़े यूरोप के वासी हैं। अन्य भीतरी प्रकाश उत्पन्न करने वाले कीड़ों को फायर-फ्लाई कहते हैं—दोनों नर और मादा फायर-फ्लाई के पर होते हैं ये दोनों ही अपनी प्रकाश लेनटेन से एक दूसरे को सिगनल करते हैं, साथ ही यह प्रकाश लेनटेन का प्रयोग उन चिड़ियों को सावधान करने के लिए भी करते हैं जो रात को कीड़ों का शिकार करती हैं परन्तु इन्हें खाना पसन्द नहीं करती।

चमकने वाले कीड़ों में सबसे प्रसिद्ध हैं कुकूजोस जो ट्रापीकल अमेरिका में पाया जाता है। विशेष अवसरों पर नवयुवतियां इन्हें अपने कपड़ों पर चिपका लेती हैं, जहां यह कीड़े हीरों के समान चमकते हैं—भारत में प्रकाश

युक्त कीड़ों में सबसे जाना माना जुगनू है जो रात को अपनी चमक से सबका मन मोहता है।

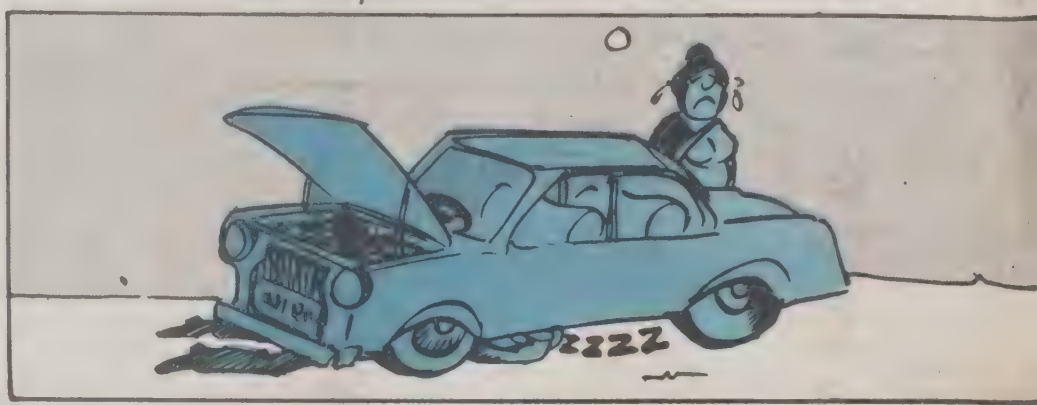

प्र० : हिमस्खलन या अवलांच क्यों होते हैं ?

उ० : हिमस्खलन तब होता है जब पहाड़ों पर एकत्रित बर्फ खिसकने लगती है और फिर गिर जाती है—अवलांच शब्द मिट्टी पत्थर, चट्टान और बर्फ के अचानक पहाड़ से फिसलने के लिए प्रयोग में लाया जाता है पर अधिकतर अवलांच का अर्थ हिमस्खलन ही माना जाता है।

यदि पहाड़ की सतह चिकनी न हो तो खड़ी ढालों पर भी बहुत बड़ी मात्रा में बर्फ एकत्रित हो जाती है। छोटी से छोटी गड़बड़ से भी यह बर्फ फिसलकर हिमस्खलन बन सकती है। पास से गुजरती कोई गाड़ी से पृथ्वी में कम्पन, किसी व्यक्ति या जानवर का उधर घूमना, वृक्ष की शाख का गिरना यहां तक की कोई आवाज तक हजारों टन बर्फ के पहाड़ से फिसलने का कारण बन सकती है।

हिमस्खलन की गति भिन्न-भिन्न होती है परन्तु कुछ अवलांचों की 200 मील प्रति घंटे तक आंकी जा चुकी है। बहुत बड़े हिमस्खलन में पहाड़ के ढाल से बड़ी तेज गड़गड़ाहट के साथ बर्फ नीचे को फिसलती है। राह में आती हर चीज को कुचलती और साथ बहाती हुई।

तीव्र गति से नीचे को गिरती बर्फ के आगे हवा बहुत ही तेज गति से साईडों पर और आगे उड़ाती जाती है इस हवा की गति इतनी अधिक होती है कि यह एक टरनाडो या तूफान का रूप धारण कर लेती है—हिमस्खलन से हुए विनाश में अधिक तबाही बर्फ के गिरने के बजाये इस हवा के तूफान से होती है।

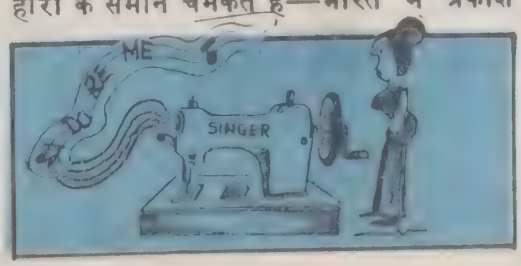

क्यों और कैसे ?
दीवाना पाक्षिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

एड़ी चोटी का जोर

अगर बाल लम्बे हों और चोटी गुंथी हो तो चोटी क्या-क्या गुल खिला सकती है। उसकी कल्पना करने में ऐड़ी रगड़नी पड़ती है। जो हमने किया—नतीजा आपके सामने है।

लम्बी चोटी प्रेमी के लिये सीढ़ियों का रूपधारण कर सकती है।

बच्चे को पीठ पर चोटी की सहायता से आराम से लटकाया जा सकता है। चलते-चलते आप बच्चे को सम्भालने की फिक्र छोड़ फिल्मी कीचड़ मैगजीन पढ़ सकती हैं।

लम्बी चोटी से कुत्ते या बच्चे को लीड किया जा सकता है। भीड़ में भी खोने का डर नहीं रहेगा।

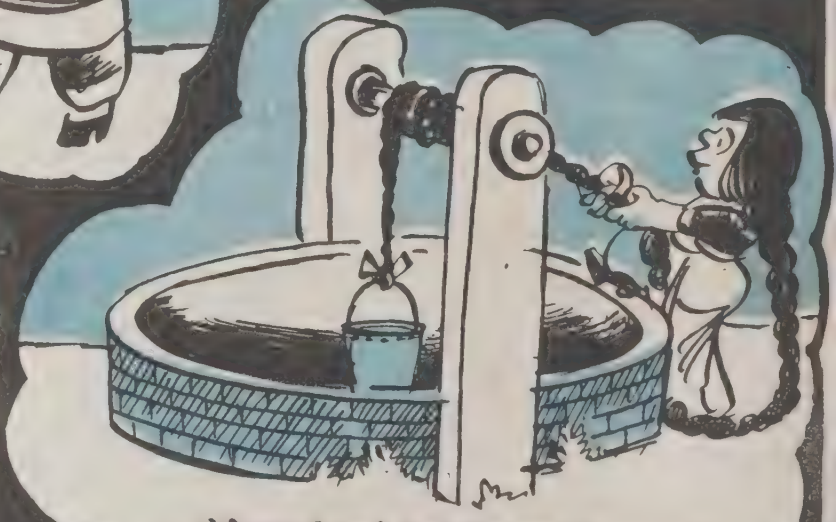

चोटी बहुत ही लम्बी है तो रोज कुआं खोद कर पानी खींचा जा सकता है।

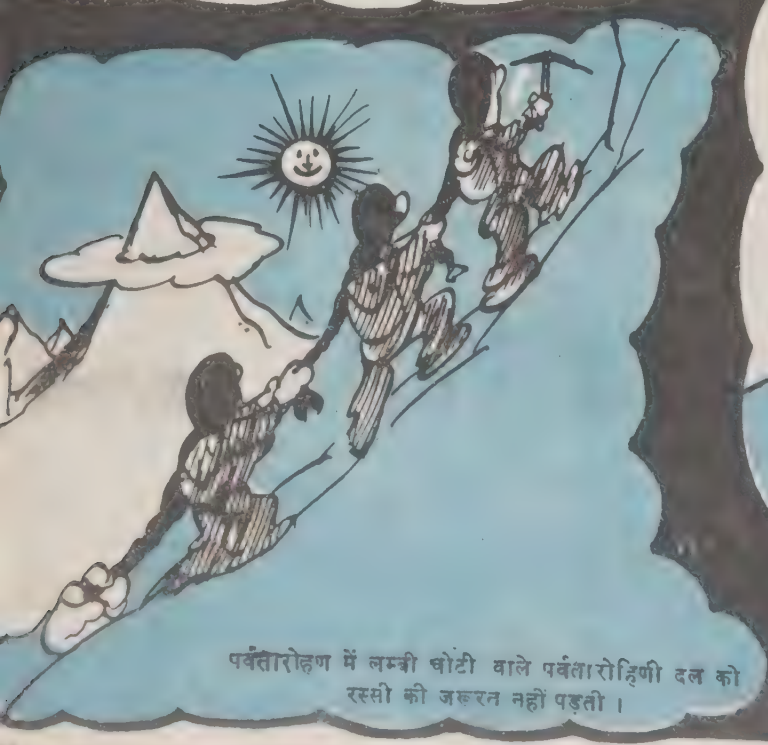

पर्वतारोहण में लम्बी चोटी वाले पर्वतारोहिणी दल को रस्सी की जरूरत नहीं पड़ती।

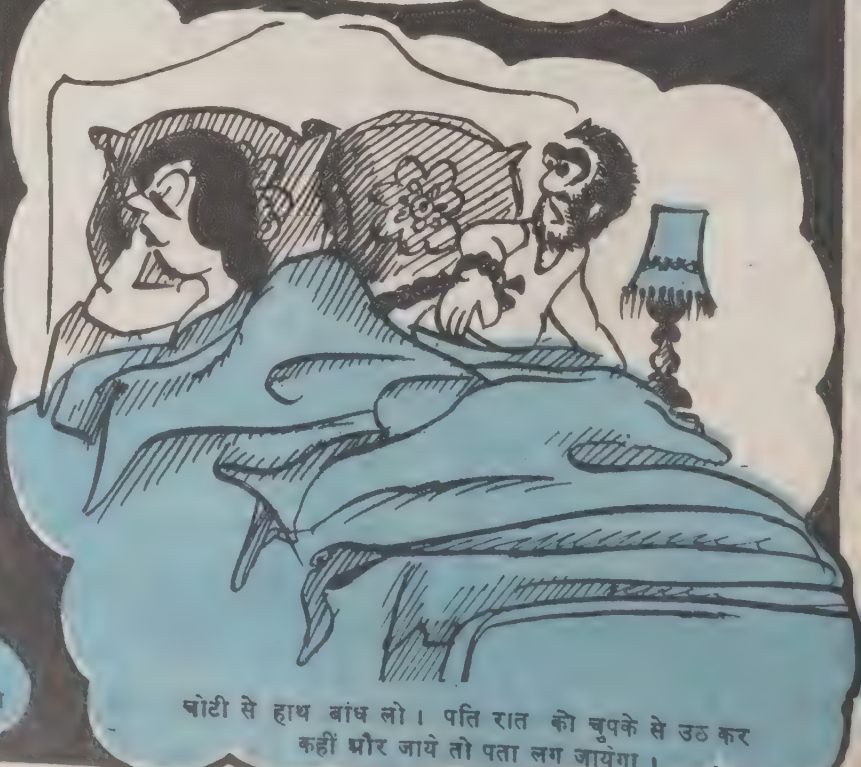

चोटी से हाथ बांध लो। पति रात को चुपके से उठ कर कहीं और जाये तो पता लग जायेगा।

BONG
चोटी के सिरे पर लोहे का गोला बांधने पर चोटी भयानक हथियार बन जाती है।
बीन बजाकर सपेरिन बनने का आनन्द भी चोटी दे सकती है।
नीचे से प्रेमी लव लैटर भेजने का काम पोस्टमैन की बजाय चोटी से ले सकता है।
खुदकुशी करनी पड़ जाये तो अपनो ही चोटी काम में आ सकती है।
गुब्बारे ले लो।
गुब्बारे बेचने का धंधा करना हो तो गुब्बारों के लिए डंडे फंडे की जरूरत नहीं।
चोटी से प्रॉम खींच लो और हाथ फ्री हो गये। स्वैटर बुन लो चलते-चलते।

सिलबिल पिलपिल

रेल्यिम भूत

और दीवार में से भूत पंजा लहराता हुआ प्रकट हुआ और ठहाका मार कर भयानक हंसी हंसा हा हा हा हा हा हा हा···उई मां।

याद्दी तुझे कई बार कहा है कि तू भूत-प्रेतों की कहानियां मत पढ़ा कर, इससे दिल कमजोर होता है।

इसीलिए आजकल यह सोते में बचाओ-बचाओ चिल्लाता रहता है। यह सब मनगढ़न्त होती हैं।

भाई जी, हमारे पुराने शास्त्रों में भी भूत-प्रेतों का वर्णन आता है। कहानियों में भी रोज ही पढ़ते हैं और अपने गाम के लोग-बाग, रिश्तेदारों ने भी देखा है। वह सब झूठ कैसे हो सकता है?

सब दिल का वहम होता है।

इस बार इनके दिमाग में भूत-प्रेतों की समस्या घुस गई है। अब ये भूतों को मार-मार कर चरण सिंह बना देंगे।

हरे भाई तू देहातो गंवारों की बात क्यों करता है? अगर थमारे हमारे जैसे चोथी पास पढ़े-लिखे लोग भी भूत-प्रेत के अंध विश्वास में फंसने लगे तो इस देश का क्या होगा भूत प्रेत का वहम दिल से निकाल दे—

आज हम बीसवीं सदी के वैज्ञानिक युग में रह रहे हैं। आदमी चांद पर उतर चुका है, घर-घर में बिजली और टेलीविजन पहुंच चुका है। विज्ञापन लाल स्याही से अंडर लाइन करके कहता है कि भूत-प्रेत कुछ नहीं होता, केवल अंधविश्वास में जकड़े बीमार दिमागों द्वारा उत्पन्न छलावा है। हम जब नरभक्षी चीते का शिकार करने कुमाऊं गये थे तो वहां फॉरेस्ट रेस्ट हाऊस के चौकीदार चंदन सिंह ने भी हमें बताया था कि जिम कार्पेट साहब जिन्होंने चालीस नरभक्षी चीते मारे थे कहा करते थे कि भूत-प्रेत कुछ नहीं होता सब बकवास है।

तालियां-तालियां

अच्छा मुझे पहले अब तक किसी ने क्यों नहीं बताया कि मशहूर हंग्रेज जिम कार्पेट साहब भूत-प्रेत को नहीं मानते थे···

भई, इतना बड़ा हंग्रेज जिसने चालीस चीते मार रखे हैं और जिसका कद पांच फुट ग्यारह इंच हो, वह कभी गलत बात कह सकता है? कभी नहीं।

जिमकार्पेट साहब ने चौथी जमात भी तो हिंगलैंड के स्कूल में पास करी थी। वहां का चौथी जमात पास और यहां का बी. ए. बी. टी. बराबर होता है।

मैंने अपनी आधी जिन्दगी भूत प्रेतों में विश्वास करने में, गुजार दी, व्यर्थ नष्ट किया। हे जिम कार्पेट साहब आपकी आत्मा भूत बन कर कुमाऊं के जंगलों में भटक रही हो और मेरी बात सुन रही हो तो मुझे माफ कर देना।

आज मेरे दिमाग से भूतों का साया उतर गया। दिमाग में से अंध विश्वास के जाले हट गए। पता लग गया कि भूत प्रेत कुछ नहीं होते। वह तो दिमाग का वहम है। अब मैं रात को भी गाना गाता हुआ सुनसान सड़क पर घूम सकता हूं, नाच सकता हूं।
आज तक मैं भूतों के डर के मारे रात को प्यास लगे तो पानी पीने तक उठके नहीं जाता था। मुझे लगता था मेरी चारपाई के पास इकला स्टूल पर बैठा कोका कोला पी रहा है। कई बार तो ऐसा हुआ…होर मैगजीन पढ़ने वालों को न बताना खटका सुन कर डर के मारे मैंने हू हू कर दित्ता :- 'ह' को 'स' समझ कर पढ़ना।
हाँ हाँ हाँ…मैं एक घड़ीसाज का भूत हूं, आज से मुझे लोगों को डराने का लायसेंस मिल गया है…आज मेरी दिहाड़ी का पहला दिन है।
और मैं एक ट्रैफिक पुलिसमैन का भूत हूं, मैंने भी आज से लोगों को डराने का फैसला किया है जो इधर से गुजरेगा उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम कर देंगे।
हा हा हा हा…ई यूऽऽऽ…शा शा शा…ह ह।
?
ऐह हंस क्यों रिया है भाई तू ? किस खेत की मूली है तू ? कोई जोक-वोक याद आ गया हो तो मुझे भी सुना दे।
बेवकूफ अच्छी तरह आंखें खोल कर देख, मैं भूत हूं—अब समझ गया—हा हा हा हा—मैं तुझे कच्चा ही खा जाऊंगा हा हा हा।
तू भूत है ? तू मुझे मूर्ख नहीं बना सकता, मुझे पता है भूत प्रेत कुछ नहीं होते, दिल का वहम होता है। मैंने चौथी जमात फर्स्ट डिवीजन में पास करी है—कल तुझे सर्टिफिकेट दिखाऊंगा।
तुझे भूत-प्रेतों पर विश्वास नहीं है ? मूर्खानन्द विश्वास तो तेरे बाप को भी आयेगा—मैं तेरे सामने खड़ा हूं। मैं एक घड़ीसाज का भूत हूं। देखता नहीं मेरा शरीर कैसा अलौकिक है। मेरा भूतहा शरीर रेडियम डायल की तरह नीला चमक रहा है--
अजीब उल्लू का चर्खा है।
तू अगर पीले रंग से भी चमकेगा तो भी मुझे यकीन नहीं आएगा। कल तक तू मुझे मिला होता तो मैं विश्वास कर लेता—आज नहीं।
आज मैं अंध विश्वास की अंधेरी घाटियां छोड़ चुका हूं। तेरे-तेरे जैसे १०० भूत भी मुझे विश्वास नहीं दिला सकते।

मैं तेरे सामने खड़ा तुझसे बात कर रहा हूं और तू मेरे अस्तित्व से इन्कार कर रहा है? मूर्ख···बेवकूफ

भूत के बच्चे तू हमको गालां कढ रिया है। जबर-दस्ती मान न मान मैं तेरा मेहमान बन रिया है। मैंने तुझे बता दिया मुझे भूत-प्रेतों में विश्वास नहीं है—तू कोई होर गल कर।

ऐह!

तो फिर मैं जो तेरे सामने खड़ा हूं, क्या हूं?

इस तरह प्रेमनाल गल करे तो वखरी बात है। तू कइन्दा है तू भूत। ऐ प्राजी भूत दिल दा बहम हुंदा ऐ। तुसी साड़े दिल दे बहम हो। ओये पागला जे तां अपने घर दी गल्ल होई न—क्यों? मैं कोई गलत गल किती है।

पहले दिन ही हमें कैसे सूजी से पाला पड़ा। मानता ही नहीं बात।

तुम एक तरफ हट जाओ—मैं ट्राई करता हूं।

ओये इधर देख···तेरे बुरे दिन आ गए हैं। तूने रेडियम वाले भूत को नहीं माना तो कोई बात नहीं—मैं एक ट्रैफिक पुलिस मैन का पीला, हरा और लाल भूत हूं। मैं तुझ पर चढ़ जाऊंगा और तुझे एक सौ पचपन डिग्री का बुखार हो जाएगा।

हा हा हा हा।

मेरे सिर पर तो हर कोई चढ़ता है तू भी आके चढ जाना लेकिन वहां भीड़ बड़ी होगी।

चंगा भापा जी अस्सी चलिये, टायम काफी हो गया है। तुम दोनों मिल कर किसी और को बेवकूफ बनाना। कल भी यहीं मिलोगे तो मैं तुमको अपना चौथी जमात पास का सर्टिफिकेट दिखा दूंगा, तब शायद तुमको यकीन आयेगा कि मुझे मूर्ख बनाना आसान नहीं है।

भाई लाल पीले हरे भूत, यह क्या जमाना आ गया है। लोग भूतों को देख कर हंस कर चल देते हैं। याद है वह जमाना जब भूतों को देख लोगों की धोती खुल जाती थी। शरीर पुरानी टैक्सी की तरह थरथराने लगता था।

आजकल कोई किसी पर विश्वास नहीं करता। यहां तक कि लोगों ने हम भूतों पर भी विश्वास करना छोड़ दिया।

अब सिलबिल को मूर्ख बनाना आसान नहीं रहा। भूत अगर फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट से अपना आइडेंटिटी कार्ड ऐटेस्ट करवा कर लाकर दिखाये तो भी नहीं मानूंगा।

हौर, हौर···भाई जी मने वह कहने लग्या कि मैं भूत हूं। देख मेरा जिस्म रेडियम की तरह चमक रहा है। दूसरा कहने लगा मैं लाल पीला हरा भूत हूं। उसकी आंखें सचमुच ट्रैफिक लाइट की तरह जगमगा रही थीं। रेडियम भूत अजीब नीली रोशनी से चमक रहा था···लेकिन मैं नहीं मानया तो नहीं मानया।

शाबाश छोटे भाई, तने अपनी चौथी जमात पास डिग्री की इज्जत रख ली।

पृष्ठ २२ से आगे

तभी खड्ड में से आवाज़ आती है
ऊपर कौन ।।।।। ओं--ही----है ?
ओं----ही हम-ही जवाबी हमला कर रहे हैं ।
इतनी देर में उन के पीछे से आवाज़ आती है -
हाथ ऊपर करके बारी-बारी से झाड़ी के बीचोंबीच इस खड्ड में उतर जाओ नहीं तो गोलियों से भून दिये जाओगे ।
ज्यों ही सभी खड्ड में उतरते हैं तो देखते हैं सामने एक दरवाज़ा है जो इनके पहुँचते ही अपने आप खुल जाता है, वो हाल में पहुँच कर देखते हैं कि एक नकाब पोश कुर्सी पर बैठा है, दरवाजा खुलते वक्त मिस कटर वहाँ से खिसक जाती है। नकाब पोश उन पाँचों से कहता है -
तुम सब अपना-अपना परिचय दो ।
अरे! ये तो जनाना आवाज़ है और ये आवाज़ जानी-पहचानी लगती है!
मैं हूँ जासूस नम्बर एक ।
जासूस नम्बर एक को 101 जूते मारे जायें ।
मैं जासूस नम्बर दो हूँ ।
इसको 102 जूते मारे जायें ।
मैं जासूस नम्बर तीन हूँ ।
इस जासूस को 103 जूते मारे जायें ।
मैं जासूस नम्बर चार हूँ ।
इस जासूस को 104 जूते मारे जायें ।

मैं जासूस ज़ीरो हूँ।
तो इस एक बहादुर को छोड़ दो, मत मारो।
इन सब को उसी उमा लड़की के पास ही बाँध दो जिसे ये ढूंढते हुए यहाँ तक आये थे।
आप ये बताइये हम आपके लिए क्या करें जिससे आप हमें छोड़ दें।
यदि उमा की माँ हमें पचास लाख रूपये दे दे और जो हीरे उमा के बाप ने लॉकर में रखे हैं उन्हें लाकर दे दो, तो हम तुम्हें और उमा को छोड़ देंगे।
फिर तो आप हमें छोड़ दें हम इसकी माँ से आपको हीरे और नकदी दिलवा देते हैं. लेकिन उमा बच जाये।
मगर इसकी माँ देना चाहे तब भी नहीं दे सकती क्योंकि जब तक उमा बैंक के कागज़ों पर दस्तखत करके अथौरिटि लैटर माँ के नाम न कर दे तब तक इसकी माँ बैंक से हीरे और रूपये नहीं निकलवा सकती।
अरे हम उमा को अभी समझा देते हैं और उससे दस्तखत करवा देते हैं। आपका काम भी बन जायेगा और उमा की जान भी बच जायेगी।
यह लीजिये कागज़ात और उमा देवी से दस्तखत करवा दें।
उमा देवी आप इन कागज़ों पर दस्तखत कर दें उस दौलत का क्या फायदा जिससे जान जाने का खतरा हो।
उमा देवी आपकी माँ का तो रो-रो कर बुरा हाल है।
मेरी माँ। मेरी माँ को तो मरे कई साल हो गये हैं। मेरे को तो उसकी शक्ल भी याद नहीं, मुझे मालूम नहीं था कि मेरी सौतेली माँ मुझसे इतना प्यार करती है कि मुझे ढूंढने के लिये छः जासूस लगाये हैं। लाओ मैं खुशी से साईन कर देती हूँ।

उमा जैसे ही दस्तख़त करने लगती है तो डा॰ बोलोराम अचानक बीच में बोल पड़ता है –
ठहरो! अब के समझ में आया क्या राज़ है। ये दस्तख़त करवाने के बाद हमें गोली से मरवा देगी क्योंकि इस नकाबपोश के अंदर और कोई नहीं स्वयं उमा की माँ आशा भटनागर हैं।
ये सुनकर पीपू फुर्ती से नकाबपोश का नकाब उठा देता है तो सचमुच उसके अंदर से उमा की माँ निकलती है।
बहन जी हमने तो रात का डिनर आपके यहाँ खाने आना था और आप यहाँ पर हैं।
अरे ये खाना पकाकर हमारे लिये यहीं लाई है।
तो बहनजी हम कहाँ बैठें खाने के लिये, बड़ी जोरों से भूख लग रही है।
फिक्र मत करो मैं तुम्हें ऐसी गोली खिलाती हूँ जिसे खाने के बाद तुम्हें उम्र भर भूख ही नहीं लगेगी।
इतनी देर में सारे अपने- अपने एटम बम, यानी की लाल मिर्च के पुड़े, सारे कमरे में फेंकने चालू कर देते हैं। रगड़ू तो आशा के मुहँ पर एक एटमबम का पुड़ा फेंकता हैं जिससे वह चिल्लाती है -
हाय, मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। ये क्या हो गया है! हाय! मैं मर गई।
अऽऽआऽऽ आँछी
सारे बदमाश छींकें मारते हैं और आँखें मलते हैं। माघू, पीपू, डा॰ बोलोराम, नासपीटा और रगड़ू भी छींकते जाते हैं और उन सभी सशस्त्रधारियों के हथियार भी छीन लेते हैं।
अऽऽआ आँछी
अ-अ-आऽऽ आँछीऽऽऽ
अऽऽऽ आऽऽऽ आऽऽआँछी
अऽऽऽ आ-- आऽऽ आँछीऽऽ
अऽऽऽ आ ऽऽऽ आँछीऽऽऽ

दूसरी ओर मिस कटर सब की नजर से बचते- बचाते आगे बढ़ती जाती है।

तभी एक खाली कमरे में उसकी नज़र टेलीफोन पर पड़ती है तो मिस कटर पुलिस को फोन पर खड्डे में अड्डे का सारा रहस्य समझा देती है।

कुछ ही देर में पुलिस अपनी फोर्स के साथ आ जाती है।

तुम बाईं ओर जाओ घेरा मजबूत रखो और तुम दाईं ओर जाओ मैं भीतर जा रहा हूँ ध्यान रहे कोई भागने न पाये।

पुलिस आशा भटनागर तथा उसके सभी साथियों को गिरफ्तार कर लेती है साथ ही उनसे स्मगलिंग का बहुत सामान बरामद होता है।

तुम सबने जासूसी का काम खोल कर देश का बहुत भला किया है, हमने जो स्मगलिंग का सामान बरामद किया उनमें से दस प्रतिशत के हिसाब से सरकार आपको दो लाख रूपये का चैक देती है। भारतवासियों को आप जैसे देश भक्त जासूसों पर बहुत गर्व और मान है।

दो लाख के चैक से हमारी कड़की दूर हो गई है अब हम आगे से भी ज्यादा मेहनत लगन और निडर होकर काम किया करेंगे।

जब तुम्हारे साथ मेरे जैसा जवाँ मर्द हो तो तुम्हें डरने की क्या आवश्यकता।

हम पागल हैं जो काम करेंगे जब तक दो लाख रूपये खत्म नहीं होते।

जब तक रूपये खत्म नहीं होते हमारी डिटेक्टिव एजेंसी बंद रहेगी।

समाप्त

खेल खेल में

दूसरा टैस्ट
कपिल देव ने प्रतिष्ठा बढ़ायी

भारतीय टीम ने जब वेस्ट इंडीज का दौरा आरम्भ किया था उसके तबके और अबके नोबल में जमीन-आसमान का फर्क हो गया है। उस समय पाकिस्तान में निराशा जनक प्रदर्शन से भारतीय आत्मविश्वास डगमगा गया था। हर कोई कह रहा था कि यह टीम एक इमरान का मुकाबला नहीं कर सकी वह करेबियन-चौकड़ी के समक्ष कहां टिकेगी ?

पहले टैस्ट की पराजय तक यह स्थिति बनी रही। इसके बाद सभी टेस्ट-खिलाड़ी फार्म में आ गए। इतनी फार्म में आ गए कि शास्त्री व मदन लाल के लिए एकादश में स्थान नहीं मिल रहा। दूसरे टैस्ट का 469 का स्कोर तथा सीमित ओवर मैच में विजय ने भारतीय क्रिकेट टीम के प्रति उत्साह वर्धक भाव उत्पन्न कर दिया है।

भारत और मेजवान वेस्ट इंडीज टीम के बीच वर्तमान श्रृंखला का दूसरा टैस्ट (पोर्ट आफ स्पेन) भारत के लिए महत्व पूर्ण था। इसी मैदान पर भारत वेस्ट इंडीज पर दो बार विजय प्राप्त कर चुका था। 1971 में तथा 1976 की विजयों की खुशनुमा यादों के सहारे भारत को यह टैस्ट जीतकर पिछले टैस्ट में मिली अचानक पराजय का बदला उतारना था।

पर टैस्ट आरम्भ होते ही भारतीय टीम के कई झटके लगे। गायकवाड़ पहले ओवर की तीसरी गेंद पर रन-आउट हो गया तथा दूसरे ओवर की पहली गेंद पर गावस्कर विकेट के पीछे लपका गया। वेंगसरकर सात रन बनाकर चलता बना तो यशपाल चोट खाकर पैवेलियन लौट आया। मोहिन्दर (58) तथा रवि शास्त्री (42) ने भारत की ढहती पारी को कुछ सम्भाला ही था कि लंच के बाद 'तू चल मैं आया' का सिलसिला शुरू हो गया। पूरी टीम मात्र 175 रन पर आउट हो गई।

वेस्ट इंडीज की शुरूआत और भी सनसनीखेज रही। एक रन पर तीन विकेट गिर गए। बलविन्दर संधू ने दोनों सलामी बल्लेबाजों को शून्य पर चलता कर दिया और कप्तान कपिल ने रिचर्ड्स को विकेट के पीछे लपकवा दिया। अपने 50 वर्ष के विकेट-इतिहास में पहली बार प्रथम तीन बल्लेबाजों को इतना सस्ते में आउट होता देख मेजबान-दर्शक अचंभित रह गए।

अब आई बारी दो खब्बूओं की लैरी गेम्स एवं क्लाइव लायड ने न केवल टीम को संकट से उबारा बल्कि उसे सुदृढ़ स्थिति में पहुंचा कर दम लिया। उनकी 237 रनों की भागेदारी ने भारत की तमाम आशाओं पर पानी फेर दिया। 38 वर्षीय लायड का यह 15 वां शतक था जबकि गेम्स का पांचवा। अपनी होम-पिच पर गेम्स का यह प्रथम टैस्ट-शतक था।

वे. इंडीज की प्रथम पारी की समाप्ति के पूर्व कपिल ने अपने 200 टैस्ट-विकेट पूरे कर लिए। उसका 200 वां शिकार एंडी राबर्ट्स था। (विस्तृत विवरण अलग से देखें)

भारत की दूसरी पारी में गावस्कर का खेल आशा के विपरीत निराशाजनक रहा। केवल 32 रन बनाने में उसके दो बार कैच छूटे, दो बार नो-बाल पर कैच पकड़े गए और मार्शल की गेंद पर तो वह घबराया लगता था। कुछ लोगों को यह भ्रम भी हुआ कि गावस्कर तथा कप्तान कपिल के बीच कुछ मन-मुटाव चल रहा है जिसके परिणाम-स्वरूप लिटिल-मास्टर इस नौसिखिया 'निम्नस्तर' पर उतर आया है।

पर वास्तविकता कुछ और थी। उसकी एक उंगली में चोट लगी हुई थी जिसके फल-स्वरूप वह बल्ले को अपेक्षित मजबूती से ग्रिप नहीं कर पा रहा था। गावस्कर को यह चोट वेस्ट इंडीज के बल्लेबाज गोम्स का वेंकट की गेंद पर कैच लेते समय लग गई थी।

चायकाल तक भारत छह विकेट के पतन पर 332 रन बना चुका था। दूसरे शब्दों में भारत 113 रन आगे था और केवल चार विकेट गिरने बाकी थे। ऐसी परिस्थिति में प्रथम टैस्ट की याद आना स्वभाविक था जिसमें भारत अचानक आउट होकर टैस्ट हार गया था। पर क्रिकेट के इतिहास को दोहराए जाने से रोकने का दायित्व कपिल ने अपने हरियानवी कंधों पर ले लिया था। उसने इंडीज के सभी गेंदबाजों की धुनाई की। तीन छक्कों एवं 13 चौकों की मदद से कपिल ने अपना तीसरा शतक पूरा किया।

भारतीय दल का हीरो मोहिन्दर अमरनाथ रहा जिसने प्रथम पारी के अर्ध-शतक के बाद दूसरी पारी में शतक (117 रन) बनाकर दोनों पारियों में सर्वोच्च स्कोर बनाने का गौरव पाया। उसकी साहसिक व निर्दोष बल्लेबाजी के अभाव में भारत यह टैस्ट हार भी सकता था।

भारत की दूसरी पारी का स्कोर सात विकेट पर 469 एक नया रिकार्ड है। इससे पूर्व वेस्ट इंडीज में भारतीय टीम का अधिकतम

कोर 444 (सबीना पार्क-1953) रन था। दिलचस्प तथ्य तो यह है कि इस गगनचुम्बी स्कोर के पूर्व भारतीय टीम पिछली तीन पारियों में 251, 174 व 175 की अल्परन-संख्या पर आउट हो गई थी।

मोहिन्दर व कपिल की बल्लेबाजी ने यह भी सिद्ध कर दिया कि वेस्ट इंडीज के आक्रमण की धार उतनी पैनी नहीं है जितनी कागज पर नजर आती है। सही तकनीक व साहस के साथ उसे ठोका व धुना जा सकता है।

वर्षा के रंग, भारतीय टीम के संग

विंडवार्ड पर विजय पाकर भारतीय टीम गुयाना के विरुद्ध चार दिवसीय मैच खेलने जार्जटाउन पहुंची जहां काफी समय से सूखे का दौर चल रहा था। भ्रमणकारियों के साथ ही इन्द्र देवता भी पहुंच गए और फिर इतनी भारी वर्षा हुई कि मैदान से पानी की निकासी भी एक समस्या बन गई। हैलीकोप्टर की मदद से पिच को सुखाया गया।

वर्षा के कारण ढाई दिन का खेल नष्ट हो गया। बाकी समय में भारतीय बल्लेबाजों ने अभ्यास करना उचित समझा और मोहिन्दर ने शतकीय आक्रामक पारी खेल कर भारतीय खेल में अपनी लगातार सफलता का सिक्का जमा लिया। अंतिम दिन फिर वर्षा हो जाने से मैच अर्थ-हीन हो गया।

एक दिवसीय मैच : भारत की अदभुत विजय

सीमित ओवरों की प्रतियोगिताओं में वेस्ट इंडीज को सर्वश्रेष्ठ तथा भारत को सबसे फिसड्डी टीम माना जाता है। पर 30 मार्च को दूसरे अंतर्राष्ट्रीय मैच में मेजबान टीम को 27रन से पराजित कर भारत ने तहलका मचा दिया। मैनेजर हनुमंत सिंह को अपने 44 वें जन्मदिवस पर इससे बेहतर 'उपहार' क्या हो सकता था ?

भारत ने 47 ओवरों में पांच विकेट खोकर 281 रन बनाए जो नया विश्व-रिकार्ड है। इससे पूर्व आस्ट्रेलिया ने 275-76 विश्वकप में 60 ओवरों में 275 रन बनाए थे। भारत के इस उच्च स्कोर का श्रेय गावस्कर के धुंआंधार 90 (रन-आउट) तथा कपिल के आक्रामक 72 रन को मिलता है।

रवि शास्त्री की वामहस्त स्पिन गेंदों को वेस्ट इंडीज के नामी-गरामी बल्लेबाज पीटने में असफल रहे और निर्धारित 47 ओवरों में नौ विकेटों के पतन पर 255 रन बनाकर पराजय स्वीकारने को बाध्य हुए। शास्त्री ने बैंकस, गोम्स व मार्शल की विकेट लीं जबकि मदन लाल ने रिचर्ड्स व लायड के महत्वपूर्ण विकेट उखाड़े।

अन्य मैचों में विजय

दो टैस्ट मैचों के बीच में खेले जाने वाले अन्य मैच भ्रमणकारी टीम के लिए उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं जितने कि मेजबान टीम के लिए उपयोगी। इन मैचों से मेजबान देश को स्थानीय टीम के खिलाड़ियों का विदेशी टीम के विरुद्ध प्रदर्शन जांचने तथा आगामी टैस्ट/शृंखलाओं के लिए खिलाड़ी ढूंढने की सुविधा मिलती है। भ्रमणकारी दल के प्रमुख सदस्यों को आराम तथा 'रिजर्व' खिलाड़ियों को अपना दावा पेश करने का मौका मिलता है।

दूसरे टैस्ट में 'फाइट-बैक' की सफ से ओतप्रोत भारतीय टीम ग्रेनाडा में विंड द्वीप समूह के विरुद्ध बुलंद हौंसलों के उतरी। विंडवार्ड की टीम में एक भी खिलाड़ी नहीं था और वह गृह-क्रिकेट में विजेता रही थी।

विंडवार्ड को कमजोर टीम समझ भारत ने अपने प्रथम तीन बल्लेबाजों आराम देने का निर्णय किया और यह ग मूल्यांकन महंगा सिद्ध हुआ जबकि भारत प्र पारी में केवल 182 रन पर निबट गय विंडवार्ड द्वीप ने 217 बनाए।

भारत की दूसरी पारी में भी बुरी शुरुआ हुई पर रवि शास्त्री को धैर्यपूर्ण 73 रनों बदौलत 287 तक पहुंच गया। शास्त्री की सि गेंदबाजी के आगे विंडवार्ड के अनुभवही बल्लेबाज ठहर न सके और मात्र 152 रन आउट होकर भारत को 129 रनों की शा दार विजय दी। वर्तमान दौरे में भारत यह दूसरी विजय थी।

कपिल के दो सौ विकेट

वेस्ट इंडीज के विरुद्ध वर्तमान शृंखला के प्रथम टैस्ट में 2,000 रन पूरे करने के बाद कपिल देव ने दूसरे टैस्ट में अपने 200 विकेट भी पूरे कर लिए।

'2,000 टैस्ट रन एवं 200 टैस्ट विकेट का डबल प्राप्त करने वाले वह पहले भारतीय तथा विश्व के चौथे खिलाड़ी हैं। इंगलैंड के बाथम ने यह दोहरी सफलता 42 वें टैस्ट में पायी थी जबकि कपिल ने 50 टैस्ट में आस्ट्रेलिया के रिची बेनो ने 60 वें तथा इंडी के गैरी सोबर्स ने 80 वें टैस्ट में यह कीर्तिमा स्थापित किया था।

परन्तु आयु के हिसाब से कपिल ने सबक मात दे दी है। उसने सबसे कम उम्र में य सम्मान प्राप्त किया है। 15 मार्च 198 (जिस दिन उसने 200 वीं विकेट ली) क उसकी आयु 24 वर्ष एवं 67 दिन थी। बाकी तीन आलराउंडर्स की आयु इस प्रकार थी :—

नाम	वर्ष	दिन	तिथि-वर्ष
इयान बाथम	26	6	1-12-1981
रिची बेनो	33	60	6-12-1983
गैरी सोबर्स	34	227	3-4-1971

तीसरे टैस्ट की समाप्ति तक इन चारों खिलाड़ियों का टैस्ट विवरण इस प्रकार है :—

नाम	टैस्ट	सर्वाधिक रन	औसत	शतक	अर्धशतक	विकेट्स	सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन
सोबर्स	93	365	8032	57.78	26	30	235	6/73
बेनो	63	122	2201	24.45	3	9	248	7/72
बाथम	59	208	3266	36.69	11	13	267	8/34
कपिल	51	126	2129	32.26	3	11	201	8/85

दीवाना कार्ड मोड़कर देखिये

दोनों तीरों को आपस में मिलाइये

आज भारत की नारी जाति को कई समस्यायें खाए जा रही हैं। दहेज की विकट समस्या है, समाज में नारी को नीचा समझने की प्रवृति का मसला है। नारी की हर मजबूरी का फायदा उठाने और उसके शोषण का मामला है। नारी शैक्षिक और आर्थिक रूप से पुरुष पर निर्भर होने से उत्पन्न स्थिति का शिकार होने की समस्या है। इनके इलावा एक और सबसे बड़ी समस्या जो नारियों को खा-खाकर पतला कर रही है, वह पृष्ठ मोड़कर देखें—

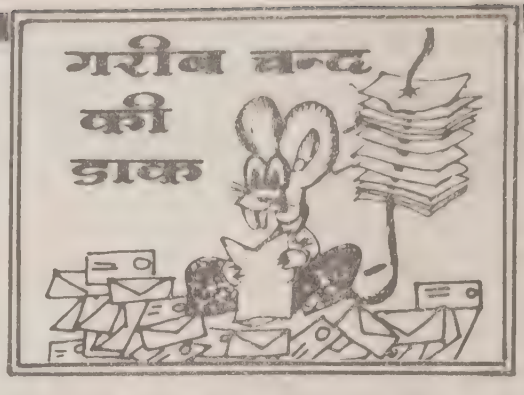

गुरप्रीत सिंह भीता, नई दिल्ली : गरीबचन्द जी, प्यार का मौसम कब आता है ।

उ० : जब नाक हवा में कस्तूरी की सी गंध पकड़ने लगती है ।

प्र० : शादी के बाद भी आदमी 'वो' के पीछे क्यों भागता है ?

उ० : घर की रोटी खाने के बाद बाहर की 'वो' चाट खाने को दिल मचलता ही है ।

श्याम गगवानी, अकोला : गरीब चन्द जी, इन्सानी जिस्म के लिए जीवन की सबसे आवश्यक वस्तु क्या होती है ?

उ० : हवा, पानी, भोजन और…और…और वो—

मधुकर नीलकंठराव चुटे, देवपुर धुलिया : गरीबचन्द जी, सब्र का फल मीठा होता तो मेहनत का फल .

उ० : खट्टा-मीठा होता है, खटाई मेहनत के पसीने के कारण आती है ।

सुखविन्दर जौड़ा, कृष्णा पार्क : गरीब चन्द जी, प्रेमिका खुश कब होती है ?

उ० : जब प्रेमी प्रेमिका के कुत्ते के साथ वफादारी का कम्पटीशन करने लगता है ।

प्र० : बेवफा दोस्त कब काम आता ?

उ० : जब बीबी से तलाक होता हो । दोस्त की बेवफाई अदालत में बीबी के विरुद्ध इल्जाम लगाने के काम आती है ।

रघुबीर सिंह साही, रघुबीर नगर : गरीब चन्द जी,प्यार करना पूजा के समान है तो शादी करना ?

उ० : पूजा का प्रसाद खाने के समान है । सारा प्रसाद खुद ही खाना पड़ता है, चाहे जुलाब लेना पड़े।

अशोक जौहर 'सांवरिया' देहरादून : गरीब चंद जी,सरकारी नौकरी पेशा व्यक्तियों को सरकार 55 साल के बाद रिटायर कर देती है । मगर जितने भी नेताओं ने देश की बागडोर संभाली है अधिकतर 55 से ऊपर है। ऐसा भेदभाव क्यों ?

उ० : क्योंकि नेताओं का काम देश का भट्टा बिठाना है । 55 वर्ष के अनुभव के बाद नेता देश का भट्टा जल्दी बिठा सकता है इसीलिए रिटायर नहीं होता ।

प्र० : काश ! मैं भी देश का नेता होता, लोग मेरे नाम से वाकिफ होते,मुझे ऐसा कौन सा नेक नाम करना चाहिए ताकि मुझे लोग घर बैठे ही जान जायें ।

गरीब चन्द की डाक

उ० : वह नेक काम तो आप कर ही रहे हैं यानि पत्र-पत्रिकाओं को पत्र लिखना और विविधभारती में फरमाईश भेजना ।

प्र० : गरीब चन्द जी, मुझे कौन सा नेक काम करना चाहिए ताकि लोग मुझे कुछ समझने लगें ।

उ० : अपना नाम बदल कर 'कुछ' रख लीजिए ।

सुखविन्दर सिंह 'जौड़ा', कृष्णा पार्क : आपकी ऐनक का नम्बर क्या है ?

उ० : मेरी ऐनक का नम्बर रोज बदलता रहता है क्योंकि नजरें बदलता ही रहता हूं ।

विजेन्द्र शर्मा, तुगलकाबाद : गरीब चन्द जी, वर्षा हो रही हो तो छतरी ओढ़ लेते हैं, अगर किसी लड़की के सैंडल बरसें तो क्या ओढ़ें ?

उ० : कुछ भी ओढ़ लो सैंडल पड़ने पर नंगे तो हो ही गये ।

राम कुमार परवाना, दर्शन नगर (फैजाबाद) : गरीब चन्द जी, लड़कियां चुस्त कपड़े पहनने पर और बाथिंग (नहाने वाले) सूक्ष्म कपड़े पहने हुए बड़ी आकर्षक क्यों दिखाई पड़ती हैं ।

उ० : मियां परवाना, जो चीज आप सपने में देखते थे वह ...... रूप में नजर जो आने लगी ।

सुरिन्द्र खुराना, सिरसा : गरीबचन्द जी मैंने आप को इतने पत्र लिखे, आपने किसी का जवाब नहीं दिया ? क्या आपको मेरा नाम अच्छा नहीं लगा ? या मेरा आपको पत्र लिखना अच्छा नहीं लगा ?

उ० : आपका नाम भी अच्छा लगा और लिखना भी लेकिन आपने कुछ पूछा ही नहीं ।

मधुकर निलकंठ राव चुटे, धुलिया : गरीब चन्द जी रोशनी और औरत में क्या अंतर है ?

उ० : रोशनी अंधेरे को भगाती है और औरत अंधेरे का स्वागत करती है ।

रवि भाटिया, शंकर रोड : इस देश में दहेज प्रथा कब खत्म होगी ?

उ० : जब दहेज लेना हर व्यक्ति का नागरिक कर्तव्य घोषित किया जाये । यहां कर्तव्य से लोग दूर भागते हैं ।

गोपाल दत्त पन्त, टकोली (उ. प्र.) : गरीब चन्द जी, माना आप D.T.C. में यात्रा कर रहे है । उसी बस में एक जेबकतरा किसी सज्जन की जेब काट रहा है । आप स्वयं जेबकतरे को देख रहे हो कि जेबकतरा सज्जन की जेब काट रहा है । यदि आप उस व्यक्ति से कहते हैं कि यह जेबकतरा आपकी जेब काट रहा है । तो जेबकतरा आपको मारने की धमकी दिखा कर चाकू दिखाता है । अगर आप किसी से कुछ नहीं कहते तो सज्जन की जेब काटकर जेबकतरा फरार हो जायेगा । गरीब चन्द जी आप बात का जवाब दीजिए कि आप उस समय क्या करोगे?

उ० : उस बस में किसी पत्र का फोटो ग्राफर कैमरे के साथ यात्रा कर रहा हो तो चाकू खाने की परवाह न कर उस व्यक्ति को बता दूंगा । जो कुछ होगा हीरो तो बन ही जाऊंगा । अगर नहीं है तो नजर फेरकर किसी लड़की से आंखें लड़ाऊंगा, जेबकतरे को जेब काटना है और हमें सफर काटना है ।

केवल प्रकाश दुग्गा, काशीपुर : भगवान अगर इन्सान को इस दुनिया में पैदा न किया होता तो यह दुनिया कैसे होती ?

उ० : दुनिया कैसी भी होती इस दुनिया को कोई खतरा न होता ।

प्र. : आप बारह महीने ऐसे ही रहते हो क्या गर्मी सर्दी का आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता ?

उ० : हमारा और असरानी का एक ही नारा है 'हम नहीं सुधरेंगे,'बस ऐसे ही रहेंगे ।'

पाठकों से निवेदन

1. इस स्तंभ को मनोरंजक बनाने के लिए पाठकों से प्रर्थना है कि वे घिसे-पिटे प्रश्न जैसे गरीब चंद जी आप गरीब क्यों हैं, अमीर कब बनोगे । 'आपका नाम गरीब क्यों पड़ा आदि न पूछें । विविधतापूर्ण मजेदार प्रश्न पूछें ।
2. हर अंक में सर्वश्रेष्ठ प्रश्न का चयन किया जायेगा और सर्वश्रेष्ठ प्रश्न भेजने वाले को दीवाना के चार आने वाले अंक मुफ्त भेजे जायेंगे ।
3. प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें दीवाना में छपा कूपन चिपकाना जरूरी है ।

फैण्टम-जंगल शहर

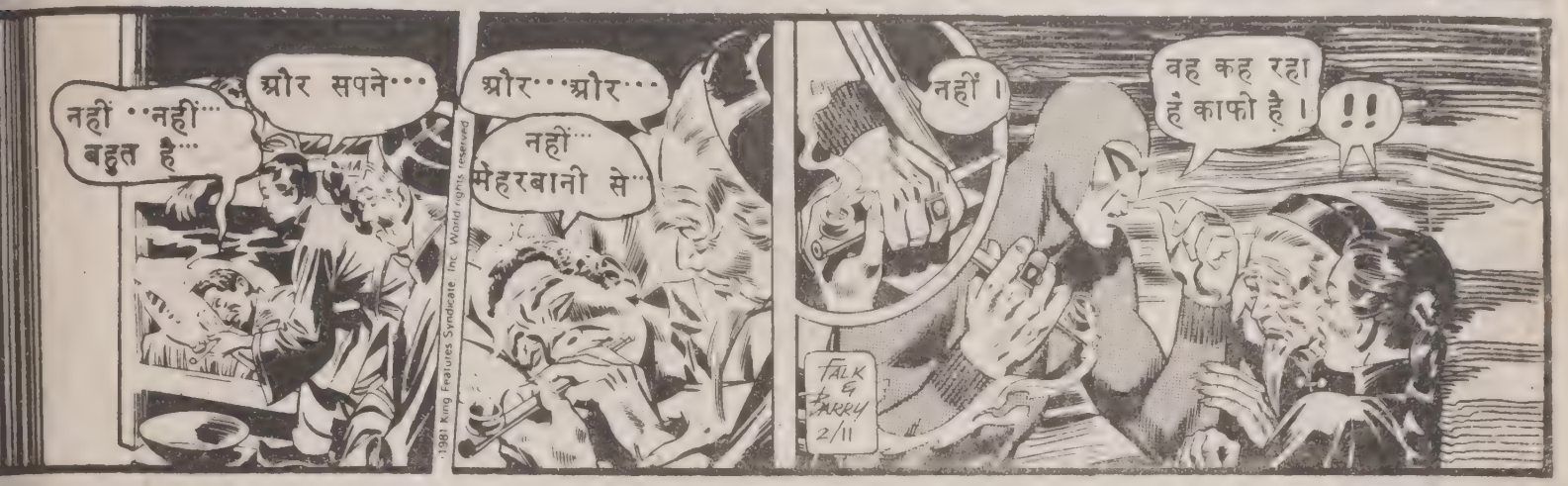

नहीं ··नहीं··· बहुत है···
और सपने···
और···और···
नहीं··· मेहरबानी से···
©1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
नहीं ।
वह कह रहा है काफी है ।
!!
FALK & BARRY 2/11
हम गरीब हैं·· पैसे नहीं हैं !
मैं यहां पैसे छीनने नहीं आया हूं, मैं उसके लिए आया हूं, वह यहां कब से है ?
वह नया है, पहली बार···
FALK & BARRY 2/12
© 1981 King Features Syndicate, Inc World rights reserved
अफीम के अड्डे पर···
क्या तुम यहां के मालिक हो ?
नहीं···नहीं ···मि०, गुरु के लिए काम करता हूं
मि० गुरु के लिए ठगी काफी नहीं है, वह नशे का काम भी करता है, सब कुछ बन्द कर देने का समय आ गया है ।
अफीम के अड्डे पर
ललोनी क्या तुम मुझे सुन सकते हो···देख सकते हो ?
ऊ—हह···
याद है जब तुमने जंगल ओलम्पिक्स में पोल वाल्ट जीता था ?और तुमने अपने ललोंगो लोगों ······
©1981 King Features Syndicate
के लिए सबसे बढ़िया विजेता ट्राफी जीती थी ?
FALK & BARRY 2/13
तुम उसे कैसे उठा सकते हो ?
ऊ···ह···
ताजी हवा···ठंडा पानी—समय—
FALK & BARRY 2/14
अफीम के अड्डे पर
ठीक है—शुरू करो—पहले इसे यहां से बाहर निकालते हैं ।
इन सब गरीबों को बाहर निकाल लो, मेरे वापस आने से पहले ! यह जगह हमेशा के लिए बन्द !
!

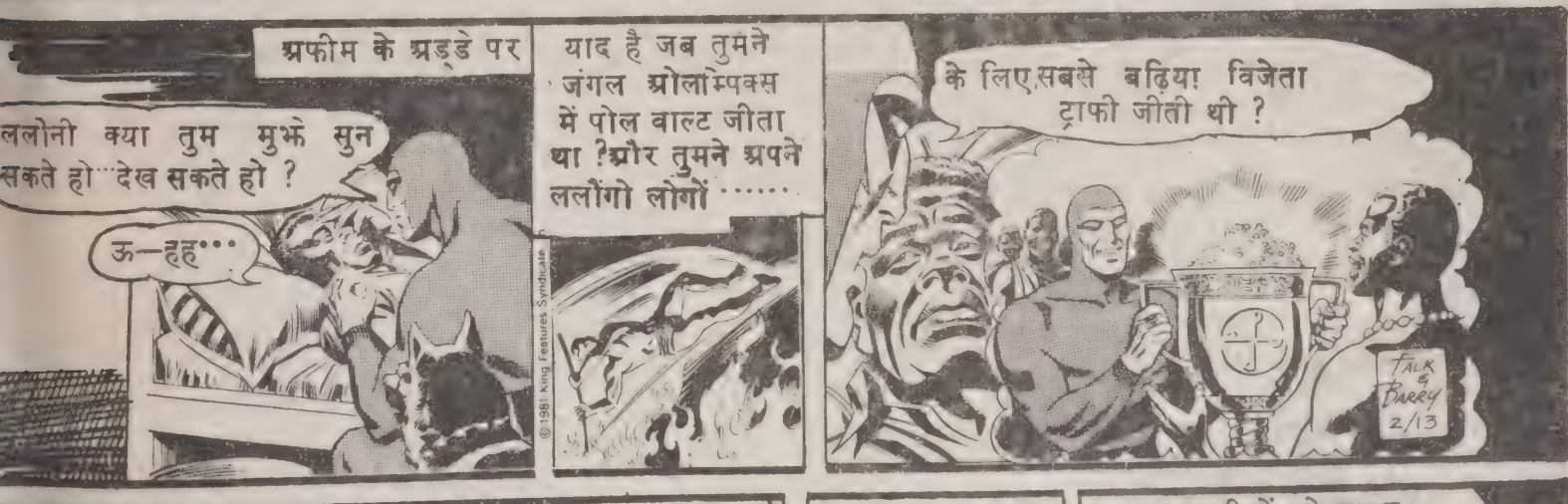

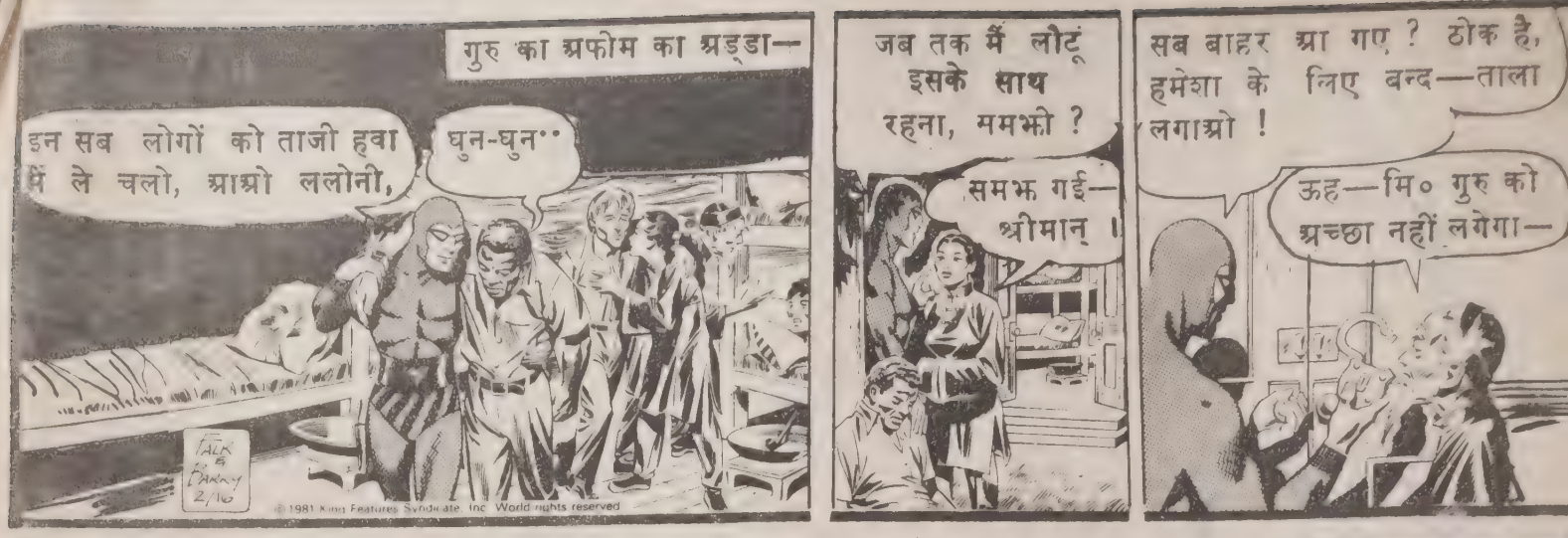

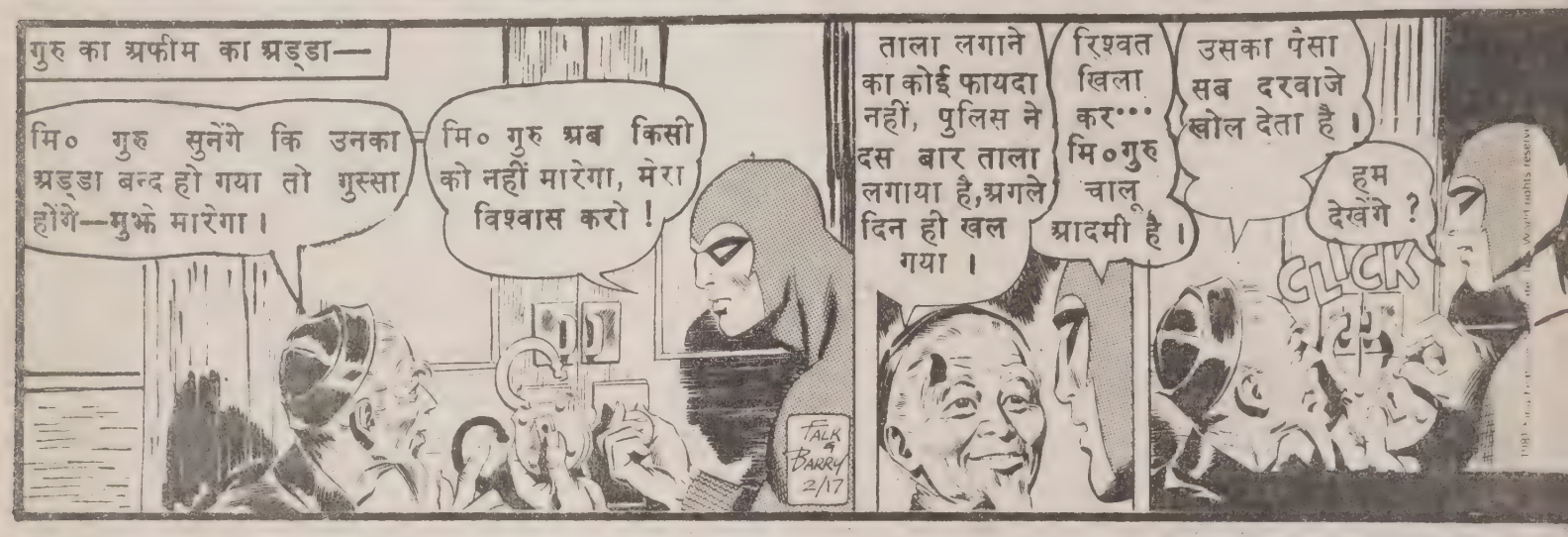

गुरु का अफीम का अड्डा—
इन सब लोगों को ताजी हवा में ले चलो, आओ ललोनी,
घुन-घुन··
FALK & BARRY 2/16
© 1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
जब तक मैं लौटूं इसके साथ रहना, समझी ?
समझ गई—श्रीमान् ।
सब बाहर आ गए ? ठीक है, हमेशा के लिए बन्द—ताला लगाओ !
ऊह—मि० गुरु को अच्छा नहीं लगेगा—
गुरु का अफीम का अड्डा—
मि० गुरु सुनेंगे कि उनका अड्डा बन्द हो गया तो गुस्सा होंगे—मुझे मारेगा ।
मि० गुरु अब किसी को नहीं मारेगा, मेरा विश्वास करो !
FALK & BARRY 2/17
ताला लगाने का कोई फायदा नहीं, पुलिस ने दस बार ताला लगाया है, अगले दिन ही खुल गया ।
रिश्वत खिला कर··· मि०गुरु चालू आदमी है ।
उसका पैसा सब दरवाजे खोल देता है ।
हम देखेंगे ?
CLICK
मैं यहां चूहे की तरह छुप कर उस बन्दूक वाले की इन्तजार नहीं करूंगा, तुम्हें पहले उसे ढूंढ़ना होगा ।
वो है कौन ? हम किसे ढूंढ़ें, गुरु ?
FALK & BARRY 2/18
© 1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
मुझे उसका नाम नहीं मालूम पौंग से पूछो, ललोनी से पूछो, जाओ । और जब उसे ढूंढ़ लो, एक दम गोली मार देना ।
वह दोनों...गुरु के हत्यारे किसी को ढूंढ़ रहे हैं—
मुझे ।
ब्लू ड्रैगन सैलून में ।
हैलो ताला । तुम्हारा बॉस कहाँ है ?
मि० वौंग ? पीछे है ।
FALK & BARRY 2/19
एक बड़ा सा आदमी आया था यहां, बढ़िया निशाने बाज । गुरु को बुरी तरह डरा दिया है । समझो हम किसकी बात कर रहे हैं ?
जानती हूं ।
© 1981 King Features Syndicate, Inc. World rights reserved
वह उ का चिन्ह है—उसे फैन्टम कहते —चलता फिरता भूत ।
क्या ?
कौन ?

ताएक्वोन्डो

यह है ताएक्वोन्डो का एक और रोमांचकारी भाग जिसे जगतियानी द्वारा जिनके कई स्कूल के कई भागों में हैं तथा जिन्हें स्वयं ब्रूसली से शिक्षा ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त है।

पाठ 9

एस टवोग्रो डोलयो चागी

(कूदना और उड़ती लात मारना)

यह लात मारने का ढंग उड़ती हुई लात मारने के नाम से विख्यात है। तथा इसे मार्शल आर्ट में उच्चत्तम ग्रेड की कुशलता का चिन्ह माना जाता है।

इस प्रकार लात चलाने के लिये ग्योरुगी में खड़े होकर तेजी से 3/6 कदम भाग कर हवा में उछलो साथ ही शरीर को साइड को मोड़ो। आगे वाली टांग मुड़ेगी और स्प्रिंग के समान निशाने पर जा लगेगी।

जब कि दूसरी टाँग जाकर सामने पेट के निचले भाग पर प्रहार करेगी। पैर का किनारा निशाने पर साईड किक के समान प्रहार करेगा। यह क्रिया पृथ्वी से कम से कम पांच या छः फीट की ऊंचाई पर करनी चाहिये। इस फ्लाईंग किक का बड़ा भारी प्रहार होता है इससे अधिकतर शत्रु के चेहरे या छाती पर ही निशाना लगाया जाता है।

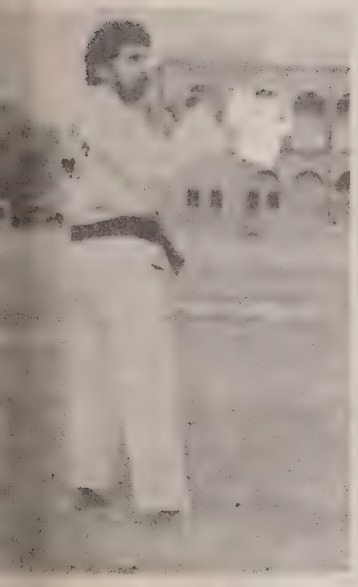

S-1

S-2

S-3

गम्भीर समस्या

एक बार एक नेता जी ने अपना भाषण बुलन्द आवाज में प्रारम्भ किया। 'पीछे माइक की आवाज पहुंचना मुमकिन नहीं है इसलिये आगे वाले सज्जन पीछे चले जायें और पीछे वाले आगे आ जायें।'

ऐलान सुनते ही सामने बैठे गणमान्य नागरिक मन ही मन बौखला उठे' पर बेचारे विवश थे। शांतिपूर्ण आममभा में कुहराम छा गया। कुछ देर के लिये हंगामा की स्थिति मच गई। स्थिति सामान्य होने पर नेता जी जोरदार आवाज में शुरू हो गए। 'हमारी समस्या अभी भी ज्यों की त्यों है। अभी-अभी जो लोग पीछे गये हैं। वे आगे आ जायें और आगे के लोग पीछे चले जायें।'

विशाल जनसमुदाय में पुनः हो हल्ला की पुनरावृत्ति हुयी। थोड़े समय के लिए दुबारा शोरगुल का वातावरण छा गया।

विस्तृत जन समूह शान्त होने पर नेता जी बोले, 'हमारे सामने बड़ी ही विकट समस्या है। आप लोगों के आगे-पीछे, आने-जाने का क्रम लगातार चलता रहे···इसके सिवाय इस जटिल समस्या से जूझने के लिये कोई दूसरा विकल्प नहीं है। मगर इससे आप लोगों को कितनी परेशानी होगी। मैं अच्छी तरह जानता हूं। अतः अपना भाषण बन्द करके अपनी कुर्सी पर बैठता हूं।'

कुछ श्रोताओं ने मन ही मन नेता जी को बहुत गालियां दीं और कुछ लोग बहुत प्रभावित हुए—'नेता जनता के दुःख दर्द को समझता है।'

— गिरिधर गोपाल पांडेय

EXPORT QUALITY

786

Ph. 264672

SULTAN®

PENCIL SHARPNERS
TIME WILL TELL THE DIFFERENCE

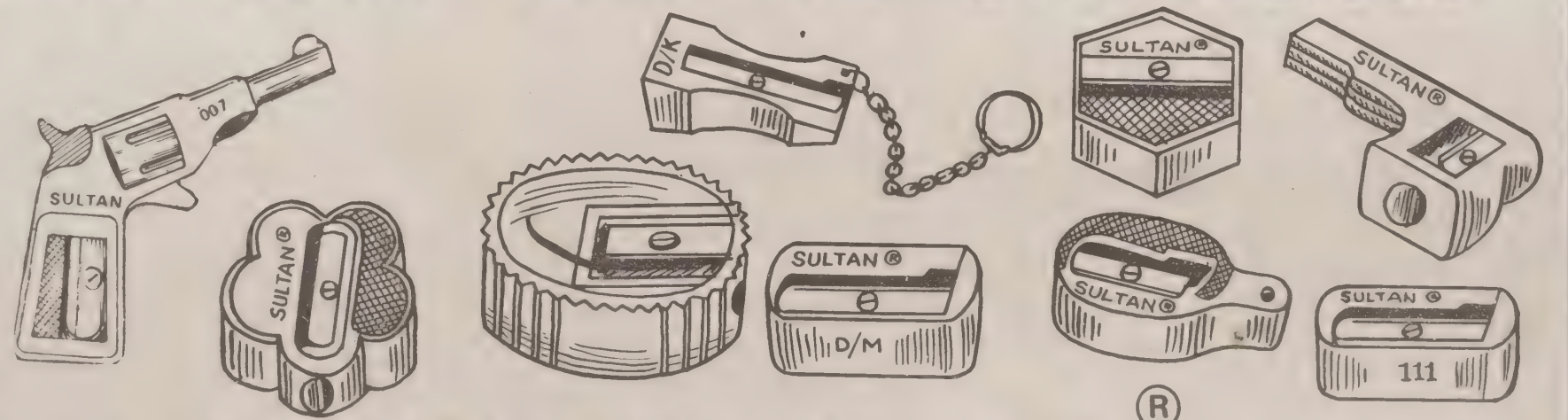

MFG.BY: REHMAN INDUSTRIES® (INDIA)

2848, BULBULI KHANA, BAZAR SITA RAM, DELHI-6

मूवी मसाला

मिथुन की कसम

क्या फिल्म स्टारों को ऐसी कसमें खाने और वादे करने की आदत नहीं है जिन्हें पूरा करने का उनका कोई इरादा नहीं होता। अमिताभ के उस जोरदार ऐलान का क्या हुआ जिससे उन्होंने 'शक्ति' की पहले दिन की आमदनी बंगलौर के हस्पताल को दान करने का ऐलान किया था। क्या किसी को भी नहीं मालूम कि अमिताभ एक डिस्ट्रीब्यूटर तक नहीं है ?

और अब मिथुन चक्रवर्ती को क्या हो गया जिसने अमिताभ की गम्भीर बीमारी के दौरान वादा किया था कि सुपर स्टार के स्वस्थ हो जाने पर वह स्वयं सेंट माईकल चर्च में रक्त दान करेगा और पद यात्रा पर जायेगा और अपने बालों भरे सीने पर क्रास बनायेगा ?

शायद सब सीने में ही खो गया।

वह नम्बर एक कहां गई ?

जाहिर है हेमामालिनी ने फिल्मी दुनिया में अपना नम्बर एक स्थान खो दिया है।

धर्मेन्द्र से शादी के बाद जनता की आंखों से गिर अपनी स्वयं उत्पन्न की गई भी परेशानी में पड़ी और पति धर्मेन्द्र को काबू में न रख पाने से हेमा ने अपनी सुन्दरता और आकर्षण दोनों ही खो दिए हैं।

पहले तो सफलता की सीढ़ी पर चढ़ने के प्रयास में लगी थी 'रति, पद्मिनी और पूनम— परन्तु अब मैदान में आ गई है दक्षिणी भारत की 'श्रीदेवी', 'हिम्मतवाला' और 'जैसा' की स्टार हमेशा की तरह जीतेन्द्र द्वारा जोरदार समर्थन प्राप्त ! जिसके साथ इन्होंने चार फिल्में साईन की हैं और टाप तक पहुंचने की पूरी आशा में हैं। पता नहीं कि जीतेन्द्र इतने चक्करों में पड़कर भी साफ कैसे निकल आता है।

'टीना' का दिया दर्द दिल

लगता है रेखा हो या न हो अभी तक संजय दत्त के दिल से 'टीना' निकली नहीं है। हर रोज आधी रातको जब संजय नशे की हालत में होता है तब वह 'टीना' की याद को अपने दिमाग से हटा नहीं पाता।

और जब रेखा उसके करीब नहीं होती तो राजेश खन्ना का नम्बर घुमाता है क्योंकि 'आशीर्वाद' की होस्टेस तो आजकल टीना मुनीम ही है और वही टेलीफोन उठाती है। उसकी हल्लो सुन संजय अपनी बची आधी रात किसी तरह गुजार लेता है।

ककून से निकले जद्दो जहद

राज बब्बर और उनकी पत्नी में होने वाले आये दिन के झगड़े पड़ौसियों का सिरदर्द बनते जा रहे हैं। पत्नी नादिरा जहीर अपनी दबी भावनाओं और कुचले अरमानों के कारण अपना ज्यादा से ज्यादा समय पृथ्वी थ्येटर में बिताती है।

पर क्या यह राज बब्बर की ज्यादती नहीं है कि उसने हाल में ही नादिरा को श्याम बेनिगल की फिल्म में पार्ट नहीं लेने दिया। क्या यह बब्बर के मन का काम्पलैक्स नहीं है या उसे डर है कि अगर तितली एक बार उड़ गई तो उसकी इमेज को धक्का लगेगा।

बब्बर केक अपने पास रखना चाहते हैं और उसे खाना भी चाहते हैं। परन्तु जिस रफ्तार से बब्बर नादिरा को नजरन्दाज कर मौज उड़ाते हैं नादिरा ज्यादा दिन काबू में रह नहीं पायेगी।

सचमुच व्यवसायिक रिश्ता

'सनी दिओल' बड़े जोर शोर से कह रहा है कि उसका साथी अभिनेत्री 'अमृता' से मेल जोल बिलकुल व्यवसायिक ही है। सच्चाई पर कैसा परदा है। उनका आपसी प्रेम भरा व्यवहार सेट्स पर भी सबको दिखाई देता है।

और 'सनी' के दोस्त के उस फ्लेट के विषय में उसका क्या ख्याल है जिसकी चाबी 'सनी' के पास रहती है। फ्लैट में अमृता और सनी घंटों बन्द क्या विचार विमर्श करते हैं, स्क्रीनप्ले या फिर—?

जाने दो 'सनी' अपने पिता के नक्शे कदम पर चलने में आखिर बुराई भी क्या है।

कमलाहसन और उनके बन्धन :—कमलाहसन की पत्नी ही पूरी बन्दिश से कमलाहसन की फिल्मों की हीरोइन का चुनाव करती है। उसने कमलाहसन को 'रति' के साथ फिल्म में काम करने की पक्की तौर से मना कर दिया है। वैसे भी कमलाहसन को रति से कोई विशेष प्रेम नहीं है।

परन्तु वानी की नई शिकार अब रेखा है जो कमलाहसन के लिए न मिलने वाला फल बन गई है, पर ऐसा क्यों ? क्योंकि वानी रेखा को पति छीनने वाला करार दे दिय वानी का इरादा एक स्टार क्लब बनाने है जहां वे और अन्य स्टार पत्नियां अ पतियों को रेखा के चक्कर से बचाने विचार करेंगी।

छोड़ो वानी, कुछ तो अपने पर विश्व रखो, इस तरह पति को दूसरी स्त्रियों बचाना सम्भव न होगा।

पृष्ठ ६ से आगे

मुच नारे बुलन्द करने लगीं—'जिन्दाबाद ! काश ! यह गर्व मुझे भी हासिल हुआ होता कि अपने महबूब शायर गालिब की तरह यह गिरफ्तारी मेरी अमल में आयी होती। मगर यह सौभाग्य भी आपके भाग्य था। आप इस मैदान में भी गालिब जैसे महान् इन्सान का मुकाबला कर गए। पर इसमें आपने खुदा न करे, क्यों कहा गिरफ्तार होना और पुलिस के चुंगल में आना आप मामूली बात समझे हुए हैं। अगर आप उसे राजनीतिक गिरफ्तार कहें तो भी नज्म-उ-दोला असद अल्लाह खां बहादुर नाजामे जंग के बारे में क्या राय है ? इस दौर में तो उससे बड़ा कोई आदमी है नहीं और न इस दौर में उससे बड़ा कोई आदमी था, पर वह भी बिल्कुल इसी तरह गिरफ्तार हो जेल गये थे। आप गिरफ्तार होना मामूली बात समझते हैं ? वह क्या है शेर, कुछ फारसी का है कि···पं.···सादत···आपको याद होगा। मुझे तो याद नहीं, जिसके आखिर में आता है कुछ··· नख्शद बख्शंदा···

मैंने उलझ कर कहा—'जी हां ! जी हां ! समझ गया। अगर आप इसको भी सआदत समझती है तो ऐसी असंख्य आदतें आपको मेरे जीवन में मिलेंगी। उदाहरणार्थ मिर्जा गालिब की पैरवी में सिर्फ गिरफ्तार होने ही में नहीं की है, बल्कि पी भी लेता हूं।'

अब संयत न रह सकीं और उठकर मेरी बर्थ पर आ गयीं। 'सचमुच अल्लाह जानता है। मैं इसी बात पर विचार कर रही थी कि आप जैसे महान् इन्सान को रिन्द (शराबी) जरूर होना चाहिए। वरना आपके व्यक्तित्व में एक खामी रह जाएगी। आप मुझे इन सतही लोगों में न समझिये जो गालिब के बकौल अगले वक्तों के लोग हैं। सच पूछिए तो यह वह गुण है जो हरेक के भाग में नहीं आता। हाय मेरे खुदा ! एक सही किस्म के रिन्द किस कदर उदार, व्यापक दृष्टि वाले, बुलन्द हौसला, कितना बेबाक, कैसा साहसी और किस हद तक स्पष्टवादी होता है, जो मदिरापान के बाद सारी दुनिया को अपनी रूह को निवारण कर देता है। बंदिशों के जितने परदे उस पर पड़े होते हैं, वह सबको उठा देता है और दुनिया से कहता है कि लो देख लो, मुझे जो कुछ हूं यह हूं।

वह अभी अपना भाषण दे रही थी कि गाड़ी की गति सुस्त होने लगी। मेरे दिल दुआ निकली कि खुदा करे, कोई स्टेशन गया हो ताकि मैं जरा प्लेटफार्म पर टहल अपने इस दिमाग को थोड़ी सी शांति दे सक जिसको इन महोदया ने रुई की तरह धुन रख दिया है। खुदा का शुक्र है कि मुलत था, अतः गाड़ी के ठहरते ही मैं प्लेटफार्म उतर गया और टहल-टहल कर विचार कर लगा कि अब तक सिर्फ मुलतान आया है, कराची पहुंचते-पहुंचते हाल क्या होगा ! इस प्लेटफार्म की दूसरी ओर कराची से लाहौ जाने वाली गाड़ी तैयार खड़ी थी। मैं अभ उसको हसरत से देख ही रहा था कि व प्रस्थान के लिए रेंगी और खुदा जाने उस क्या कशिश थी कि मैं दौड़ा उसकी ओर, औ सामने ही सैकन्ड क्लास के खुले हुए दरवाजे तीर की तरह दाखिल होकर एक बर्थ पर ज गिरा। अब मैं कराची के बजाय फिर लाहौ जा रहा था और सिर्फ मेरी किताबें और मेर सामान उन महोदया के साथ कराची जा रह होगा जिनके पागल होने का मैं तो खैर कायल हो ही चुका हूं, पर अब वे मेरे पागल होने की कायल हो रही होंगी।

पिल्ली लीला
हेयर टॉनिक ? क्या सफाचट गंजे सिर पर भी यह बाल उगा सकता है ।
पिल्ली
हेयर टानिक (गारन्टिड)
जी हां, पिल्ली ने लिखकर गारन्टी दी है कि उसके बनाये इस टॉनिक से चार घंटे के अन्दर पत्थर पर भी बाल उग आयेंगे । अगर ऐसा न हुआ तो कीमत वापिस की जायेगी ।
अच्छा ! अगर आपके बाल उग आये तो मैं एक शीशी अपने हसबैंड के लिए भी ले जाऊंगी ।
ार सौ बीस, ठग कहीं का । मुझे यह टॉनिक मलते चार दिन हो गए और कहीं एक बाल भी नहीं उगा । इस शीशी को पत्थर पर फोड़ दूंगा ।
और उस गारन्टी वाले से कान पकड़ कर पैसे वसूल करूंगा ।
अब तुम शिकायत क्या कर रहे हो ? जिस पत्थर पर तुमने मेरे हेयर टॉनिक की शीशी फोड़ी उस पर देखो बाल उग आये हैं । मेरी गारंटी यही तो थी कि पत्थर पर भी मेरा टॉनिक बाल उगा सकता है ।

पौराणिक कथा
ब्रूस ली
by SHARMAN DiVONO and FRAN MATERA
मार्शल आर्ट शब्द कोष
तांओ—एक सड़क, एक राह, एक रास्ता जिस पर लोग यात्रा करते हैं, प्रकृति की राह, अन्तिम वास्तविकता का पथ ।
जीत कुने दो— ज्ञान का प्रकाश है ।
यह जीवन का एक तरीका है, आत्म शक्ति और नियन्त्रण की ओर एक अभियान है, हालांकि इस प्रेरणा से ज्ञान होना चाहिए ।
कंड हूवे के घर में अजनबी ब्रूस के प्रश्नों का उत्तर नहीं देता बल्कि सिद्ध मार्शल आर्ट मास्टर को कराटे से पराजित करना चाहता है समें नाकामयाब ो वह पिस्तौल काल लेता है ।
मुझे पिस्तौल का प्रयोग करना अच्छा नहीं लगता 'ली' पर तुमने कोई चारा ही नहीं छोड़ा ।
मैं तुम दोनों से जल्दी मिलूंगा ।
उस के पास हम दोनों को मार देने का मौका था ...
ओह ! मैं तो समझा था हम दोनों अब मृत ही हैं ।
कंड क्या तुम मुझे पूरी सच्ची बात बता रहे हो ?
हां हां मैं कसम खाता हूं ।
परन्तु अगले दिन 'मौत के पंजे' के सेट पर ।
ब्रूस हूवे नये लेख के साथ नहीं आया उसके बदले हम सीन ८ की शूटिंग करेंगे ।
कल रात जब मैंने उसे छोड़ा था तो उसने कहा था यहां आयेगा ।

यह सच है

नसवार का एक डिब्बा २.५०० पाऊँड का बिका।

हाल ही में 19 इंच×11 इंच का एक खूबसूरत नसवार का डिब्बा जो अडोल्फ हिटलर द्वारा प्रयोग में लाया गया कहा जाता है, नीलाम में 2,500 पाऊंड का बिका। उसके साथ अन्य कुछ प्राचीन वस्तुएं 650 पाउंड की बिकी थीं (लगभग 60,000 कुल रुपये)। नसवार का डिब्बा हिटलर को जर्मनी के लोगों ने उसकी पचासवीं वर्षगाठ पर भेंट किया था।

कहा जाता है नसवार का डिब्बा और अन्य वस्तुएं सन् 1945 में एक ब्रिटिश फ्लाईट लेफ्टीनेंट द्वारा, उसकी बैटेलियन के बर्लिन में शरण लेने के समय हिटलर के निवास स्थान से उड़ाये गए थे। एलवर विलियम, एडोल्फ हिटलर का निवास स्थान देखना चाहता था, परन्तु सुरक्षा पहरेदारों ने उसे भीतर जाने से रोक दिया। विलियम पहरेदारों को इंगलिश सिगरेटों की रिश्वत दे किसी प्रकार भीतर घुस गया और वहां घूमते-घूमते, हिटलर का नसवार का डिब्बा और कुछ अन्य सामान अपनी जेब में छिपा लिया। बाद में वह सामान इंगलैंड ले आया और उसे बैंक में सुरक्षित रख दिया।

●

मजेदार नौकरी में भेदभाव—

वियाना में मजेदार नौकरी में भेदभाव देखने में आता है। वहां तुम एक तवायक तभी बन सकती हो जब या तो अकेली हो या तलाक शुदा हो। शहर के एक न्यिम से विवाहित स्त्रियों को 1975 से तवायफ का पेशा करने की सख्त मनाही कर दी गई है। तवायफ का पेशा संसार का सब से प्राचीन पेशा है।

आस्ट्रेलिया की सबसे अजीब घड़ी में तीन हाथ हैं पर उनमें से केवल दो ही उसके सामने की तरफ हैं। तीसरा हाथ उस घड़ी के बनाने वाले के सीधे हाथ का ढांचा है जो एक खास फिटिंग में घड़ी साथ बन्द किया हुआ है। यह घड़ी स 1685 में चारपेन्टियर नामक व्यक्ति द्वा बनाई गई थी। जब यह घड़ी आधी बनी थी। तो चारपेन्टियर को दुर्भाग्यव उस समय के कुख्यात जज जैफरीज सामने किसी धार्मिक अपराध के लि पेश होना पड़ा। जैफरीज ने उसका दा हाथ काट देने की सजा सुना दी। बदले के रूप में चारपेन्टियर ने घड़ी को बा हाथ से ही पूरा किया और अपना दाय उसी में बन्द कर दिया। चारपेन्टियर क हाथ परिवार इस घड़ी को सन् 189 में तसमानिया लाया था।

●

चंडीगढ़ में एक नौजवान इन्जिनियर अपने 1982 फरवरी में पैदा हुए बच्चे के लिए स्कूल में सीट बुक करवाने गया। स्कूल के प्रिंसिपल ने खेद प्रकट करते हुए कहा आपको बच्चा पैदा होने से पहले ही सीट बुक करवानी चाहिए थी। ज्ञात हुआ है कि चंडीगढ़ के कुछ स्कूलों में 1985 तक के लिए प्रवेश की सब सीटें बुक हो चुकी हैं।

दीवाना वर्ग पहेली

20 रु. इनाम जीतिये

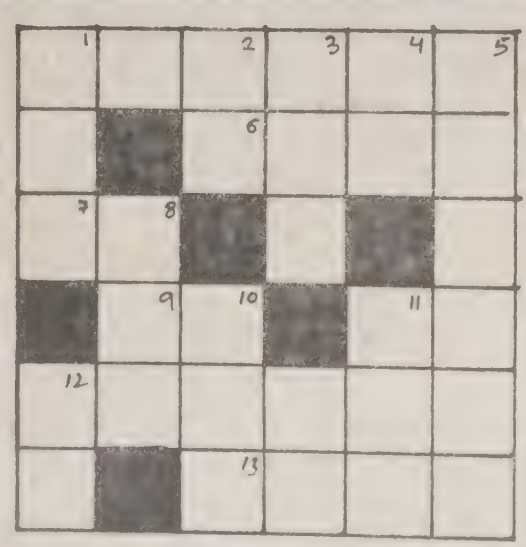

अन्तिम तिथि— २१-५-८३

संकेत बायें से दायें

1. इस तरह की पुताई करने में बदनामी है। (3, 3)
6. शिकायत करने थाने जाते हुए स्लिप कर जाना ? (4)
7. होंठ पलटने से शक्ति मिलती है। (2)
9. आखिर वाले को हंसने की कोशिश करते दोहरा देना। (1-1)
11. उल्टी गाड़ी में कान लगा कर बैठे तो नहीं चला। (2)
12. हरा सीप तोड़कर उसमें रस मिला कर समय बताइए। (3.3)
13. ऐसे शिक्षालय जाने के लिए अम्मा से पूछना पड़ेगा ? (4)

ऊपर से नीचे

1. पहले जन्म के आगे-पीछे मौत हो तो आंखों की सुन्दरता बढ़ेगी ? (3
2. राक्षस बीच का समाचार पचा गया। (2
3. ईसाई धर्म गुरु को मंगाने में फूलना नही चाहिये। (3
4. बात टालने में ही किनारा मिलेगा। (2
5. एक रिश्तेदार की तरह से करने में एक रसता नहीं है। (2,3,1
8. इसे करने के लिए मुंह खोल गुरू औ आखिर में न हो जाती है। (3
10. आराम क्या है इस विषय पर आप औ मेरे बीच अधूरी राय से सहमति है। (3
11. प्रत्येक के सिर पर रुपए का साया हो त विश्व प्रसिद्ध औद्योगिक घाटी के दर्श किये जा सकते हैं। (3
12. नदी के तट पर यह मार्ग दर्शायेगा। (2

नाम ————————————————

————————————————

पता ————————————————

————————————————

बोलते अक्षर

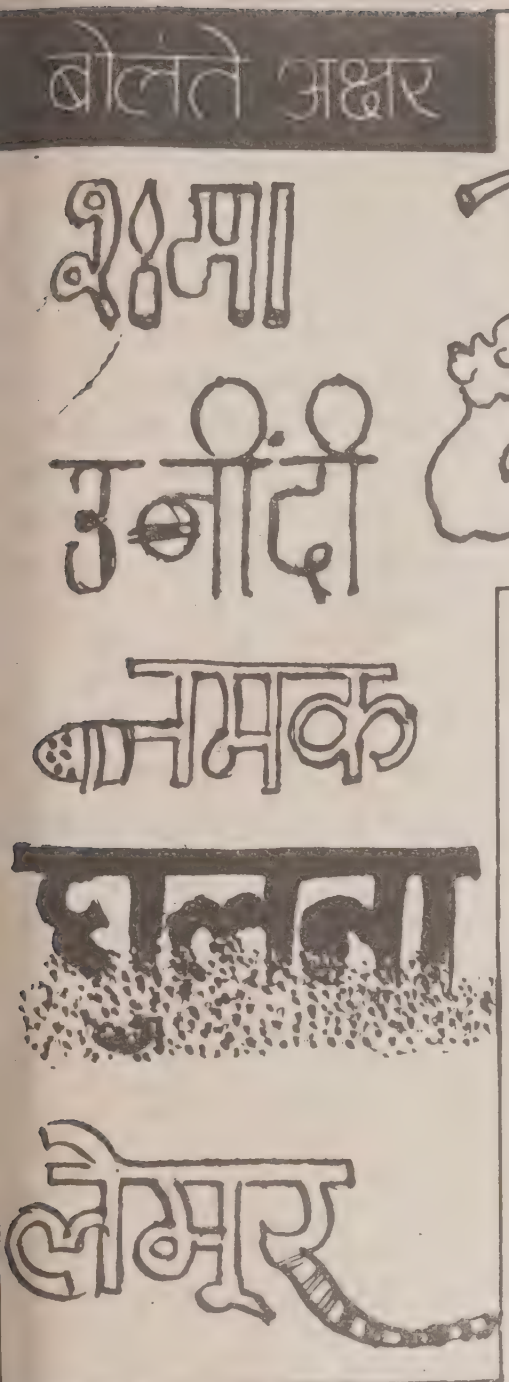

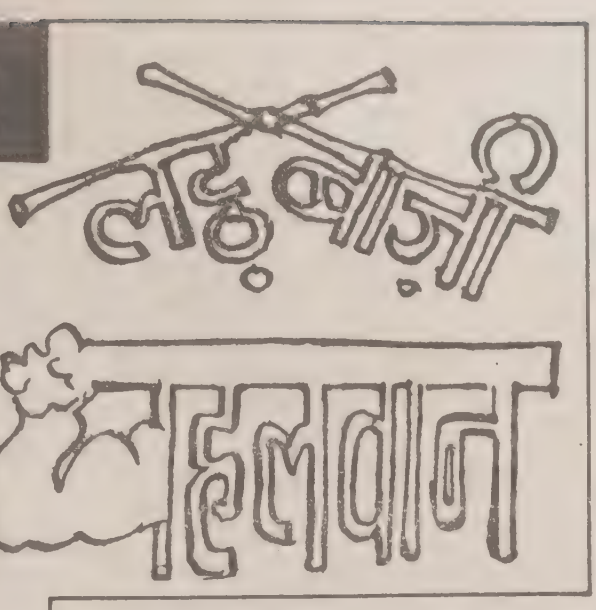

दीवाना के अंक ६ में प्रकाशित वर्ग पहेली का सही हल

अ 1	जी	बो 2	ग 3	री 4	ब 5
ह	■	न 6	री	म	न
सा 7	ह 8	स	■	■	वा
न 9	ल	■	त 10	र 10	स
मं 11	च	न 11	■	वा 12	दे
द 13	ल	ग	त	■	ना

(निर्णय लाटरी द्वारा)

विजेता —श्रीमती नीलम पामर
आजाद भवन, टी. एस. रोड
मुक्तसर (पंजाब)

लघु विज्ञापन

दीवाना

के वार्षिक सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये

चन्दे की दरें

वार्षिक	अर्द्धवार्षिक	एक प्रति
५० रुपये	२६ रुपये	२ रुपये ५० पैसे

साधारण रुप से दीवाना की सदस्यता शुल्क ६० रु. एवं डाक खर्च अलग से होती है। लेकिन आप अभी सदस्य बनिये और १० रुपये बचाइये एवं अपनी कापी अपने घर या दफ्तर में प्राप्त कीजिये।

नीचे दिये कूपन को भरिये और चन्दे की रकम के साथ हमें डाक द्वारा भेजिये चन्दे की रकम केवल दीवाना के नाम से ही भेजें।

अपना सदस्यता शुल्क निम्न पते पर शीघ्र भेजिये
सरक्युलेशन मैनेजर, दीवाना ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

कृपया मुझे दीवाना के वार्षिक/अर्द्ध वार्षिक ग्राहकों की सूची में सम्मिलित कर लीजिये। मैं चन्दे की रकम———— रुपये भारतीय पोस्टल आर्डर/डिमांड ड्राफ्ट/मनीआर्डर नं.————————से भेज रहा हूं।

नाम ————————————————

पता ————————————————

————————————शहर/जिला————————

राज्य ————————————पिन कोड————————

विशेष उपहार दीवाना के उन पाठकों को जो दीवाना के 6 वार्षिक सदस्य बनाकर हमें भेजेंगे एक दीवाना टी शर्ट या छः माह के लिए दीवाना मुफ्त दी जायेगी।

पृष्ठ १८ से आगे

हुआ . . .कमल उसके पास आकर ध्यान से उसका चेहरा देखते हुए बोला—''तू तो इस तरह खड़ा है जैसे किसी सैशन जज के सामने जीवन या मृत्यु का फैसला सुनने को खड़ा हो।''

''कमल . . .सचमुच मुझपर यह क्षण बहुत भारी गुजरे हैं।'' हरीश ने बेचैनी से कहा, ''भगवान के लिए कोई बुरी खबर हो तो मुझे सुनाना मत। टाल देना।''

''बुरी खबर?'' कमल ने मुस्करा कर कहा, ''भला जहां तेरा दोस्त जाए और वहां से बुरी खबर लाए?''

''सच?'' हरीश ने बेचैन होकर कमल के कंधे पकड़ लिए, ''जल्दी से बता दे क्या कहा उन्होंने?''

''देख . . .मैंने तुझे जो वचन दिया था वह शीघ्र पूरा कर दूंगा . . .बस तू अपने दोस्त पर भरोसा रख।''

''कमल . . .तू मेरा दिल रखने को लिए तो नहीं कह रहा।''

''हरीश . . .यह बड़ी भावपूर्ण बातें होती हैं . . .इनमें मजाक का कोई पहलू नहीं होता।''

''कमल . . .मेरे यार . . .मेरे भाई।''

हरीश ने झपटकर कमल को जोर से लिपटाकर भींच लिया—उसकी आंखों में खुशी के आंसू झलक रहे थे।

रात के लगभग ग्यारह बजे होंगे . . .हरीश ने इतनी रात बाहर ही बिताई थी . . .खाना एक होटल में खाकर वह काफी देर तक टहलता रहा था . . .मारे खुशी के उससे खाना भी पेट भरकर नहीं खाया गया था . . .और उसे अपने कदम भी बहके-बहके से लग रहे थे। वह सोच रहा था, भला सुनीता किस तरह सहमत हुई होगी? लेकिन अगर वह सहमत न होती तो कमल इतने विश्वास के साथ कहता ही कैसे? जरूर कमल ही ने किसी प्रकार सुनीता को मनाया होगा . . .कितना अच्छा दोस्त है मेरा . . .कितना अच्छा दोस्त जो मेरा घर बसाने के लिए एक भाई और पिता के समान कर्तव्य निभा रहा है।

हरीश रात के ग्यारह बजे तक घूमता फिरा था . . .फिर यह वापस कमरे की ओर चल दिया . . .आज आकाश पर चांद भी नहीं था और तारों ने भी बादलों की चादर ओढ़ रखी थी . . . गली में दूर-दूर म्यूनस्पैलिटी के खम्बों पर छोटे-छोटे बल्ब पीले चिरागों की तरह टिमटिमा रहे थे जिनके नीचे से गुजरती हुई छाया अपने ही नीचे लोप हो जाती थी तो अजीब-सा लगता था—सर्दी भी खासी तेज थी।

हरीश ने कमरे के पास पहुंचकर एक बार मेहरा साहब के घर की ओर देखा और उसका दिल खुशी से धड़क उठा। उसने सोचा कुछ दिन बाद यह घर उसके लिए पराया नहीं रहेगा। धीरे-से ताला खोलकर उसने कमरे का दरवाजा खोला और अन्दर आ गया। कमरा गहरे अंधेरे में डूबा हुआ था। हरीश दीवार टटोलकर स्विच की ओर बढ़ने लगा . . .और उसका हाथ स्विच बोर्ड के पास पहुंचा भी नहीं था कि अचानक उसने अपने पीछे दरवाजा बन्द होते सुना। वह चौंककर मुड़ा . . .मगर दरवाजे की ओर अब गहरा अंधेरा था . . .हरीश का दिल बहुत जोर से धड़का . . .उसने ऊंची आवाज में पूछा—''कौन है?''

कोई उत्तर नहीं मिला तो वह और भी जोर से चिल्लाया—''मैं पूछता हूं कौन है?''

''चिल्लाओ मत।'' अंधेरे में तेज-तेज सांसों के साथ किसी लड़की की आवाज गूंजी, ''बत्ती जलाओ।''

हरीश के दिल पर फिर धक्का-सा लगा . . .आवाज कुछ जानी-पहचानी-सी लग रही थी . . .उसने आगे बढ़कर स्विचबोर्ड टटोला और फिर बत्ती का स्विच ऑन किया। उसी क्षण कमरे में ट्यूब लाइट की चांदनी जैसी ठंडी रोशनी फैल गई और फिर जैसे ही हरीश मुड़ा उसके मस्तिष्क पर जैसे किसी ने एक जोरदार ठोकर मारी और वह सन्नाटे में खड़ा रह गया।

गहरे नीले रंग की मसली हुई-सी साड़ी पहन हुए एक लड़की खड़ी थी . . .तीखे नयन नक्श, चम्पई रंगत और चेहरे पर बला का आकर्षण . . .मगर इस समय आंखों से बेचैनी टपक रही थी और होंठ सूख रहे थे—हरीश के होंठों से आश्चर्य-भरी कांपती आवाज निकली—

''रजनी—! तुम?''

''आश्चर्य हुआ?'' रजनी ने व्यंग से कहा, ''तुम समझते थे कि मैं तुम्हें ढूंढ़ नहीं पाऊंगी?''

''म . . .म . . . मगर . . .।'' हरीश ने थूक निगल कर कुछ कहना चाहा।

''स्त्री सारी दुनिया को भूल सकती है, लेकिन धोखा देने वाले व्यक्ति को कभी नहीं भूलती। तुम चंद दिनों के लिए हमारे गांव आए थे मेरे उस कारीगर भैया के साथ जो तुम्हारी फैक्टरी में काम करता है . . .तुमने मुझे सुनहरी सपने दिखाए और शादी का वचन देकर मेरा सब कुछ लूट लिया फिर शहर वापस आकर इस तरह भूल गए जैसे इस दुनिया में रजनी नाम की कोई लड़की थी ही नहीं। मैं भी शाय भुला देती मगर पिछले तीन महीनों से तुम्हारा कोख में पल रहा है।''

''नहीं . . .!'' हरीश कांप उठा।

''मैं एक घरेलू लड़की न यह पाप मिटा थी न छुपा सकती थी। पहले मेरी मां को पत . . .मैंने सब कुछ उन्हें बता दिया . . .व आघात ही से बीमार पड़ गई। कल रात मेरे को पता चल गया . . .मैंने डर के मारे भाइ तुम्हारा नाम नहीं बताया क्योंकि वह अब तक मारकर चले गए होते . . .उन्होंने मुझे बन्द कर था और कहा था अगर सुबह तक नाम न बता वह मुझे और मां को मार डालेंगे। मैं किसी निकल कर भाग आई लेकिन पर्चा लिखकर आई हूं कि अगर मैं कल सुबह तक अपने प साथ न लौटूं तो मेरे छोटे भाई से हरीश का मालूम कर लेना।''

हरीश के सिर पर जैसे दूसरा पहाड़ गिर . . .चेहरा पीला पड़ गया था और आंखें घबराहट झांकने लगी थी। रजनी ने ध्यान से उ चेहरा देखा और होंठ भींचकर उसकी ओर बढ़ती बोली, ''हम लोग नीच जात हैं तो क्या हुआ? नीच जात बनाने वाले तुम ऊंची जाति के लोग हो अपने मतलब के समय सिर आंखों पर बिठा लेते और मतलब निकलने के बाद तोते के समान आ फेर लेते हो—मगर अब हम इतने मूर्ख नहीं रहे अपना अधिकार भूल जाएं, न इतने कायर रहे हैं अपना अधिकार प्राप्त न कर सकें। मुझे गले ल समय तुमने बड़े-ऊंचे-ऊंचे दावे किए थे मगर अ तुम्हारी आंखें, तुम्हारा चेहरा तुम्हारी वास्तविकता पोल खोल रहे हैं—लेकिन इतना याद रखो मैं कमरे से अब अपना अधिकार लेकर निकलूंगी—तुम्हें अभी और इसी समय पास-प के वृद्ध लोगों को बुलाकर उनके सामने मेरी मांग सिन्दूर भरना ही पड़ेगा वर्ना मैं चिल्ला-चिल्लाकर मुहल्ले को इकट्ठा कर लूंगी—और चेतावनी देती हूं अगर यह रात निकल गई और कल की सु आ गई तो मेरे तीनों भाई तुम्हें तो मारेंगे ही मुझे जिन्दा नहीं छोड़ेंगे।''

क्रमशः

प्रवेश निःशुल्क

Daito's

रंग भरो प्रतियोगिता-२

पुरस्कार जीतिए

प्रथम पुरस्कार

द्वितीय पुरस्कार

अंतिम तिथि ३१-५-८३

इस प्रतियोगिता में १५ वर्ष की आयु तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं, ऊपर दिये चित्र में अपने मन चाहे रंग भरिये और उसे निम्नलिखित पते पर भेज दीजिये। जिस चित्र में सबसे सुन्दर रंग भरे होंगे उसे प्रथम पुरस्कार के रूप में एक ट्राईसिकल दिया जायेगा और उससे कम सुन्दर चित्र को एक आटोमैटिक खिलौना पुरस्कार स्वरूप दिया जायेगा। सम्पादक का निर्णय अन्तिम और सर्वमान्य होगा। इस विषय में कोई पत्र-व्यवहार नहीं किया जायेगा।

पता: दीवाना ८ बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-११०००२

नीचे दिया कूपन साफ अक्षरों में केवल हिन्दी में भरिये।

नाम ..... उम्र .....

पता .....

दीवाना का आगामी अंक छुट्टी अंक होगा

जो हंसा-हंसाकर आपकी छुट्टियों की छुट्टी कर देगा।

छुट्टी अंक के विशेष आकर्षण

- छुट्टी की छुट्टी कैसे करें ?
- सिलबिल पिलपिल की छुट्टी
- हिल स्टेशन प्रवास का आध्यात्मिक पहलू
- दीवाना यात्रा गाइड
- साथ में सभी स्थाई स्तम्भ

अप
आज
एजेन्ट
करा

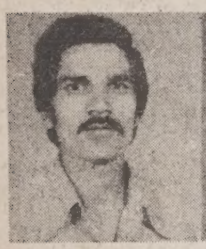

महेश चन्द वर्मा, न्यूज पेपर, एजेन्ट, मसवासी, रामपुर, 21 वर्ष, पत्र मित्रता करना।

गुलशन चोपड़ा, म. नं. 2252, गली नं. 6, बसंत नगर लुधियाना, 13 वर्ष, टिकट संग्रह।

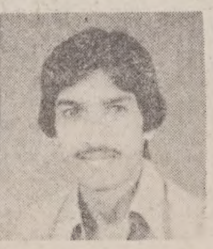

सतीश कौशिश, 20/212 जैलदार की घाटी, लोहड़ बाजार, भिवानी, दोस्ती करना।

तजेन्द्र साहनी, 2/6, सिविल लाईन रुद्रपुर, नैनीताल, 16 वर्ष, बच्चों से दोस्ती करना।

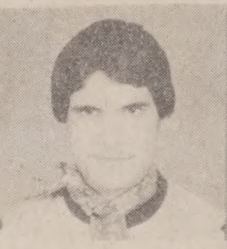

राज कुमार रंधावा, जे-382, ओल्ड सीमापुरी, दिल्ली, 21 वर्ष, दोस्ती करना सेवा करना।

परेश कुमार पटेल, फारम रोड, सम्बलपुर, 19 वर्ष, क्रिकेट खेलना, पत्र-मित्रता करना।

टीटू चोपड़ा, चोपड़ा स्टूडियो, एफ-229, रघुबरपुरा गांधी नगर, दिल्ली, 16 वर्ष, डांस करना

राम निवास बालगैहर, टी० 468/2, अहाता किदारा दिल्ली, 18 वर्ष, कुश्ती लड़ना।

प्रमेन्द कुमार कुलश्रेष्ठ, म. नं. 3/136, रुई की मण्डी शाहगंज, आगरा, 15 वर्ष, दोस्ती करना।

श्याम लाल, 2653, राम गली, महाबीर बाजार, तेलीवाड़ा, दिल्ली, 32 वर्ष, गप्पें लगाना।

पवन प्रधान द्वारा श्रेष्ट निवास क्षत्रपाटी, काठमांडू, नेपाल, 20 वर्ष, बैड मिन्टन खेलना।

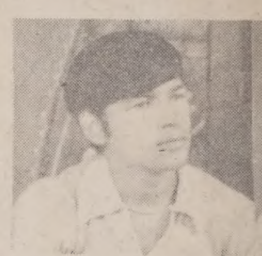

वेद अरोड़ा, 64/11, अशोक नगर, नई दिल्ली, 21 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

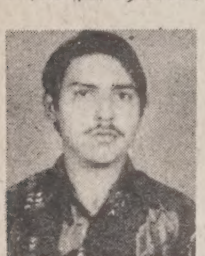

राकेश सरदाना, गली मुकन्द लाल, वकील सिरसा, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता करना।

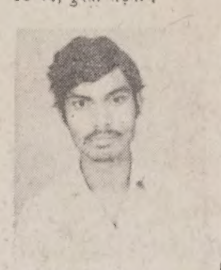

अविनाश रामाराव चव्हाण, मुलई निवास, रूम नं. 1, समर्थ नगर, बम्बई, 19 वर्ष।

के. सी. उन्नीकृष्ण श्री दिग विजय वुलन मिल्स, ऐरोड्रम रोड, जामनगर, 14 वर्ष।

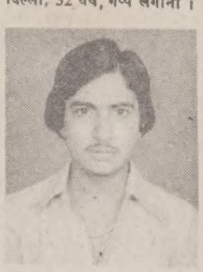

अमेश रामचन्द 251 गुरु नगर, 18 वर्ष, क्रिकेट सम्राट, घूमना फिरना।

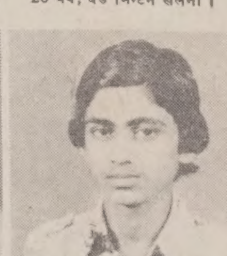

महावीर गांधी, भिस्तियों का बास, झंकार हाऊस, जोधपुर, 16 वर्ष, विदेशी मुद्रा संग्रह।

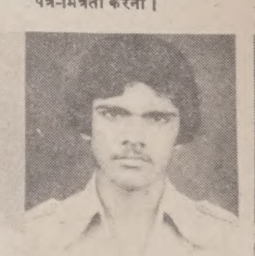

संजय कुमार सोमानी, 304 माडल टाउन, वर्धमान नगर नागपुर, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता

कैलाशचन्द शर्मा, म. नं. 131, सिन्धी कालोनी, आदर्श नगर, जयपुर, 24 वर्ष, दीवाना पढ़ना

शेखर कुमार मधुकर, मोहनपुरी कालोनी, मोती झील मुजफ्फरपुर, 14 वर्ष, दीवाना पढ़ना।

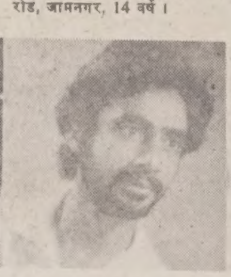

भारत भूषण शर्मा, टाटा नावल स्टोर, भिवानी (हरि.), 19 वर्ष दीवाना पढ़ना, प्यार करना।

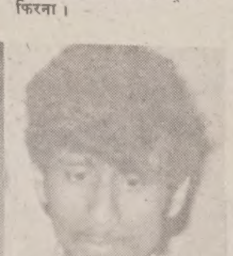

जुबेल डिकूज, 902 बाजार रोड, बान्द्रा, बम्बई, 23 वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।

सुशील सैनी, केन्द्रीय विद्यालय कोकताक मणीपुर, 18 वर्ष, पत्र-मित्रता, दीवाना पढ़ना।

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्ल
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
कृपया अपना नाम व पता हिन्

नाम ————

पता ————

————

आयु ———— शौक

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें.

तेज प्रेस नई दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिये पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता

NOW !

BE SURE TO GRAB YOUR APRIL EXCITEMENT

N ANOTHER SUPER-CHARGED SUN COMICS

VIKRAM VENTURE

PRIL TITLE:
HREAT FROM OUTER SPACE

menacing message from outer space
reatens nuclear destruction for Earth.
ips disappear and planes blow up in
e air without reason.
ar grips the world until Chief Agent
kram comes on the scene and follows a
nger trail to foil the mad designs of
diabolical criminal. How does he do it...
d out in the April title of SUN Comics—
reat From Outer Space. Also featuring
Inspector Garud story. Plus easy to do
cks and nature facts. It's steal at
. 3/-. Get it now from your nearest
ws agent or directly from our
stributors:

ntral News Agency
4 Jhandewalan Extension
v Delhi 110 055.

SUN COMICS IN ENGLISH & HINDI

3200 app

Tobu CYCLES FOR CHILDREN

India's only gold medal winner for quality in the International fair held in E. Germany.

Exported to 30 countries around the world.

Available in 30 beautiful models

- ☐ No Sharp Edges.
- ☐ Plastic Components made from special polymers durability.
- ☐ Cadmium based pigments to prevent plast... from fading in sun and rain.
- ☐ Scratch proof painting
- ☐ Chrome plating under strict supervision to ...reven
- ☐ Spares easily available.

Tobu TOBU ENTERPRISES PRIVATE LIMITED

8/29-INDUSTRIAL AREA KIRTI NAGAR, NEW DELHI-110 015.
PHONES: 531260, 531261, 531285 GRAMS: ENTOBU, TELEX: 31-3154 TOBUIN